#### **TIGHT BINDING BOOK**

# UNIVERSAL LIBRARY OU\_224880 AWARIT AWARIT

# براود مال قريم المالي دير كالين بِولُولُ الْوَالِثُ وَمِنْ حِسَالِ وَمُعَلِّمُ الْمُنْفُرِثُ مِولُولُ الْوَلِيْسَالِ وَمِنْ مِلْ الْوَلِيْسَالُ وَالْمُنْفُ مُعَادِ فَ الكِ لِسَالُهُ مَضَامِينَ كَالْمُجُوعُ

# فرست مضامین ہند سیان کی قدیم درسخایل

| صفحه | متنمون   | صفحه | مفنون                         |
|------|--|------|-------------------------------|
| ۲٠   | مررسه بالابندآب سيرى،                                    | 14-1 | تصنيف اورمصنف                 |
| 41   | مەرسەمقېرۇشنرا د ە فتح فا ں،                             |      | ••                            |
| 77   | مدرسه بها یون ،  | 4 -1 | مقدمه                         |
| "    | مدرسه مقيرهٔ جايول،                                      | ۷    | تهيب                          |
| u u  | مرسه خيرالن زل،  | 9    | اجا لى اشارك                  |
| 4    | مرسه جس میں تینے عبالی محد شنے وہوی<br>تعلیم با ئی تھی ، | 11   | ہندشان پشلانوں کی             |
| ۲۳   | مدرسهٔ دارالبقاً ،                                       | 14   | مدارس احبير                   |
| *    | مرسة فاذى الدين فان فيروز فبك                            |      | مرا رس دېلي،                  |
| 4    | مرسه نواب شرف الدوله ارادت فا                            | 16   | مدرسمعزی (دبلی)               |
| 10   | مرسه نتاه عبدالرحيم صاحب دملوئ                           | 1.   | مدرسه ناصری ،                 |
|      | مرارس نیجاب  | "    | مدرسه مقبرهٔ علاه الدين طلحي، |
| +0   | مدرسه مجد وزیر خاک لا مور ،                              | 19   | مرسه قلعهٔ خرم آبا و ا        |
| +4   | مررمهسسيا لكوث   | "    | مرسهٔ حوض خاص ،               |
| YC   | مرسيشيخ على تفانيسر،                                     | ۲۰   | مرسه فیروز شاہی ،             |

| صفح        | مخمون                             | صفحه     | مقمون                                  |
|------------|-----------------------------------|----------|--|
| ۳۷         | مررسه نظامیه فرنگی محل ،          | ۲۰       | مرسشیرشاه ار نول ،                     |
| ٣٨         | مدرسهمولاناعيدانسلام ديوا         |          | مرارس آگره                             |
| "          | مررسه ملاعلی قلی، جاکسی،          | ۲۸       | مدرسته اغطی آگره ،                     |
| u          | مرسة قاضى مبارك، گو بإمنو،        | 44       | مرسئه شنخ زين الدين خوا في ا           |
| "          | مدرسة مولانا ففنل حقّ ، خيرآباد ، | ۳۰       | مدرسهٔ خس ،<br>رر                      |
| 4          | مررسطیم مدی ، فقح گڈہ ،           | 11       | مدرسهٔ جا ل آرابگيم ،                  |
| <b>μ</b> 9 | مرسد دائرهٔ شاه افضل الأآباد،     | "        | مرسه قاضی رفیع الدین بیانه،            |
| 4          | مرس فحزالمرابع، فرخ آباد،         | ا ۳      | لدرسدا کبر با وشاه سکری،               |
| "          | مدرسة حن رضا خال، فيض أباد،       | "        | لدرسه البو بفضل رر                     |
| ٨٠         | ىدرسەنواب محدخان، نېڭش<br>ر       | 44       | مدرسه مکندر لودی، متھال                |
| الم        | مدرسه في في را حد بنگي، جو نبيور، | ,        | مدرسه قلعهٔ نروار ·<br>ش               |
| 44         | مدرسه مسجدا الله ، رر             | ۳۳       | درسه معزی شمس الدین ایمش بدایون ا      |
| "          | مدرسهمولاناامان الله، نبارس       | <b>\</b> | مرسخبيب الدوله وارا نگر،               |
| "          | اعظم گذه کے علمی قصبات ،          | "        | مدرسه عاليه راميور                     |
| 44         | مدرسه حثیمهٔ رحمت، غازیمپور،      | 0        | لدرسه طافظ الملك يحمت خاب شاجعات       |
|            | مدارس سبار                        | 100      | درسربریی ،                             |
| ha         | بهار کے مشور علی قصبات و دہیات    | "        | مدرسه حا قفار ممت خاں بیلی تعبیت       |
| 49         | مدرسه امسلامیه مهار،              |          | مدارس اوروه                            |
| ٥٠         | مدرسه خانقاه شاه کبیژ سسام،       | ۳۷       | مدرمه شیخ نظام الدین انضاری سهالی<br>ر |
| اد         | مدرسه نواب تصف فان، دانا پور،     | ۲۷       | مدرسة شاه بير محد تكفئو،               |
|            | <u> </u>                          |          |  |

| صفح | مضمون  | صفح | مفون                               |
|-----|--|-----|------------------------------------|
| 45  | مرارس تيامن . گلبرگه، مدر ، قندهار . ايچه كُوِ | 01  | مدرسه خانقاه مجلواری ،             |
|     | وولت آباد، جاؤل ً والم، جنير                   | or  | ىدرسەلمېنە،                        |
| u   | مدارس أنارشرليف وها مع متجد بيجا بور،          |     | مرارس بنگال                        |
| 44  | مرسُّ اتناعشری احد نگر،                        | ٥٣  | مدارس رنگ بور رندیا                |
| ,   | مدرسُ بغدا و سر                                | ٥٨  | مدرسه غياث الدين ، لكفنوتى ،       |
| *   | مدرسهٔ بربان بور . م                           | "   | درسباره قرية عربور،                |
| "   | مدرسهٔ دولت آباد                               | "   | مرسه شله استهی بور،                |
| 40  | مدرسُ نواب والاجاه مدراسس،                     | "   | مرمه گور،                          |
|     | مدارس ما لوه                                   | "   | مدرسه حین شاه گور ،<br>ر           |
| 40  | مدارس شاوی آبا دُمنڈ و ،                       | 00  | مرسَهٔ تنالیته فان، و هاکه         |
| 46  | مدارس حتور،                                    | 04  | مررسه مجدخان محمد مميروه رر        |
| ¥   | مدرسه سلطان محمو د شادی آباد،                  | 11  | مدرسم مجد فيض السُّد، اعظم لوره ،  |
| 11  | مدرسه محمو وخلی سارنگ پور،                     | ٥٨  | مدرسه کلزه مرت دابا و،             |
| 1   | مرسهٔ نسوال غیاث الدین،                        |     | مارس سيلا بور،                     |
| ۲٠  | مررسه ظفراً با و تعليه،                        | 09  | مرسنتني صدرالدين، بدير             |
| u   | مدرسدافين،                                     |     | مدارس وکن                          |
|     | مدارس مليات اچه                                | 4.  | مدرسه محمودگاوال، بدر،             |
| ۷٠. | مدرسه فیروزی، اچ                               | 41  | ورسهٔ احدث ههبنگگلبرگه<br>رسر      |
| ۷1  | مرسه ناصرالدين قبار ملتان،                     | 44  | مارس گولکنده ،                     |
| "   | مدارس فما هُ حيين لذكاه 🖟                      | "   | مدسئهٔ چهار منیا ر ، حید را با و ، |

| سنح        | مفہون  | سفح | مضمون                                   |
|------------|--|-----|---|
| ۷,         | مدرسة فلعريجيد راحداً بادو                                 |     | مدارس كشمير                             |
| <b>د</b> 9 | مرسة معدراجدآباد،<br>اشاعت علي كورگرورائع<br>شخصى تعب يلم، |     | مدارش ستمير                             |
| <b>^1</b>  | الشخصي تعليه،  | 48  | مارس سلطان سكندر                        |
| ^0         | بندوستان میں اطراف   | "   | محكةً الريخ نوسي كثمير،                 |
|            | جوانت على كي آمدا ور                                       | 11  | محکمهٔ تراجم ر                          |
|            | اشاعت تعلی<br>مشاہیر عکما سے مہند،                         | 24  | مدرسُهٔ حسین چک ش <sub>و</sub> ه ،      |
| A4         | مشابهرعلمابط مبند  | "   | مدارس حبین خای والی کتمیر               |
| <b>^9</b>  | عربى قدىم نصاب درس   |     | مدارس تجرات                             |
| 9.         | روراول،  | ۲ ۲ | مدارس سلطان محمو دېگرگ <sup>ۇ</sup> ه . |
| 9 m        | ووړ دوم،   | 60  | هدرسته المعلماء احدآبا د ،              |
| 90         | دورسوم'،   | "   | يدرسهشيخ الاسلام، د                     |
| 94         | دورجها رم،   | 44  | درسه سرخیز .                            |
| 9^         | د ورتنجيب ،  | 11  | مدرسه علامه وجيم الدين احداً بأو        |
| 1          | وورچب،<br>اس آخری نصاب س                                   | "   | ىدرمىتەنتروا لە ،                       |
|            | الحيرنقانص،  | 11  | مدر سه تا لاب مرورهان ،                 |
| 1-1        | رتيب وطراقير تعليم   | 44  | مدرسه عثمان بور ،                       |
| سو• ا      | القسيم حباعات  |     | مدارس سوریت                             |
| u          | القاب طلبه،  | ۷۷  | مەرسە ماجى زا بدبىگ ،                   |
| ١٠٣١       | المحصوص علمي مقامات،                                       | "   | مدرسه مسجد مرحان شامی سورت،             |
| "          | فارسى زبان وفنون كى عليم                                   | ۷۸  | مدارس احمداً با د وسورت ومثن ،          |

| صفح  | مفهون                      | صفح | مضون                     |
|------|----------------------------|-----|--------------------------|
| االا | دامچ اهنت دا سُے الفنت ،   | 1.0 | ہندوستا ن کے فارسی زبان  |
| "    | الفتى ،                    |     | کے شعراء وانشا پر داز،   |
| 110  | امانت،                     | 1.4 | امیرخبرو،                |
| "    | انس .                      | 1.4 | حن ،                     |
| "    | بریمن ،                    | 1.4 | ا نیقی ،                 |
| *    | تفت ،                      | 1.9 | مرز اغالب،               |
| ý    | خوشدل ،                    | 11- | امیرخسرو کی اعبازخسروی ، |
| "    | موجد ،                     | "   | ابو انفضل کی تصنیفات،    |
| 11   | منتی ،                     | 4   | ا نشاہے فیفی ،           |
| 114  | مؤمر،                      | 111 | تزک جها گمیری،           |
| 114  | فارسی زبان وعلوم کی اتباعت | "   | ر تعات ِ عالمگير َ       |
|      | كوسبب،                     | 111 | فارسی زبان کے مندوسینن،  |
| 114  | طريقه تعليم                | *   | کتب فن تاریخ،            |
| ''   | فاريقه ماهم                | 111 | تذكره،                   |
| 119  | فارسي نضادرن               | "   | انئات ،                  |
| '''  |                            | "   | مرف تواعد،               |
| 177  | کتب ادب وانشاء<br>         | "   | من وشعرار                |
| 140  | نطسع وشعر                  | 114 | اكرام،                   |
| "    | ا فسانهُ و حکایات ،        | 11  | لالااجاگرالغنت،          |

| صغ  | مضمون   | صفر | مفنون              |
|-----|---------|-----|--------------------|
| ١٢٨ | فالمبت، | 144 | نا ر رخ<br>اخلاق ، |

مقستر

مصنّف ج نصنیفت اور

پش نظرا دراق معارت مواقائہ کے ایک سلس مفہون کامجورہ ہے، جورسالا مذکور کے مقالت نمبرون میں جینی نظر اوران کی تجویز تھی کے مقالت نمبرون میں جینیار ہاتھا، اہلِ نظر نے اس کو سید سپند کیا تھا، اوران کی تجویز تھی کہ یہ ایک کتاب کی صورت میں میجا ہو جائے، اس وقت مصنف کی علالت کے طویل سلسلہ نے اس تجویز کو عمل میں آنے نہ دیا ، پنجاب کے ایک ببلشر نے اس کو اسی زمانہ میں جھا پاتو پوری کتاب منح ہوگئی، اورائی علم کک وہ بنجی بھی بندین ، خو و مصنف موم میں جو سکا ، اور نوجوانی کے مالم میں نہرار ون علی و سیاسی اس طویل علالت سے جا نبر منہ ہو سکا ، اور نوجوانی کے مالم مین نہرار ون علی و سیاسی آرز و دون کے ساتھ اس دنیا کو الوداع کہا ،

مصنّف اس کتاب کے صنّف مولوی ابو انحسنات عبدالشکورندوی مروم صوبہ بہار خلع بلنہ کے ایک گا وُن ا<del>مشرت پ</del>ر رکے رہنے دائے تھے، جوصد پہن ارکے ت شهور مروم خیسنه کا وُ ن ڈیا وان اور نگر نهسه کے قرب وجواریں واقع ہی، مروم سے میر ا تفاتی ملا قات سلا 19ء مین الهلال کلکتہ کے دفترین ہوئی ،اس وقت وہ نوخیز تنے ،گر ذ ہانت کے آثار نایا ن تھے، وہ قطبی و مختر معانی وغیرہ کک پہنچے تھے کہ اسلامی سیاسی *ج*یش كُنْتُشْ نْ ان كُو اللَّهُ لَكُنَّةُ كُ بِهِ إِذِيا . اس کے بعدوہ مجھسے بار بارسلتے رہے مین نے ان کوجو ہر قابل پاکر ہنگای ساس شورش کے بجائے علم کی تکمیل کا شوق ولایا ۱۱ ورحب نک کلکته مین رہا خوروان کویڑھا آپار ہا يرحب چندهينون كے بعد مجھے دكن كالج كى ايك متقل خدمت پر بوينہ جانا ہوا توان كو دارالعلوم ندوه مین لکھنو تھجوا دیا جہان وہ کا افائۃ کمتعلیم یا تے رہے، فارشی شاعری کا ذوق ان کو فطرتُه تھا کسی استا دکے بغیروہ فارسی مین غزلین اور تفییدے لکھتے تھے بھافائے مین مولانا شبی مرحوم کی اخیر عمرمین انھون نے اپنا ایک فارسی تصيده مولانا كى خدمت مين بهيجا تقاجب كو د مكه كرمولا نانے ان كى نسبت حسب دېل لغاظ «عبدالشكوركااكي قصيده لل · · · قصيده من كي غلطيان اور كمز وريان بن ، كي طبعت ین قابتیت ب،اس نے بہت جلدیہ خامیان کل مائٹگی، (مکاتیب بنام مولوی مسعو وعلى صاحب ندوى مهير) يرهي اڻن بوگون بين تھے جن کومو لا نامرحوم اپنے زیرتجوزِ دارکمھنفین مین لینا جا ستے تھے،اس کئے مولانا مرحوم کی و فات کے مجدحب دار استفین فائم ہوا، تو یہ سی بلائے گئے ،، ورتقریبًا چھ برس (مشاولیہ سے ۱۹۲۰ فیٹم) تک یہ والمھنفین کے زیر ترمیت بہے

اس اُنا مِن ان کے قلمے مبیون تحبیب اورا ہم صنون معارف اور دو مرسے رسالون مِن تخلتے اور چینے رہے، خانچ جنگ عظیم کے خاتمہ پر ترکون کی مدافعت میں مند سانی زبان مين سب سے بيلامفرون اخين كالخل جرأس وقت بہت بيندكياكيا ، اور لوگون نے اس کوعلی و مجھا پکرشائع کیا، ان کی ذات سے ہم کوا ورسلما نون کومبت کچھ امیدین تھین لبکن خدا کی رضی سب مرضیون پرغالب ہو،ایک طویل علالت کے بعد ۱۲رربیع اتنا نی سیمسلی<sup>م</sup> مطابق نومبر سر اعلی ایک ایک ایک این جان وه آب و مواکی تبدیل کو گئے ہوئے تھے، واعی احل کولیمک کها، تقنیف مندوسان مین سلمانون کی ساسی اینن تو بهبت لکی گیئن، گرافسوس سے، که ان کی علی تاہیخ کو مالکھی ہی نہیں گئی، سی لئے مندوستان مین سل نون کے علی کار نا ہبت ماندمعلوم ہوتے ہین، عالانکہ حقیقت یہ نہین ہے، انتہا یہ ہے کہ ہند درمستان مین سلمانون کے مرسون اور تعلیم گامون کا حال بھی کمین کسی کتا ب مین سقل عن<u>وان ک</u>ے ساتھ نظر نمین ائیگا ہی سبب ہے کہ ہارے ایک مشور مورخ کویہ وحو کا ہوگیا کرنیو مِن سلمانون نے مدرسہ کے نام سے کوئی عارت بالی ہی نہیں، ہمارا اسی کئے **غیال تھا کہ مندوستان** کے اسلامی مرسون کے صالات کتا ہون سے جِس اً علیدہ لکھے جائین اس رسالہ کے مرحوم مصنف نے میری اس خوامش کی کمیل کی ، اورجان ۔ ہمان سے کوئی فرزہ ان کو ہاتھ آیا ،اس کو ایک بلکہ کرسے معلومات کا ڈھیر ہمارے ملف لگاڈیا

افویں پرافسوس میں کو کہ یرانے مورخون کو با د شاہون کی لڑائیون اور در باریون کے ا عشون کے سوا قوم کے تمرنی وعلی حالات کے بیان میں ہبت کم تطفت آنا تھا ،اس لیے ان کی کتا بون مین اس قیم کےمعلومات مہت کم ملتے ہین،اگراس ملک کی 'اریخ پوری طرح لکھی ماتی توبیان کے علی کارنامے کچھ کمروش نہوتے، محر تغنن کے زمانہ میں مصرا ور منہ دوستان میں اُمد ورفت کے تعلقات بہت بڑھ<sup>کئے</sup> تھے،اس زمانہ کی ایک مصری تصنیف مین سندوستان کے سیاحون کی زبانی یہ مقول ہے. کافرف ہندوستان کے یا یخت ولی مین اس وقت ایک ہزار مدر سے تھے جنمن سے ایک شافیون کا اور باقی سب حفیون کے نصابہ. . . . " ية تواً غاز كاحال تھا. انجام سنئے، اور نگ زیب عالمگیر کے زمانہ كا ایک پورین ساح کیتان الکرندر مهلی سنده کے ایک تهر طبطی کی نببت لکھتا ہے، م شرطه من محلف علم دفن کے جارمو مدرسے بن " قیاس کن زنگستان من بهنسار مرا اب ولی کے ان ایک ہزارا ورمضی کے ان جارسو مدرسون کاحال کو ن بتا سکتا ہوا ابرحال ایک طالب علم کی کوشتون سے ہندوستان کے اسلامی مدرسون اورتعلیم کا ہون کا جو کچه حال معلوم موسکا ہے، وہ آیندہ اوراق مین آکے سامنے ہے، ستيسلهان نذوئ ه مجع العثى تلقت دى جلده صلى معز سك مرزايمين الترييك كى كتاب مندوسان مدعا لمكيرين

وَ اللَّهُ النَّا النَّهُ اللَّهُ اللَّاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

## مقسير

مندوسان کی اسلائی اریخ جن کیرو متنوع اجزار برش ہے،ان مین تعلیم کا صقہ فاص طور پیغطت واہمیت رکھ ایم بار ہوین صدی ہجری کا ہندوستان بانچ ین صدی ہجری کے ہندوستان بانچ ین صدی ہجری کے ہندوستان سے جس طرح تدنی، معاشر تی اور سیاسی حالات مین مختلف ہے، ہونیہ وہ ابنی و ماغی و علمی کیفیات میں مجبی اس سے علانیہ جد اگا نہے، یہ اختلاف اور یہ تغییر کو کو کو کو کو کو کو کو کا میں کہ تدریجی و ارتقائی رفتا رکیا رہی ہاس کی فصیل کا یہ موقع نہیں، اور نداس کتا ہے مین رجس کا یہ مقدمہ ہے ) اس پر بحث کیگئی ہے،البتہ کا یہ موقع نہیں، اور نداس کتا ہے میں رجس کا یہ مقدمہ ہے ) اس پر بحث کیگئی ہے،البتہ اس کے متعدد اسباب مین سے ایک سبب تعلیم اور اس کی توسیع و اساعت سے متعلق اس کے متعدد مہلوو

ایک علمی دّیا رئی خطبہ کے طور پر احباس ندوۃ انعلیا رمین مبٹی کرنے کی ضرورت سے مین نے اس کو انباموضوع قرار دیا تھا، یہ ایک محدود اور بنہگا می ضرورت تھی کسی مجمع عام

وبروکسی موضوع برِتقر برکرنے کے لئے یہ صروری نہین کہ اس بر نہایت تفصیلی اور جزوی بحث کی جائے، اس لئے اس کے سرحصر کہ بیا ن مین اجال ہی سے کام لیا گیا ہے بیکن دن چونکہ یہ ایک تاریخی عنوان تھا ہیں گئے بیان کا ہر حزو ّا ریخی حوالون اور مقبرومتند ما فذو پر منی ہے، تاہم مزیریعی و محنت کے بعد <sup>ح</sup>ب تفص و استقصا کے ساتھ اس برقارا ٹھایا جاسکتا تھا مجھے علانیہ اقرار ہے، کہ وہ اس کتاب بین نہیں ہے اور پیقینی ہے کہ اس عنوان کے متعلق ا پش نظرموا دّ مارنجی سے کمین زیادہ معلومات انھی اور جمع موسکتی ہیں ، اس کا بقین اس طرح مواکہ قدیم اریخی کتا بو ن کی حرتصنیفی نوعیت ہے ،اوران مین جس طرح کے واقعات کا منار ہو اہے اس کود کیھ کرسپلے مہیل اس عوان کو ہاتھ لگاتے ہوئے طبیعت جمجیکتی تھی بیکن منظم و محرِّم جناب مولنا سیدسلیا **ن** صاحب نہوی کے اصرار امیرار شا دیے مجبور کردیا اور ہا لاخر جب مین نے اس مقصد کے لئے صفحاتِ ایریخ کا مطالعہ تنروع کیا تو بحدا لٹندائنی محنت م جانفشا کی سیکار نہ گئی'ا ورّ لماش وحتج کا قدم حتنا آگے بڑھٹا گیا آنا ہی امید سے کمین زیادہ وسیع اورکشادہ ميدان نظرايا،

سردست پونکه صولِ معلو مات کا بہت محدود ذخیرہ بیش نظر تھا،اس کئے اس لما شوسی کے تائج سے جرنا تام مرقع تیار مہوسکا وہ آیند ہ منعات بین نظرائیگا،اس کتاب کی الیت مین جن کتا ہوں سے مرولی گئی ہے،ان کے حوالے اسل کتاب مین موجو دہمیں، نیز اس لئے کہ وہ عام اور متدا ول کتا بمین بمین بمیان ان کے جواگا نہ تذکرہ کی ضرورت نہیں معلوم موتی، کوئی نایا ب ونا درکتا ب بیش نظر نہ تھی جس کا خصوصیت کے ساتھ ذکر کیا جائے، البتہ کلمی نسخہ

صندالتواریخ ادرایک وراگرزی کتاب PROMUTION OF LEARNING IN INDIA ة نكره ضروري بينان دونون كتابون كے مصنف مندومن اول الذكر عالمكير كے زما بي*ن ہے، اور مجھے ہ*ں کافلی ننح کتب نا نہ الا **صلاح وسنہ** رصو بُربہار ہوا، آخرالذکر موجرد ہ زما نہ کے ایک نبگا لی مند ومصنف کے قلمے کلی مو ٹی کتا ہے ہے، اس ن مسلما ن حکمرا نون کی علمی تعلیمی دلجیبیون، مدارس و مهاتث علما مصنفین اورکتخا نون کا نذکرہ ہے،گومصنف الل زبان (فارسی ) سے نا وا قلت معلوم ہوتاہے اوراس نے غیر ذمرہ ا . شخاص کی نقل وتر حبہ براعثا و کیا ہے اس لئے کہین کمین خامیا ن سہو و خطا مکہ غلطیا ن ھی ۔ نظرا تی ہین تاہم عام طور پر کتا ب اپنے موضوع مین کامیا ب ہے اور مصنف کی محنت وکوٹ رِصِحَى تحیین وَا فرین، اس موقع پرمسلما ن انگریزی دان طبقهسے بیرسوال دنحیب موگا، ہ یہ فرض اس کا تھا یاکسی اور کا؟ خدا را وہ انصا ٹ کومٹیں نظرر کھ کراس کا جراب <sup>دے</sup>' ماریخ کی شداول فارسی کتابیت ماریخ سند کا کمل مجبور منین بن ان کے علاوہ ور بھی مفیدو صروری کیا بین بین جراس کیا ہے گا لیف وترتب کے وقت میسرنہ اسکین او أعجصول كيلئے اقطاع مك كے محلف مشهوروعام كتبخانون كى سير ننرذا تى كتب خانون رسا کی ماس کر نا بہت ضروری ہے ، علاوہ ازین عمداس می مین ہندوستان کی علی دفعلیمی ترقی کو د کھانے کے لئے بزرگان دین مشائخ کیارا ور دیگرعلما رو فضلا کی کو محمرا ر نزان کے مفوطات وکمتوبات کی ورق گر دانی نهایت صروری ہے ہیں جنرین وہ " ا پین من کونصیلی مطالعه<del>مندوستان</del> کی گذشته علی تعلمی ترقیون کی تصویر عاری انگو<sup>ن سا</sup>م

لیکن ہیںموقع پر ایک اور ذخیرۂ معلومات کی طرف اٹیارہ کر ایمی ضروری معلوم میوّیا ے، جوانی صحت و و اقعیت مین ماریخی کتا بون کی روایات سے کمین زیا د ہ مہتراورعڑ ہے، <sup>ری</sup>نی سلمان حکم انون کے فرامین جواب مک ہندوستان کے محلف ہندومسلمان . فاندانون مین محفوظ وموجود مین ، به تمام فرمان ماریخ سند کاایک گران مها اور دقیع سرایه ہیں ،ان سے سندوستان کی گذشتہ ا*ریخ کے فع*لف پہلو وُ ن پر روشنی پڑتی ہے ، مجھے بقین کال ہے کہ ان بین جمان اور ضروری باتین لمین گی، وہن ہی ہاک کے مسلم فرا نروا وُ ن نے ماک ئى ترقى كے لئے علم وفن كى اشاعت مين جو كۇشتىن كى مېن ان كى تصريح تونفسيل ھى سلے گى، اس كماب مين" اشاعت تعليم كے ديگر ذرائع" كے عنوان سے جو كھے لكھا كيا ہے،ان اجالًا اس کی طرف مبی اشارہ ہے، پہلے خیال تھاکہ اس کی نبیت کسی قدرتفصیل سے لکھنا عاہئے بلین بعض ناگزیرا ساب کی نبایراریانہ ہوسکا، ہندوستان کے سلمان باوشاہو<sup>ن</sup> مین بہت کم ایسے گذرے مین خبون نے مندوؤن کے بندت، گوشائین یا گرووغرہ نه ہی وعلی انتخاص کے لئے و ظیفے یا جاگیرین نہ عطائی مہون ، نتا ہنشا ہ عا کمگیرا ور گرنت . کے مذہبی تعصب کا غلغام<sup>صن</sup>فین <del>بوری</del> نے نہایت بلند آہنگی سے اٹھا یا اور اسنی تصنیفا مین اس کومبت کچراب ورنگ دے کرمان کیا ہے،جس کا نایان اثریہ مواکہ تمام لک بین نهایت برے خیالات سیل گئے اور اس نیک ول در مم برور با دنیا ہ کوظالم' سگر، ہندوکش کے خطابات ویے گئے،اوراب حالت یہ ہے کہ اگر کبھی اس کے قابل قد<sup>ا</sup> اوصا ن کی کوئی اَ وا زامٹھا ئی سمبی جاتی ہے تو وہ اس غو غاے عام میں دب کر رہ جاتی ہم!

تاہم یہ واقعہ ہے کہ یہ اہل بانگ تبی ہے اور جو کھے بیان کیا جاتا ہے اس بین ہلیت کا مبت کی مقد ہے ۔ بلکہ اس کے تصب کے خلاف اس کی روا داری و سالمت کی شہا دی متی ہیں، گو تا کین، گروا دور بیٹر تون کے نام سلمان ٹو ہا ٹروا کون کے متعد د فرامین جن کے فریو ہے ان کوشا ہی عطے یا جاگرین یا سافیان دی گئین، میری نظرے گذرے ہیں اُن من مان کوشا ہی عطے یا جاگرین یا سافیان دی گئین، میری نظرے گذرے ہیں اُن معدم بھا گا برہ میں نام نبایہ بہت کم دوگون کو معدم بھا گا برہ کی منابہ نام میں نام نبایہ بہت کم دوگون کو معدم بھا گا برہ کو منابہ نام بی ہوا تھا اس عظیم انسان بو دھونا نقا ہ کے شعان جائی لاکھ کی جائے اور وقت کے وہ تا متراسلامی سلاطین کے فیمن کرم کا نتیجہ ہے ، اس دیسے جائدا دمین بڑا احصہ شام ہمنا کی عالم کی کا عطیہ ہے ، عالم گیراور دو سرے سلاطین کے فرامین اب اکس اس وقت کے متول خاندان بین ممنوظ ہیں ،

آخرین یہ تبادینا بمی صروری ہے کہ گواس کتاب کا ایک بڑا حستہ تقریر کی صرور سے او د واشت کے طور پر جمع کیا گیا تھا، لیکن جو بحداس سے وہ کام نزلیا جاسکا ،اور بعدین یہ قرار پایا کہ اس غیر ممولی اور مغیدیا د واشت کو را ٹکا ن نہ جانے دیا جائے، ملک اس کو ایک متقل کاب کی شکل مین جمع کردنیا جائے اس لئے کہا بی ترتیب نظر نانی کے موقع ہم اس مین مہت سے حصتے اضافہ کر دیے گئے اور اس کو ایک خطبہ کی صورت سے بدل کڑو ا تصنیف کے قالب مین ڈھال دیا گیا ،

اس موقع پر مخدوم محترم مولناسیدعبدالحکی صاحب ناظم مدور انعلمار کاشکریداد ا کرنامجی ، نیافوض سمجتا ہون کر جناب مدورے کے مفنون مہندوستان کا قدیم نصابِ درگ سے بڑی مدولی، اس کتاب مین جان برقدیم درسی کتابون کی فهرست وسی گئی ہے، وہ مام اس مفهون سے منقول ہے، یہ امرمزید شکریہ کا محرک ہے کہ مولئنا ممدوح نے میری اجازت پر نهایت خذہ بنیانی سے اس کے نقل واخذ کی اجازت دی،

ا**بوالحسْمات ندوی** دارافنین اغط<sub>م</sub>گذهٔ ۱رجولا نی <del>۱۹۲</del>۵ روز دوشنبه،

-----

### بِسَمْ لِللَّمْ الْتَحْمُ زُولَ لَتُحْرَمُ مِنْ

موجودہ زمانہ مین ہر قوم اپنی اہمیت کے اتبات اور نتا ندار ستقبل کی ہے۔ پسر

کے لئے اپنی گذشتہ ما ریخ اور اسلاف کے کارنامون کو دہرارہی ہے ،من حیث القوم مسلمانون کی مماز حیتیت جر کھے دنیا میں باتی ہے اس کی نبا دمبی اسلان کے ٹاندار کار نامون ہی رہے، و اجس وقت عرب سے تخلے متصان کے ایک إتم مین فتح و تصرت کی ملوار اور دوسرے مین علم وفن کا چراخ تھا، جر الک ان کے زیر مکین آیا و بان انفون نے نفنل وکمال کی بزم حیا مان برباکی، د<del>ہ ءب</del> کی مقدس سرز مین سے تنگے اور دنیا کے حبوب وشال اور مشرق و منو<sup>ب</sup> مین سپل گئے،ان کامپیلنا ساری دنیا کے لئے مبارک تھا بھان میونیے وہا ن کے زمین واسان کو برل دیا اندلس کی سرز مین مین تهذیب و تبدن کی روشنی بهیدا کی کەمغرب کاظلمت کدہ روثن ہو،مصر،طراملیں،ابجز ائر، مراکش اور قبر**وان** <sup>کے</sup> افرىقى وحثيون كوتعليم دے كرفضل وكمال كى معراج بربيونيا ديا ايران كومشرق بن علوم وفنون کا سرحتْم پرنبا ٔ دیا اندلس کا اسلای تهدن <del>، ایران</del> مین شیراز و **بغد**اد کی سلامی

تعلیمگائین آج کک ان کی قرمی تاریخ کے زرین کا رائے میں اور ابدالا با قالک رہیں گئ مسلما نون کے علمی کا رامون کو علامت شبلی نعانی رحمته اللہ علیہ نے ابنے رسائل کے فقلف مضائین میں بہنفسیل کھاہے ،مصر، شام، ایران، روم ، خراسان عواقی ، اور افر لقیہ مین سلما نون نے جتنے تعلیمی مارس و مکاتب قائم کئے ،علامتہ مبرور نے ان مین سے اکثر کے نام گائے اور اُن کے حالات کھے بین بکین خاص سرزین کی نبست جو ہما را وطن ہے ، اب تک کچھ نہین لکھا گیا ، علامئہ مرحوم ابتداء ہندوستا مین اسلامی مدارس کے قیام کے قطعی منکر تھے ، نیانچہ اپنے رسائل کے عنون "اسلامی مار مین کھتے ہیں ،

" ہندو سان کے تذکرے مین ہم کو بے خطر کہنا جائے کراس سرزمین برشاید ایک جی علی عارت نہیں قائم ہوئی "

لیکن بعدا زین بعض ار باب قِلم کے توجہ دلانے پر علائد مرحوم نے اپنی اسس تحقیق سے رجوع کیا اور اس عبارت پر عاشیہ دے کر طبع نانی مین یہ انفا ظ لکھے ،

" مین اس بات کا اعراف کرنامون کدمیری میتمتن سیح نمین تابت موئی، مندو مین بہت سے مدارس تعمیر ہوئے تھے گواب اُن کا نام ونشان نمین رہا"

تا ہم اس اعتراف سے اسلی عقدہ نہ کھل سکا اوراس مبحث کی نسبت کو ٹی تفصیلی

علم عال نہ مورا،اس کے بڑی خرورت تھی کہ اس صروری صنمون کے متعلّق جو کچھ معلوما مون اُن کو کیجا کر دیا جائے ،

#### اجالی اثبارات

اس مین شک نهمین که میصفهو ن حب قدر انهم ہے، اسی قدر شکل اور ممنت طلب بھی ہے، اوّلاً اس خاص عنوان کے لئے فارسی اریخون میں جو کچے موا دبین وہ اس قدرمنتشا صنی ہیں کہ اُن پرسنجل کئی ہ ٹرسکتی ہے نما نیاً ان ماریخی کتا بون کا طرز تحریر قدیم ملاق ماریخ نوسی کے باعث کچھ ایسا واقع ہوا ہے کہ اگر ہم گذشتہ زمانہ کے تدنی ،سیاسی اورعلی عالا کو اُن مین مبوط و مفصل طور ریر لماش کرنا جا بمین تو اس ملاش مین بری اکامی مو گی **بت دم** ، نارنجین زیا دہ تر در صل با د شا ہون کی سوانح عمر یا ن مین جن مین خصوصتیت کے ساتھ ا اگ کے فتو حات مکی اور بھی کار نامے حواس زمانہ کے سب سے زیاد ہ قابل توم واقعا تھے تفصیل وبسط کے ساتھ مذکور ہوتے ہیں، اس بنا پر اینج کے صفحات بھی میدان کارزار بن گئے ہیں اور یہ طاہرے کہ لموار دن کی حینکا رطبل ولوق کی گوئے، اورصٹ ک ا غوغائے رشخیر من درس وتعلیم کی کمزورا وازین کیو نکرسائی و سے سکتی من ؟ ت ہم اگر اُریخ کے صفحات کا غورہ مطالعہ کیا جائے توبا دنیا ہون کے مالاتِ زندگی کے ختمن مین د وسری قسم کے واقعات بھی مل جاتے ہیں اگر کو کی تحض محنت اور جتج*وے کام لے تو گذشتہ ز*مانہ کی سامت ہفم *مکومت ،طریق مد*ل وانصات ،تهذ<sup>ہ</sup> وترن اور دیگر ضروری ما لات کا انداز ہ لگا نے کے لئے منتشر طور پر اس کو کا فی وا قعا<sup>ت</sup> مل سکتے میں، مین اس رسالدمین اپنی اسی تسم کی تلاش وحبتو کے تنا بیج میں کر ا جام انہ نکاتعلّی مخض ہندوستان کے علی وتعلیمی معلوات سے ہے ،

اس سے پیلے کہ اس صفرون برسلساد سخن شروع کیا جائے ، جِندا ہے اجالی ا<u>مود کی</u> تشریح و توضیح کر دینا نساسب ہے،جن سے بیہ علوم ہوکہ قدیم فارسی اریخون بین مہد سا ك گذشته مدارس كے متعلق كيون تصريحي ابواب نهين ملتے، نيز دوعارات والم كن كون تے جن سے تعلیم کا ہون کے کام لئے جاتے تھے، دا مهلما ن اپنے مذہبی مذاق کی نیا پرسمشہ تعلیم تعلم اور درس و تدریس کو مذہبی مشغلہ ور کا رخیرخیال کرتے رہے ہیں، وہ طلبہ کی امدا دہ تعلیم کی اثنا عت ،کتب و ساما ن در لیم کا وقف، ما رس کی نبا و اسیس اورعلما، کی خدمت واعانت وغیره کو ایک ت مزسی علم اور برکت و فلاح د ارین کا باعث شخصے رہے ،اس نیار میرجیز بھی اور ضرور ما زندگی کی طرح ان کی زندگی کا لازمی وصروری جزو موگئی تھی،اور چینکدا کی شخص کے روزمرہ اعال زندگی اس کی ہاریخ حیات مین خاص طور پیشے انہیت کیمیا تھ قابلِ ذکر نهین شمجه عاتے مکه عام الفاظ مین دوسری صروریاتِ زندگی کے ساتھ سرسری طوریر ند کورمہوتے ہیں، اس کئے قدیم ایام مین سلما نون نے تعلیمی سلہ مین جو کچھ کا رہا <sup>ہے</sup> نایا ن کئے ہیں،ان کو قدیم مورضی مضوص ابواب و نصول میں نمین بیان کرتے، ر ۲) ہر شخص نے فارسی اُریخون مین سلاطینِ اسلام کے اعالِ زندگی مین عمومًا یا لفا ارسے مون گے، « درعمد مکومت خود تا لابها د جا ه با د کمیالب شنهٔ و در برطرن ِ د نگیرعارات و تباع

الىي عبارتون ين عمد مًا عارات و بقاع خيرے مرا و مدرسے مكتب مسجدين ا در خانقا بین بن ، ''اریخ مرا<del>ُ ت احد</del>ی کا مصنف جرگجرات کا دیوان تھا اس نے جابجا فرامین گی نیا درج کی ہیں،اُن میں ایک فران شاہنشاہ البرکاہے جوتام صوبون کے لئے واری کی گیا تھا اس فران کی دفعہ ۳۰ کامفوم حسب ذیل ہے:-جا ن کے مکن ہو د نیا مین علم وہنر کی اتباعت ہو تی رہے ،کداہلِ کال د<sup>نیا</sup> معدوم نه ہو مائين. اوران کی إدگار صفي متى برباتى رہے ، رس) جبیبا که آینده تفصیلًا معلوم ہوگا. قدیم زما ندمین تعلیم کے لئے عو مُاعلنحدہ عارتین نهین موتی تعین زیاده تربیه کام مساحدسے سیاجا تا تھا،اس زیانہ کی تام مسجدین مدارس کا کام دیتی تھیں اس لئے ہرقدیم وسیع مسجدا کیس بڑی درسگا ہتی ہیں سبب ہے کہ ہندوسیّا ن کے قدیم اسلامی شہرون مین قِدم قدم بریّم کو وسیع و نیا ندار محدین لمین گی: **و لی، اگره . لا بهور، جونبور؛ احمراً با و، کیرات،** وغیره قدیماً سلامی دارانسلطننو ین وعظیمات ن صحدین تعمیر ہوئی تعین اورحواب تک باتی میں اُن کی مہیّے کذا کی ما **ن** تبا تی ہے کراُن کا بڑا حصر تعلیم کا ہو ن کے کام بین یا تھا، ان محدون بین آ آتم کوضمن کے عارون طرف حیوٹے حیوٹے حجرون کا کوسیج سلسلہ نظرائے گا، یہ در طلبہ اور مدرسین کے رہنے کے مقا ات تھے ، اورا ن مین سے بعض اب بک آس کام مِن بن ، مثلًا دہلی کی سجد فتحبوری واکبرآبادی جرسنا ہے بن تیا رمو مین ، ان کے

وسیع صحن کے گرد اگر د جو کمرے بنوا *ک گئے و ہفھوص طور پر*طلبہ کی ا قامت **گا** ہ<del>تھ</del>ا ان مین سے اول الذكر آج كك اسى كام مين ہے، اور د لان سے طلبة علوم عربته كى ایک بڑی جاعت اج بھی فیضیاب ہوری ہے ، (م) قديم فأنقابين مجى عمرً أتعليم كامون كيمصرف مين أتي تين متصوفين اور ئونتەنسىن مشائخ زا نە<sub>ا</sub>س و قت صرف مجا ہر ُ نفس و وطا ئف ہى كوعا دت نهين م<del>حصّ</del>ے تهے، بلکه وه نسرىعیت د طریقت اور ظاہرو باطن دونون کی تعلیم و تدریس کو ایناحتیق ناتعین خیال کرتے تھے،اسی و جرسے قدیم شائخ و بزرگانِ دین کے مالات میں درس ترريس كاشغل عمر أنظراً ما ب، سرخانقاه مين تتنه بان تعتون وعلوم ما طن کی طرح طالبین علوم ظاہر کی جاعت کثیر تھی یا ئی جاتی تھی، خانقا ہو ن کے لئے حکومت کی طرف سے جوعطیے یاتنحفی او قاف ہوتے تھے،اُن کا بڑا حصۃ طلبہ برصرف ہو تا تھا اس بنا پرنت ہم فا نقا ہون کو تھی مدارس و سکا تب کے سلسلہ این شمار کرایا ہے، ( ۵ ) سلاطین اور نزرگان کرام کی فرون پرجرمقبرے اور وضے تعمیر ہوتے تھے اُن کے ساتھ ار دگر دہبت سے جرب اور کرے سی غرض سے تعمیر ہوتے تھے کہ وہ مدرسون کے کام میں اُئین ، خیانچہ مقبرُہ علا کو البدین تلحی اور مقبرۂ ہالیونی وغیرہ کا ذکر ٱگے آیا ہے،اں وقت بھی جرقدیم تقریب ولی ،اگرہ ، احمداً با د ، بیجا بور ، وغیرہ میں

قائم بن ان کی ہیئت خود ان کی ماریخ کو تباری ہے ،

ان اجالی اتبارات کے بعد ان محفوص عارتون کا ذکر کیا جاتا ہے، جو اسس سلسلہ سے الگ خاص مدارس کے نام سے تعمیر ہوئین ، نیز اس سلسلہ مین خما ابندوسا کے مختلف علمی قصبات و دہیات کا نذکرہ ناگزیر ہے جس سے قدیم طرز تعلیم وطان کے مختلف علمی فضبات و دہیات کا نذکرہ ناگزیر ہے جس سے قدیم طرز تعلیم وطان میں تعلیم کا کہ گذشتہ ذیا نہ میں تعلیم کا می کا کہ گذشتہ ذیا نہ میں تعلیم کا می کا مقدوم کس قدر وسیع تھا، یہ معلوبات محتلف موضوع کی دمثلاً تا ہم نے اللہ تا اس و کمتو بات وغیرہ ) کتا بون کے منتشر و براگندہ بیا نات سے فراہم کئے گئے ہیں،

ہندوستان بین سلانون کا داخلہ مہلی صدی بجری کے آخرین ہوا، لیکن یہ داخلہ بورے ملک ہند برئی ورائی داخلہ بورے ملک ہند برئوٹر نہ تھا، البتہ اتنا ضرور ہے کہ ظلمت کدہ ہند کے بین اطرات بین نوراسلام کی شعاعین اسی زبا نہ بین پڑین، لیکن صحیح معنی باسلامی حکو کے قدم سرزمین ہند میں سلطان محمود عرفومی کی مجا بدا نہ ساعی کی جو لات جئے اور اس لئے اسی وقت سے اسلامی حکومت کا آغاز سمجھنا جا ہئے، سلطان محمود کی تو جہ سمجے مندی کی طرف سفائی کی جو کہ بولئے ہے معلوان محمود کی تو جہ سمجے مندی کی طرف سفائی کی بدوستان کا بنتی کی تو جہ سمجے مندی کی طرف سفائی ہوئے ہے ہوئی اور میروفتہ رفتہ ہندوستان کا بنتی کی تو جہ سمجے کی تو جا ہے کہ بیلے بے شبہ بینے و تبریب کام لینے والی فوجین بڑھتی ہیں، لیکن فتح کے بعدو ہ کہ بیلے بے شبہ بینے و تبریب کام لینے والی فوجین بڑھتی ہیں، لیکن فتح کے بعدو ہ کہ بیلے بے شبہ بینے و تبریب کام لینے والی فوجین بڑھتی ہیں، لیکن فتح کے بعدو ہ کہ بیلے بے شبہ بینے و تبریب کام لینے والی فوجین بڑھتی ہیں، لیکن فتح کے بعدو ہ کہ لیار بہیشہ اُن کے ہا حقون میں نہیں رمتی، بلکدا من وا مان قائم ہوتے ہی ان کے اندول میں نہیں رمتی ، بلکدا من وا مان قائم ہوتے ہی ان کے اندول میں نہیں رمتی ، بلکدا من وا مان قائم ہوتے ہی ان کے اندول میں نہیں رمتی ، بلکدا من وا مان قائم ہوتے ہی ان کے ایک تو ہون ہیں بالد می نہیں رمتی ہیں بالد می نہیں ہوتے ہی ان کے اندول میں نہیں رمتی ہیں بالد می نہیا ہوتے ہی ان کے ایک تو بالد کی نہیں رمتی ہیں بالد میں نہیں رمتی ہیں بالد میں بالد می نہیں ان کے ایک تو بالد می نہیں رمتی ہیں بالد می نہیں ہی بالد میں بالد میں بالد میں نہیں بالد میں بین بالد میں با

ہا تھون مین کتاب وقلم نظراً تے ہیں، اور اپنے رشحات نیف سے وہ سارے ملک میں علم فضل کا دریا بہا دیتے ہیں،

الوالعزم سلطان محمود کا داراسلطنت غربی هائم بندوستان کے مفتوصه علاقون کا طرز حکومت موجود و زانہ کی صوبجاتی حکومت کے اصول برتھا ہجسان اس کے امراجن کو اس زانہ کے لفٹنسٹ گورٹر کھیے نظم و نسق کرتے ہے، اس قدیم زانہ کی نسبت اگر چرتصر سح کے ساتھ نہیں کہا جا سکتا کہ اس وقت ہندوستان کی خمود کے بیا انتظام کیا تھا، تاہم اتنا معلوم ہے کہ سلطان محمود علم دوست اور علما برست با وتناہ تھا، اس کا در بار علمار، حکما داور شوار کا مرج و مادی تھا، اس کو اپنے تعدود و حکومت میں مدارس و مساحد قائم کرنے کا بیوشوق تھا موج ہو ہے کہ بدجب سلطان محمود فتح قرزج سے کا میاب غزنی واپس آیا ہے، تو آئی واپن آیا ہے، تو آئی ہے اسلام معردا ور مدرسہ کی نبیا و رکھی، نیائی فی قرشتہ لکھتا ہے،

سلطان چون بفتی و فیروزی این مفرمراحبت نمود، فرمو و آما درغوبی مسجد جامع بنیا و نها د نده و مهل عارت مسجد از ننگ مرمرد رفام مربع و مسدس و نتمن و مددر برا در د ند بطرز کیر مبنیندگان از تمانت و طراحی اکن متحر شدند و بعب د از آنام عارت بموجب حکم نبوسے آس را با نواع زیزت و فروسٹس و قندیل مزین ساخت ند که ظرفاے و قت آل سجد د اع وس فلک می گفتند، دور جوار آل مسجد مدرسهٔ نیانه نساده و نبغائس کتب و خوائب نسخ موشح گرد انسیده و بات بسیار برمحدو مدرسه وقت فرمود " (فرشه عبدا قول حالات محودع نوی)

کرتے تھے،جس کی مرولت ہڑخص سمجہ سکتا ہے کہ اس کے حدو دِعکومت مین تعلیم کی کتِیٰ گرم بازاری ہو گی ، خِانچہ بیا نِ ہسبق سےمتصل قاسم فرشتہ لکھتا کج

و ہقتمنا ہے الناس علیٰ دین ملو کصد ہر کیے ازام اواعیان دولت بہ

نباك معجد ومدارس ورباطات وخوانق مبادرت نمودنك

یں ایسے عمد مِکومت میں یہ کیو َکرمکن ہے کہ <del>ہندوستان تعلیمی ذرا کع واسبا</del>

کرتا ہے ،

مین اس سے ایک اور نتیجہ تک بہنچنا جا تہا ہون و و یہ کہ بیا ن اسلامی عهد م حکومت میں جیسا کہ تفضیلاً آ گے معلوم ہوگا، مسا جدکے بہلو بہ بہلو مدارس و مگا

کے قیام کا عام مذاق بیدا ہوگیا تھا، میرے خیال مین اس کا ذریعہ بھی عمد محودی ن ہی تھا، بینی سلطان محمود اوراس کے امرا کے توسطے ابتدائر یہ طریقہ مندوشا

بی داخل مهوا، اور بعد کو فِت به فقه عام طور بررواج باگیا، کیونکه د گیرکتب نا ریخ -----

اورخو د <del>فرنت ت</del>ہ کے مذکور ہُ بالا بیان سے یہ معلوم موتا ہے کہ <del>ہندو تیا ن</del> سے باہر م

تام اسلامی مالک مین میی طریقه را نج تھا ،

سلطان ممو و کے بعداس کا دوسرا اوا کا شہاب الدین مسعو دیخت نشن

ومت موا، به علمار کا مربی اور علم مرور با دشاه تها ، اس کی علمی فیاضیا ن مهبت بڑھی ہوئی تھین اکٹر علما نے اس کے نام سے کتا بین لکھین، ق**اضی الومحر ناکی** نے فقرمسعور دی کے نام سے ایک کتاب فقراخات میں کھی اور اس کے نام سے نسوب کی، ابور کا ن خوارز می تجم حرریاصیات مین بے نظیرتھا 'اسے قا نو ن مسحود ی کفکر جوانعام یا یا اس کے متعلق فرشتہ کھتا ہے، " ابورىيان خوارزى منجب م كرعسلامهُ وقت بود درريامنيات نظير نه داشت . نا ندب سعوری در علم ریاضی نبام او نوشت و فیلے از نقرہ صلّایا اس نے اپنے حدود مکومت مین مکترت مدارس قائم کئے فوشتہ لکھتا ہے: « در دار دائل سلطنت أو درما لك محروسه خيدا ال مدارس ومساحد منيا ونها دند كه زبان از تعدا د آن عاجزو قاصراست يُ یورے پونے دوسو برس کی مکومت کے بعد خسرو ملک بن خسرو غزنوی کی شکست پراسکوسنده مین مبقام لا مور امیر شهاب الدین محد عوری کے مقابلہ میں نصیب ہوئی، حکومت ہند فاندا نِ غزنو تی سے فاندا ن غور تمین ىنىقل ببوگئى ، عثه مین شهاب الدین موغوری نے اجبر کو فتح کیا ہے بصنف اج الما لے یہ ہندوشان کی سے قدیم فارسی آ ریخ ہے، اس کا ایک قلمی نسخہ عیدرآباددکن کے کتبخانہ اُصفیہ میں ہے،

ئن نفامی نیشا یوری) کے بیان سے معلوم ہو تاہے کہ شہبا ب<sup>ا</sup>لد**ین محروری** نے احمير من متعدد مرسة قائم كئان مارس كى ماريخ باصحح طور يرمتعين منين ملكن نہ مذکورکے بعد قریب ہی قریب مین ہوگی،اس نبایر سے مرسے مبند وستا ن کے قدیم ترین اسلامی مرارس مین، مارس دملی س وقت کک ہندوستا ن کے ثابنتا ہی تعلقات غو ٹی کے ساتھ شماب الدین غوری کے بعد قطب الدین ایک <u>نے دیثہ</u> مین <del>لاہور</del> ے بیاے دلی کو ہند کا دار اسلطنت قرار دیا ، قطب الدین کا جائٹین تمس ل **لدین** تمش عن فئر من تخت نشین موا اس با د نها ہ نے فاص دار اسلطنت <del>د بلی م</del>ن متعد<sup>و</sup> مارس قائم کئے،گوتعین وتقین کے ساتھ نہین کہا جاسکہالیکن قرینہ سے ٹابت ہو ا ہے کہ وہلی کامشور ومعروف مدرسته معربی اسی علم پروربا وشاہ کے عدی کومت کی یا دگا رہے ،کیونکہ <del>مرایون</del> میں بھی شم<del>س الدین ایمش نے اپنے ایام امارت میں ا</del> عدا وراس کے مصل معزّی مامی مدرسہ قائم کیا تھا، قرینہ یہ ہے کہ اس نے یہ مدار<sup>س</sup> اینے آقاے و لی معت شہا**ب الدین غوری "جس کا ملی ام معزالدین محہ** عوری ہے؛ کے نام ریّا کم کئے تھے، سلطانہ ر**صنیہ نب**ت میں الدین انتمش کے عمد حکومت مین جب قرامط نے دملی پر بورش کی تقی توصب بیان صنعت **طبیقات ناصر ک** وہ اس مدرسہ کے قریب ککھس آئے تھے. یہ زمانہ <del>۱۳۵</del> کا تھا، مدرس<del>معزی دہلی ک</del>ے

۔ مرس مولٹنا مبدرالدین اسحاق بخاری تصحیم مقول ومنقول بین اپنے وقت کے سراً مدروزگارتھے، اسی عهد مین <del>دبلی</del> مین ایک اوغطیم الشان مرسه کا تیبه حینیا ہے جس کا نام م**رم**ا مربيه تما، په مدرسه ناصرالدنیا و الدین شهنرا و ه محسو و بن سلطان شمس الدین ش کے نام یرقائم کیا گیا، طبقات نا صری کے مصنف سراج الدین عقیف ں مدرسہ کے ہتم اوز گران تھے، حبیباکہ وہ لکھتے ہیں، « و در اه شعباً ن سنجس ولمثنين وسستماته سلطانه رضيه مدرسهٔ ا صربته درحفنرت منفنم ا قصاب كاليوربدين داعى مفوض فرمود وصلى ملبوعد الشاكك سوسائس كلكته) مرسه غيره علاءالدين خلجي، يه مرسمسج**د قورة ا** لا سلام ا<del>ورقطب</del> صاحب کی لاٹ کے متصل واقع تھا ہے ہے مین علارا لدین تکھی کا اتقال موا اس کے بعد سلطان قطب الدين مبارك ثناه فلجي نے تقریبًا بنك ثمر من بيمقبره بنوايا مقره ، مرسہ اور سحد سب کی مرمت فیروز شاہ نے اپنے عمد حکومت میں کی ،صندل کے مركمت چڑھاك، ميح طورير ننين كما جاسكاكه يدرسك فائم موا الرفطك لدن ہارک شا ہ نے مقبرۂ علا ئی کے ساتھ نبوایا تواس کا سنہ بنائے ہم ہوگا،اور گر مجد قوۃ الاسلام کے ساتھ اس کی بنیا دیڑی توسٹ ہے تاریخ بنا ہوگی، کیونکائی ال قطب الدين ايك نے اس سعدى نبا وروالى تى، بورئالم مين سلطان له نومات فروزنایی،

س المدین انتمش نے بھی اس مسجد برتنی تین محرابون کا اصافہ کیا ، اور اس لا<sup>ھی</sup> یر بھی یا نجے درجے زیادہ کئے ممکن ہے کہ مدرسہ کی نبیا داسی سلسائنعمیرات بین رٹیمی<sup>و'</sup> اس لئے طیک ماریخ بنامنین تبائی جاسکتی، سرے خیال بین دوم اور سوم عمد کو ترجیح ہے، عبدا وّل (زمانہ قطب الدین مبارک شاہ) میں صرف مقبرہ کی تعمیر ہوئی ، سلطان محد تفلق نے جب نئی دہلی جنی خرم آبا دکو آباد کیا ہے تو قلعہ خرم آباد مِن معبد و مدرسه کی تعمیر بھی عل مین آئی، بررجاج نے ان عار تون کی ماریخ بنامیں کی قطعه لکھ کریٹیں کیاجی کے حید شعریہ من، بزارويره كشا داست چرخ اكينه دا برین عارت خرم برین فجسته سرای ہواش فالیہ ساے نسیم ہا دہما ر فناش نقش طراز بخارخا يذبخب لمد ففائےء صرکی سرستون ہاکٹش محيط نه ربض مفت قسله أو و ار زروك لطت سرعش را گرفته كنار هار ما زوار کان او برت بی نخبت درون اوزصفاحائے ذکرواستنفار رو ن اوز ملا برخروش جوش جوس امام سجدا وطوطے شکر گفنستار رئيس مدرسهٔ اومعسستمّ ا وركسين کشا ده با تو گویم که مفصد دعیل وعار تام گشت تاریخ و اد طوافها ولى من ابك مرسه حوص فأ فاص منهور مرسه تنا ، حوض دراصل سلطا ك علجی کا نبوا یا مواتھا، اس نے اپنی تخت سینی کے سال میں ہوا یاتھا له نوّمات نیروزنیایی،

فیروز نتا ہ کے زمانہ میں یہ حوض می سے بھر گیا تھا، باد نتا ہ <u>فیروز</u>نے ہیں کوصا ٹ کر ایا، جان جان مرمت کی ضرورت تھی مرمت کی گئی، اور تقریبا ہے ہے میں ہیں کے

اوپرایک مدرسہ قائم کیا جس بین مشور مدرسین جمع کئے گئے ،اس مدرسہ کے صدر مدرس

سید **بوسف بن جا**ل سلینی تھے،ان کا اُتقال سفئے ہیں ہوا،ادراسی مرس کے صحن مین دفن کئے گئے ،

مرسه فیروزشا ہی ، دہل کا یسب سے مثهور اور اپنے عمد کا بہترین مرسه تھا، فیروزشا ہونے مدکا بہترین مرسه تھا، فیروز آباد دہلی مین سامی میں تائم کیا تھا، ضیار برنی نے اس کی تعربین میں صفح کے صفح سیاہ کرڈا ہے ہیں، لکھتا ہے ،

" یہ مرسد اپنی شان رشوکت، خوبی عارت و موقع اور حن انتظام و تعلیم کے کا طاست عام مدارس مند میں سب سبتر اور عدہ ہے، مصارف کے لئے شا کا فاسے تمام مدارس مند میں سب سے مبتر اور عدہ ہے، مصارف کے لئے شا و فلا کف مقرر ہیں ؟

طرزباین سے معلوم ہوتاہے کہ مدرسہ کے تصل سحد سمبی تھی، مولکٹ اجلال الدین رومی ہیں مدرسہ کے مدرس وینیات تھے،

مرسهٔ با لابنداب سیری، یه مدسه دراص ایک نتا بی عارت بین واقع نقا، مناب که که که عارت بین واقع نقا، مناب که که که مدرسه فیروز نتا بهی کی عارت سے وہا کی کوئی عارت مناب کوئی عارت ہے، اس کے درکہ بالا بندا بسیری کی عارت ہے، اس بعد لکھتا ہے ،

" مولاناسيدالاكمه والعلمارنج الملة والدين سم قندى كدازنوا وراساً نده است در

آن عارت مبارک مرسس گشته یه

اس کے لئے کچھ وقت اور شاہی وظیفہ مقرر کر دیا گیا تھا، نیز بہت سے طلبہ کی کفا این

كى جاتى تقى، اوروه استا د مذكورسے فيض تعليم حاسل كرتے تھے،

ت اه صفرمانئ میں سلطان فیروز شاہ نے اپنے بیٹے شمزادہ فتح خال کی دفا پراس کے مقبرہ کے ساتھ ساتھ بطور کا رخیروالیسال تواب ایک مراشہ بھی قائم کردیا،

جس کے اخراجات کا مدار شاہی وظالف پرتھا،

اسطركا بى ها يونى لا هورى فى هاووم،

كة أريخ فرشة وآنار الصناديد،

ہایون نے وہلی میں ایک مرسہ قائم کیاجس کے ایک مرس سینیخ حسیین تنے لوگون کو یہ عام طور پر معلوم نہین کہ **ہا او ن** کے مقبرہ کے او پر حوجیت تھی وہ دراہل ایک مررسه تعاجب مین بڑے بڑے اسا مذہ وقت تعلیم دیتے تھے،اورمقبرہ کے ہیلوپ چھوٹے چھوٹے کرے طلبہ کی اقامت کے لئے بنے ہوئے تھے، عهداکبری مین ما میم منگم نے جو اکبراغظم کی مرضعہ تعین برا نے قلعہ کے بِاس مغربی دروازے کے مقابل مین ایک مسجدا در مدرسه نبو ایا مُدرسه کا نام خرالم نال ر کھاگیاجں پریہ کتبہ لگا ہوا تھا، كه باست داكبرتنا بإن مادل بدوران علال الدين محمر بناكر داين نبا بهر ا فاضل چرا ہم بے معمت نیاہی وبے شدساعی این بقدخیر شها ب الدين احدفان أل كه شد تاريخ او خيرا لمنازل زہے خیریت این خیرمنزل علویں اکبری کے اٹھوین سال اکبر رحالہ کرنے کی جو کوششین کی گئین وہ اسی کے قرب وجوار کا واقعہ تھا، گواب یہ مدرسکھنڈر ہے نہیں آج بھی اس کے باتی ہا اتا راس کی گذشته عظمت و شوکت کو یاد د لاتے بین ، شغ عبدالحق مدت د ملوی جرجها مگر کے عهد مین تھے، اخبارا لاخیار میں ایک مرسكا ذكركرتے بين جان اعنون نے تعليم يا ئى تقى السس مرسه مين تعليم كا و قت مله أما روبي ازاشيعن،

صبح سے دو ہیر بک اور فلر کے بعد سے شام نک مقرر تھا، چنانچہ شنج موصوف روز اپنہ اینے گرسے انہین او قات میں مرسہ جایا کرتے تھے، و تی کی جامع معبدعه رشا ہجانی کی صرف تعمیری یا دگار نہیں ملکہ اس مسلمین اورا ق نا ریخ پر خیدا ورر فا ہ عام کی عار متین مبی ہمیشہ یا وگار زما نہ رہیں گی، جیسا کہ استیفن نے لکھا ہے مسحد کے شالی ُرخ پر شامی شفا فا مذقائم تھا، جما ن غربار 1 ویہ کمینو ن کے لئے علاج کے تمام اسبا ب وسا مان مہیا کئے گئے تھے بمغت علاج کیا۔ تقا، اور دوا مین بھی بلاقیمت نقیم کی جاتی تعین مبحد کے حنو بی مُنے برشا ہی مرسہ تھا، س مدرسہ کا سال بنانخینٹا منانے اور عهد شاہجها نی ہے، یہ مدرسه گردش روز گارکے ایم ا ع اسعظیم انتان مرسه کا مواہد ،اس عظیم انتان مرسه کا أنم دارالبقارتها، بها درشاہ کے عدد عکومت مین ایک نیا مرسہ دلی مین قائم مواجس کے بانی میرغازی الدی<sup>ن ف</sup>یروز جنگ تھے ،مروم اپنے مرسہ ہی بین مرفون ہو*ے ،* سال وفات سنتالية ہے'اميرغا زمي الدين نواب مست جاہ باني فاندان حیدراً با و دکن کے والد بزرگوا رہے، یہ وہ علم پر ورخا ندان ہے جس کے فین کرم سے آج بھی ہندوسان کا گوشہ کو شہر اب ہور ہا ہے، امیر غازی الدین اور گزیا عالمگیرکے ان محبوب و معتمد امرامین تھے. جو در بار بہادر شاہی کے بھی معتمد رکن رہے، یرغازی الدین نے یہ درسہ اجمیری دروازہ کے قریب قائم کیا تھا، مدسر کی

عارت کے ساتھ ایک مسجد بھی تعمیر کرائی ، اس مدرسہ کی شکستہ عارت میں ابھی تک ایک خونصورت در وازه با تی ہے جو ایسے مقام پر لیجا تاہے جس کی ظاہری مات یہ تیا تی ہے کہ وہ مدرسہ کامطبع تھا ، نواب اعتما دالہ و افضل علی خان کھنٹونے ہیں مرسہ کے خرج کے وا ایک لاکھ ستر ہزار روپیے انگر بزی کمیٹی کو دیے تھے، خیانچ کمینی کی طرف سے تقبرہ کی دیواریراک کے نام کا ایک کتبہ لگا یا گیا جس کی عبارت یہ ہے، كتبه مقبره غازي الدين خان نبرلوح نقتے باندولیک جزائی عل ماندونام نیک «بيا وصنات نواب اعمًا دالدوله منياء الملك سيدفضل عليمًا ن بها درسرًا بخبُك کیک لک وسفیا و مزارروییه براے ترتی علوم در مدرسهٔ بذا واقع و بی فاص مولد ف وطن خویش بصاحبان کمینی انگر زبهادر تفویف منوده اند منقوش گردیده ۱۹۴۰ یژ محدثناً و کے عمد حِکومت مین نواب شرف الدوله ارادت فان نے ایک مرسم اوراس کے ساتھ ایک مسحد نبوائی ،اس م*ررسا کا سال نباھ تاا ہے ،* فل حق ماه زمین نتاه زمان درزمان شهرخورست بيد سرير تغ او گفرشکن در و دران ناصرالدبن محدثناه است شرف الدوله نبا فرموده ا مسحدومدرسهٔ عالی تان سميو سعدين فلك كرده قران این د وسیت کشرف علم وعل

حلی الترصاحب مدف د ہوی کے بدر بزرگوا راور فیا وی عالمگیری کے بات التی المائی ماحب د ہوی کا ہے'
یا ہ ولی الترصاحب محدف د ہوی کے بدر بزرگوا راور فیا وی عالمگیری کے جامعین میں تھے ہیں مدرسہ تعاص کے آغوش میں نتا ہ ولی اللّٰ قاضی تنا راللّٰہ بائی بتی، مدلن نتا ہ عبدالعزیر و موی نتا ہ المنعیل، نتا ہ اسحاق، نتا ہ عبدالعزیر و موی نتا ہ المنعیل، نتا ہ اسحاق، نتا ہ عبدالعا و روفی و علا کے اس کر جوان ہوئے ، اور آخر باری باری سے اس کے مسند درس برسکن ہوئے ، بہی وہ سرخیر نیف میں ہوئے ، بہی اس مدرسہ کی مٹی ہوئی یا دگاراب تک ورئی میں باقی ہے، اس مدرسہ کی مٹی ہوئی یا دگاراب تک ورئی میں باقی ہے، اس مدرسہ کی مٹی ہوئی یا دگاراب تک ورئی میں باقی ہے، مدرسہ کی مٹی ہوئی یا دگاراب تک ورئی میں باقی ہے،

سرا بنیاب کا اسلامی پائیتخت لا مورتها ، اس تهرنے اسلامی عهد مین بهت کچھ ترقیا ن کین ، پونے دوسورس تک غزنو به فاندان کے حکمرانون کا بحت گا ہ رہا ، علما ، و فضلا ، کا مرجع و مرکز تھا ، افسوس ہے کہ مجھے تصریح کے ساتھ متحد دمدار سس کے نام اس شہر مین نہین طے ، لیکن اس کی علمی ترقی کے آنا رہاتے مین کہ یہ شہر علیمی جیثیت سے بھی ایک مرت تک علما وطلبہ کا ملجا و ما وی رہا ہے ،

لأبور

ماہور وزیرِخان کی سجد یہ منہور سجد مدرسہ کا بھی کام دیتی تمی،اس کے نیچے اور گردو مینی جو دکا میں تھین،ان سے بانی کا یہ مقصد تھا کدان کی آمدنی سے دو علم تقرر کئے جائین تاکرسسلسلۂ تعلیم نبریکسی مالی وقت کے برابر جاری رہے،

که پادلیام) نومات خ ایمان ا عالمگراوزاگ زیب کے عد حکومت مین سیالکوٹ کے علی شان و تنکوہ کا پتہ جا ہے،اس تہر نے اس عد مین علی مرکزیت ماس کر لی تھی، بیان بڑے ہو اتف مثنا ہیر علمار تھے، لا عبدالحکیم سیالکوٹی جن سے ہمارے عربی مدارس کا بج بجہ واتف ہے، اور جن کی تصنیفات ہند و شان سے لے کوشط فلند کک جیلی ہوئی ہیں،ان کے صاحبزا دے قلا عبدالتہ آپ والد ما جد کی جگہ پر اس تنہر کے مدرسہ مین قائم مقام ہو الد ما جد کی جگہ پر اس تنہر کے مدرسہ مین قائم مقام ہو الد ما جد کی جگہ پر اس تنہر کے مدرسہ مین قائم مقام ہو المدوس ہے کہ اس مدرسہ کے بانی، تامیخ بنا، اور دو مرسے حالات کی تفصیل مجھے منہیں مل سکی، سیالکوٹ کے علی مرکز میت کا نشان عمدا کری کے بعد سے قما ہو جس سے معلوم ہو تا ہے کہ وہان علم وفقنل کا چرچا بہت پہلے سے تھا ،

" دوران خطهٔ دکشاخ ابگاه اماملی الحق خلف امام زین العابدین است گونید کرسبیارے ازابل اسلام ازعرب بقصد جها دور مندوستان آمده، با تفاقے کردود ا برسیا لکو طی رسیده با منه د جنگ کرده در م شها دت یا فتند اکنول مزار منظرانوا ایشال زیار تکاه صفا روکبار است، درال شرفین آمو د دار العلم جا مع علما و معدر ففنل و سکن ففنلا است اگر چه در زمان محداکیر با دشاه زیده ارباب حال و قال مولئنا کمال از صین مان مرز با ن کشمر رنجیده درسند م فتصد و مفتا د و یک بجری

<u>لەنىخە قلى كتباز الاملاح دىسىنە (بهار)</u>

کے تذکرہ میں لکھتا ہے،

تفانیسر علاقر بنیاب مین درگاہ نیج علی کے قریب ایک مرسہ تھا بو مرسہ شیخ علی کے قریب ایک مرسہ تھا بو مرسہ شیخ علی کے نام سے متبور بھی تھا، مدرسہ کی عارت ایک لوچ بتر فیٹ مربع ہے، اس کے ہرطون نو نو دراورجانب شرق دروازہ مع سیر صیون کے نیا ہوا ہے اس کے درواز ہم سیر صیون کے نیا ہوا ہے اس کے درواز ہم میں گرنے در کاہ شیخ علی کو مندر نبایا تو اس عار میں میں گرنتے رکھا گیا، اب یہ عارت شکتہ حال اور مرمت طلب ہے، اثر یا ت بہند کے بیا میں مدر شہ کو سائلہ مطابق سائل اور میں دارانکوہ نے تمریر کرایا تھا کے نیت کار محالد از یات بند،

### ناربول

شیر شآه نے ایک مرسہ فار نول مین قائم کیا، یہ مقام اب ریاست بہالہ مین داخل ہے، مقام ہوال جو حصار اور جے پور رہاوت کے درمیان میں ایک شیش ہے وہاں سے بھی ہمبین میں دور واقع ہے، مدرسہ کی عارت بہت بڑی اور شا ندار تھی شیر شاہ کے دادا آبرا ہم سور کی قبر میدین و اقع ہے، ایک کتبہ جو مدرسہ کی عارت پر اب تک لگا ہوا ہے، اس سے تاریخ تعریخ کا ہم ہوتی ہے، مدرسہ ومقرہ کے تعریخ میرک ہوتی ہے، مدرسہ ومقرہ کے تعریخ میرک ہوتی ہے، مدرسہ شیر شاہ نے اپنے عمد حکومت سے مصار ف ایک لاکھ رو بیہ سے زیادہ تھے، یہ مدرسہ شیر شاہ نے اپنے عمد حکومت سے مطار ف ایک لاکھ رو بیہ سے زیادہ تھے، یہ مدرسہ شیر شاہ نے اپنے عمد حکومت سے مطار ف ایک انتقال کے موقع پر بطور کا رضر کے بنوایا تھا، (ابڑیات ہذی) مدارس آگرہ اس شیر نے اسلامی عمد حکومت میں فعل میں نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کین اس شہر نے اسلامی عمد حکومت میں فعل میں نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کین اس شہر نے اسلامی عمد حکومت میں فعل میں نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کین اس شہر نے اسلامی عمد حکومت میں فعل میں نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کین اس شہر نے اسلامی عمد حکومت میں فعل نے شیمی تو تیا میں حال کیں نے اسلامی عمد حکومت میں فعل نے شیمی نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کین اس شیمی خوال میں خوال کیں نے اسلامی عمد حکومت میں فعل نے شیمیت میں فعل نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کین کی میں نے تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کیں نے درسے میں فعل کی تیت کی تیت وی سے اپنی ترقیا ان حال کی تیت کی تیت کی تعریف کی

اس تهرف اسلامی عدم کومت مین مخلف حینیتون سے اپنی ترقیا ان حال کین عور و و مرسے کئی تمرکو نصیب نہیں جنیت سے ایک مدت تک فرروز کار رہا، آگرہ بین متعدد مدارس قائم تھے، بیان کی تعلیم کا مون کے لئے شیار سے علیار بلائے جاتے میں متعدد مدارس قائم تھے، بیان کی تعلیم کا مون کے لئے شیار سے علیار بلائے جاتے انسان حی میں دانہ میں موجو دتھے، اپنی کا ب الفریح انسان کی آگرہ میں ایک بہت بڑا مرسہ موجود تھا جب کی انسان کے زمانہ کی آگرہ میں ایک بہت بڑا مرسہ موجود تھا جب بروفیسری کے میں تیراز سے ایک عالم بلوائے گئے تھے بصنف کی اس عبارت یہ ہے، بروفیسری کے میں تیراز سے ایک عالم بلوائے گئے تھے بصنف کی اس عبارت یہ ہے، بروفیسری کے میں تیراز سے ایک عالم بلوائے کے تھے بصنف کی اس عبارت یہ ہے، میں تعلیم می فرمو د ند، جانچہ تا مال مرسہ مالی اساس کہ رونت افزائے بوتان تعلیم می فرمو د ند، جانچہ تا مال مرسہ مالی اساس کہ رونت افزائے بوتان

سخورسیت و دیبا میر صحیفه سخور سیت دری و ارالفلا فت عِظمت اساس دارد و بشا بر ا مكاناتش تم حيرت درويده قريب مي كارد ، اب اس مدرسہ کے کچھ آنا رہا تی نہین ہیں، مدرسہ کی مگھ برایک مبت بڑا محلہ اباد موكياب، مرفيي ايك نشان باتى كدير ملداب ك محله مرسه كملاات ب شاہنشاہ اکرنے اس مدرسہ کے لئے جابی باک نام ایک شیرازی فاضل کو بلایا تماجس كى طبى كا فرمان الولفننل دفتراوّل مين مذكورب، شنح زین الدین خوانی نے جو نظم و نٹر کے ماہر سے ،اگر ہ میں انیا ذاتی مرسہ فائم جس کے مصارف کا تعلق بالکل ان کی فوات سے تھا ہ<sup>اریم ہ</sup>ے مطابق سم<del>یں ہوا</del>ء میں جب <u> چنار</u> کے قریب اُن کا اُتقال ہوا تو وہ اسی مرسہ کے صحن مین دفن کئے گئے ، جوان کا کا ى بواتھا، يەبھايونى عمد حكومت كا داتى مەرسەتھا، (منتخب لتواریخ) آگرہ نے اکبری عمد محومت میں جوعروج اور ترتی مال کی تھی وہ ہمانگیر کے زا نه تک باقی رہی،جانگیرانے تزک مین لکھتا ہے کہ " آگره کی آبادی مناعون اور طلباے علوم سے بھری ہے ، ہرمذہب ولمت علما اس تمرين أبا دبن " جها مکیرنے یہ قانون وضع کیا تھاکہ « مدو وملکت میں جان بھی کو ئی مالداررئیس یا بسرو نی تا جرنغیرکی جانتین یا وارث مرجائ تواس کی تام جا مُداد و الملاک نبام سلطنت بنتقل مبو کر مریسون اور خانقا بون م

ص مون موك (متحنب للباب خوافى مان)

عام جمان کا مصنف لکھتا ہے کہ جہا گیر نے تخت نشینی کے بعد قدیم مدارسس کوجہ ت سے برندون اور جانورون کا سکن ہنے ہوئے تھے، طالب علمون اوارت او

سے بھر دیا ،

مولانا علارالدین لا ری حبون نے تمرے عقا کرنسفی رِواشی کھے ہن آگرہ مِن درس و باکرتے تھے جدمر سہ اعنون نے قائم کیا وہ مدر سنٹس کے نام سے متہور ہوا،

) کیو که بهی اس کا تاریخی نام تھا کل ہدا یو نی سکھتے ہیں ،

" بِالْكُرُهُ أَمِدِهُ بِدِرِسِ مِشْغُول شَدِيْدُ ومِدرسه ارْخْس سافتندُ ومِدرسُرْض مَارْنِجْسُ شَدِ"

آگرہ کی جا مصحبہ شاہجات کی بڑی لڑکی ہما ان آرابگم کی اوگا رہے ،بگم نے اس کے ساتھ کی کہ دور کے ساتھ کے

أمد ني معجدا ورمدرسد كے لئے وقف ہے ،

ار ایس کی جوکٹرت تھی،اس کا بتہ اُج بھی محلون کے نام قدیم عارات اور زبانی مشور عام رواتیون سے میل سکتا ہے،

سبيان

منجلہ دیگر مدارس کے بیا نہ کا ایک مدرسہ قابل ذِکرہے جس کو مولوی قاضی رفیع الدین صاحب نے قاضیو ن کی مجد کے متصل قائم کیا تھا، مدرسہ کی عارت پر جو کتبہ ہے اس سے

مدرسه كاسال بِباسْتُ ليَّهُ معلوم موتاب، (اثريات مِند) مدارس فتحبور سكري البرنے ہی اپنے مدمِکومت میں متعدد مدرسے قائم کئے بنتیورسکری میں بہاڑ کے اویراس نے ایک بہت بڑا مرسہ قائم کیا جس کے مثل کوئی سیاح بہت کم مرس كانام تباسكة ب ، غالبًا لا له سيل جيد ابني كتاب تفريح العارات مين حب لي عبارت سے نہی مدرسه مراد لیتے مین، ‹‹اكبرنے اجبيرے والي أكرفتيورسكرى كوانيا وارالسلطنت بنايا، بيان بهت بى عارتين ښوائين ، جن مين مررسه وخانقاه وغيره هي داخل بېن ته ائین اکری مین لکھاہے، ٠ بفرمانِ کيهان خدامسحڊے و مدرسه و خانقا ہے بر فرازران کوه انجام ما فت ،جما ويدكان مدان نمط كمنتأن ومند" ( ذكر دارانحلا فرصوبر اكره) یہا ن ایک مرسہ، مدرسۂ ابوافضل کے نام سے تھا بانی کی خوش نتی دیکھیے کا کہ وہ قائم اور اسی مصرف میں ہے ، یہ مدرسہ تنا ہی محل کی عار تون کے بالکل قریب ہے ، ا ن کے علاوہ فتح ورمین اور مدارس کے نام مل توسکتے ہیں بھین جو نکہ اُن کی كو فى تفقيلى حالت منين ملتى ،اس كنة بمُ ان كوقلم انداز كرتے بين ، مرارس تهرا ونروار ۔ سکندر لودی نے اپنے ایا م حکومت مین مکٹرٹ سرائین ، مدرسے اورسجدین

غوائین، یهبت با بندشر تعیت، اور علم دوست بادشاه تها، مندو و ن نے فارسی تعلیم اسی کے عهد حِکومت سے شروع کی ،

تا ریخ دا و دی او رجام حبان ناسے معلوم ہو تاہے کہ متمرا میں اس نے متعد د مرسے قائم کئے،گوان مدارس کی تفصیلی حالت نہین معلوم لیکن قاسم فرشتہ ان تفطو مین قبل نکروکر تا ہے،

« درمیتیر فائماکه مهدو ۱ ن غسل میکردند، سراے ومسجد و مدرسه و بازار ساخته

مو کلان گامشته اند<sup>ی</sup>

سکندر نے حب سمافیۃ مین علاقہ الوہ کے قلعہ نروار کی تنخیر کا ارا وہ کیا اور پور اسٹر نہینے کی سلسل کوششون کے بعد فتحیاب ہوا تو حجے ہمینہ کک وہان اقامت گزین ہوکر مساحد و مدارس کی نبا و ناسیس مین شنول رہا فرشتہ لکھتا ہے ،

۱۰ وسلطان شش ۱ ه در بایت قلدنشسته تنا نها اربانداخت وساجدنبا نمو ده فقی و خطیب تعین فرموده وعلما وطلبه را و ظالک مقررساخته در آنجا متوطن گرد انیث به و در کرسکندرلودی)

# مدارس بالون

قدیم زا نه سے بیتمر شیان امرار اور شا نبرا دون کامتنقر را ہے ، اسکی علی توسیمی آیریخ دہلی واگرہ کی طرح روش ہے ، لیکن آج اسکی تا ریخی تفضیلات مجمول ہیں ، پیر تھی وہان ہمیشہ علما ونصنلا ، کی معیت اور طلبہ رکا ہمجرم اس کی گذشتہ عظمت کی ملکی سی یا د گار ہم

نا یخ نتا ه عالم مین عب کومشر فریخلن نے نتایع کیا ہے ، لکھا ہے کہ بدایوں کے قدیم عارتون کے ویران و نهدم حصے جواب کک باتی بین وہ دراص باغون محدون، فانقامون اورقديم مرسون كے أمار باقير مين، رصفوءه) بدایون کی ما مع محد سنانیمسل لدین مش کے مدا ارت میں بنی اس کے عقب مین درسهٔ معزی تھا،اگر چیقین کے ساتھ نہین کہا ماسکتا اہم قرنیہ وقیاس سے ہی معلوم ہو تاہے کہ یہ دو نون عارتین غالبًا تنمس لدین اتمش ہی کی حیوٹر کی ہوئی یا دگارین ہن یہ امروہ ہے گردونواح میں ایک سنتور مقام ہے، یہان نحب<del>یب الدو ل</del>ه نے ایک

ببت برا مرسة فائم كياتفا جهان سيبتيار طلبه في فين تعليم الله كيا اس مرسمين خصوصت کے ساتھ فرنگی محل کے اکثر فارغ انتحصیل اشفاص مدرسین میں داخل تھے ا مررسهٔ رامیو

مولِسنا بحرالعلوم كونواب فيض النُدخان نے رام يور بايا، اور مررسهٔ عاليهج اب نک قائم ہے،اس کا صدر مدرس مقرر کیا ،مولانا و ہان یا نجے برس اک درس تدر مین مشنول رہے، <del>ہندوشان</del> کے دوسرے مثبورعالم مل<del>احن</del> بھی م<del>ررسہ عا</del>لیّہ رامیو<sup>ر</sup> مین عرصه نکب مرس رہے ، ان بزرگون کے فیف برکتے تعلیم وقع کی وان بڑی گرم بازاد کی مدارس شاہجان بور وبریلی،

اخرزانم من رومبلكمندر ما فظ الملك رحمت فان في قبضه كرايا تما ابني

نوا بی کے زمانہ میں اُس نے روہ بیکھنڈ کے مشہور شہرون کورشک دہتی تباویا ، مولئنا بحرائعلوم کوا صرار والتجاسے شاہجمان پور ہلایا ، ان کے لئے ایک خاص مرسر قائم کیا جس میں مولئنا بین بٹش تک مشنول درس و تدریس رہے ،

ما فط الملک رحمت فان کی علمی فیا ضیا ن جس قدر بڑھی ہو نی تقین اوراس نے اپنے قلیل زمانہ میں تعلیم کی اشاعت جو کچھ کی ہصنف گل رحمت کے اس بیان سے اسکی تصدیق ہوگی ،

" باستاع فبرقدر شناسی و دین پروری ما فظ الملک مدم علی انتجوش مولنا عبالعلی کمه منتجوش مولنا عبالعلی کمه منتجوی و فقریم و رتا می شهر با ک کمیشی فتی شده مواحب کثیره زیاده از حاجت از سرگا متر تمیب یا نته بو د بفراغ می یا نقته و در مدارس و مساجد که براسی ایشان از سرکا رتر تمیب یا نته بو د بفراغ فاطردس و تدریس اشغال می و رزیدند، و در مردر سکتب درسی و فطیعهٔ طلبها زسرکا رتعین می یا

له رسالة طبييته كل رحمت عافط الملك اوران كے ماندان كى مفصل ايریخ بخوعا فط الملک كے بيتے محد سعاوت ياس كے مؤتف بين ، آغاز كتاب بين وہ لكھتے ہيں ،

« درسال پکزار و دوصد وجل و نهجری بنده فاکسا رخوسها دنت یا را بن ما فظ محد یا رفان بند از مال کنتر که در امنی ما قط الملک رحمت فان بها در مرحوم که کمبال عدا کشتری و نیک نا می مکومتِ ملک کیشر فرمو ده انده بقید تحریری آور د و درخمن آن احوال بعض یا و شایان و امیران آن عهد نیزی نگار د تا یا دگار ما ندواین تالیعنِ نومسی به گلیمتِ منتخب ارست از کاب گلستان رحمت که میش ازین جاب عموی ما حب محدمت با فان مرحم کمبال تحقیق و تومینی تسوی موده انده سلک علاقد دوم بیکمند کا درم ایم است می مرحم به مرحم می از می ما حب محدمت به موده انده سلک علاقد دوم بیکمند کا درم ام به م

ایک بندومصنعت کندن لال اثلی جواسی زمانه مین تھا اپنی تصنیعت نزیته انظر کے فاتر مین لکمتا ہے،

یاد دارم که درایا مخصیل نقیر در ملبدهٔ بر بی قریب سدمدکس طالب عکم اثنات نقیر نودند . مدرسم سلی عبیت

ما فظار حمت فان نے شاہجان بوراور بریلی کی طرح بیان ہی ایک مرسم نوایا تھا، ساڑھے تین لا کھ کے مرفہ سے جامع مسجد نبائی تو اسی سلسلہ مین مدرسہ کی عار ہی تیا رہوئی، بیان بھی طلبہ کے لئے وظا گف مقرر تنے جب کوئی طالب علم فارغ ہو او تو نواب مرحوم خود اپنے ہاتھ سے اس کے سرید دستار فضیلت با ندھتے اور اس کا وظیفہ تیا ہی خزانہ سے مقرد کرویتے ،

#### مدارك اوده

اوو ه نسبتهٔ اور صوله ن سے اس خاص وصف مین ممّا زمّا کہ بیان بانچ با نچ ارخ دس دس کوس پر شرفا اور نجبا ہ کے دبیات آباد تھے جن مین اچھے اچھے علما و فضلاد س دیتے تھے، اور دور دور سے طلبہ اکر تصیل علوم کیا کرتے تھے ، سلاطین کی طرف سے ان مرسول مصارف کے لئے دبیات معاف ہوتے تھے ، اَنْرالکرام میں مولوی غلام علی اُزاد لکھتے ہیں ، اگر چہیے صوبات ہندلوج د حالمان علم تفاخر دارند ، امامو بُر اور ہ و الا اَبا د ضعوصیتے دارد کہ دربیج صوبہ توان یافت ، جدرتام صوبہ اور ہ واکٹر صوب الدا ابا د نفاصلہ بنچ کرد ، نمائیہ د کروہ اَبادی شرفاونمبا بہت کہ از سلاطین و حکام و فالف و زمین و مرد محاش دائیا ومساجد و مدارس و فانقا بات بنا نها وه و مدرسان عصر در برجا ابوا ب علم برر و سه دانش برد با ن کت وه و طلبات علم خرار می روند، و برجا موافقت دست بهم داد دانش برد بان کت وه و طلبات علم خیل خیل می روند، و برجا موافقت دست بهم داد برخمیس عدم سنخول می شوند، وصاحب توفیقات برمعموره طلبهٔ علم را کناه می دارند، و خدمت این جاعت راسعادت علی میداند،

سهالي

انبی مشہور تصبون میں تصب<del>ہ سہ آ</del>تی ہی داخل تھا ، جو لکمنٹو سے ۲۲میل کے فاصلہ پرواقع ہے، شیخ نظا<del>م الدین</del> انصاری ایک مشہورعا لم اس قصبہ بین اگرسکونت مذیر ہو اورا تفون نے سلسلۂ درس و تدریس فائم کیا ،اُن کے پر لوتے سینج حافظ نے علمون مِن بڑی شہرت حامل کی ، پیشنشا و اکبیر کا زمانہ تھا ،حبب وقا نُع کٹارون کی اطلاع سے جس کاسلسا خصوصیت کے ساتھ تنمیوری عہد حکومت میں عام سندوشا ن میں تعییلا ہوا تھا، اکبر کب اس کی خبر ہونجی توشیخ جا فط کے لئے جاگیر مقرر ہوئی بنیخ موصوف باطبینا ن تام مشغلهٔ درس و تدریس مین مصروف رہے ،ان کی درسگاہ مین طلبہ کی سکونت کا اتطام تھی تقا مصارت كى كفالت بعبى تام ترشيخ موصوت كرتے تھے جس كا ذريعه وى شاى وفليغ تھا، لَمْ تَعْطِبِ الدِّينِ شَهِيدُ لَثِيحُ مَا مُطْ كَيْسُ سِيحِ تَمَى نَتِيتَ مِن تَحْيٍ ، لَا تَعْلَبُ لَدُّ کے والد <del>لاہور</del> کے کسی مرسم بن مرس تھے، اضون نے زیاد ہ ترکتا ہیں اپنے والد زرگوار سے ٹر مین اور کچھ دوسرون سے بھی ، فراغت کے بعد سہاتی ہی مین سلسلۂ دیس جاری کیا ، عالمگیرنے ان سے ملنے کی خواہش فلا ہرکی ہلکین انھون نے اپنے زا و یُرعزلت سے ہا ہم

نمنن پیند نه کیا، م*ا صاحب نے سلنال*ه مین شهاد ت یا ئی اور اس د ن سے <del>سما تی</del> کی زم على فرنگى محل كومنتقل موكئى ، مین سے پہلے میسی عظم ج نیور سے نیفیاب ہو کرآئے ان کے بعد شاہ میں نے بیان مرتون بڑی سرگرمی کے ساتھ بڑم تعلیم گرم رکھی ان کے بعدان کے شاگر دیشید الما غلام نقشبند نے اس محلس على كواورزيا ده رونق دى ، يه توضيح طور يرمعلوم نهين كرشاه پیر محمد حمان تعلیم دیتے تھے وہ کونسی عُکمہ تھی بیکن عجب نہین کہ حومقام آج شاہ بیر محد کاتا ك نام سے مشہور بے اس كى اس نام سے شہرت كاسبب ميى محلب تعليم مو، لَّا تَ<del>طَبِ الدِّينِ شَ</del>يدِ مها يوى كے نامور فرزندمًا **نظام الدين كے فيض نے** فرخ لو<del>منِد وسّان</del> کا دارانعلم وانعل نبایا ، به اپنے والد مزرگوار کی شہادت کے وقت ہم <sub>ا</sub> بر ئے تھے، *تمرح مّاجامی کا تعلیم ہ*و کی تھی، بقیہ کمّا بین مل<del>اعلی قلی حالسیٰ مو لا ما نقش</del>بندگو**ک** ولناعبدالسلام ديوى اورمولنا المان الله ببارسي سي يرعين، 44 برس کی عمر مین فراغت تعلیم کے بعد *مسند درس بر بیٹھے، اور سہا* کی کا چراغ علم و ففنل فرنگی محل مین روشُن موا، فرنگی محل کا مکا ن سکونت نهنشا و ما المگرنے عطاکیا تھا. فرمان کے حید جلے یہ ہین ، فرمان واحب الافعان ما درنته *که یک منزل حو*یی فرنگی ممل استعلقه آ*ک و*اقع ں بلد کمکنؤمفا ف لعبویهٔ اود هر که ازامکنهٔ نزولی است براے بودن شیخ محد سعدو محرسید میکر

ملّا قطب لدين تهييد حب العنمن مقرر فرمو ديم، چونکه ما نطا**م الدین** اس وقت صغیرس تھے اس سئے فرمان میں ان کا مام نیز ک<sup>کور</sup> ہے. نەمرف <del>ہندوستا ن</del> بکہ تام دنیاے اسلام بن یہ فخرمرٹ اسی فا مُدان کومال ہے کہ تقريبًا دُما ني سوبرس بك بافعل علما ونضلابيدا موتے رہے ،اوران مين سے ہرايك نے اپنی زندگی محض علم وفن کی ضرمت کے لئے وقف کردی، اوران کی درسگا ہون سے نہرار وان علمار نفل کر ماک کے ہرگو شہرین تھیل گئے اورالحد نٹرکہ یفین اب مک جاری ' اس سلسلہ مین دیوا، جائٹس، گو مامئواور خیراً با و وغیرہ قصبون کے نام می لینا ِ عِاسُين . جها ن اوّل الذكر مين مولننا <del>عبدانسلام</del> . ثا ني الذكر مين <del>الماعلى قلى</del> . ثالث الذكر مين قاضی مبارک، اور را بع الذکر مین مولنا ففنل حق وغیره مدتون درس و تدریس مین شنول رہے ،اوران کے فیوض علی تھی مہت کچھ عام تھے، ملائظام الدین نے اول الذکر دوبْرِگو کے ملقۂ درس کی شرکت کی اور زانوے ملمذتہ کیا تھا ، بلگرام بھی ان قصبات مین محضوص حیثیت رکھتا ہے بعلیمی حیثیت سے یہ جگہ بھی مرتون ممازر ہی ہے، متعدد مشا ہر علماء و فضلاء اس کی خاک سے اعظمے، سے یہ قصبات درحقیقت اپنے اپنے علماء کے فیض وحودسے بجائے خود کا بج ملکہ یو نورسی اس سلسله مین فتح گده کا مدرسه می قابل تذکره ہے جس کو حکیم همدی وزیر نواب سعادت على خان اورنواب غازى الدين نے اپنے عدقيام مين جب لكسؤس فنح كداه کچہ د نو ن کے لئے اگر رہے تھے قائم کیا تھا ،اس مرسہ کے تفصیلی حالات نہین معلوم ا

ر نعنی یا رکٹ نے اینے روز نامچ مین اس کا تذکرہ کیا ہے . الدّامًا و مين شيخ محب اللّه، قاضي محراً منت ،شيخ محد اضل، شاه خوب الله ، شيخ <u>محدطا ہر، حاجی محد فاخر زا کر، مولوی برکت اللّٰہ، مولوی جارا للّٰدا ور دوسرے باکی ل</u> علمار نے ایک مدت تک سلسلۂ درس و تدریس قائم رکھا، اور ان بزرگون کی مساع جملے کے باعث تقریبًا سوبرس کک وہان اٹھی علمی رونق رہی. دا کرہ شا ہ افضل حو آج اِ تی ہے،اورکسی قدرا بنے قدیم فرائفن کوا داکر تا ہے، غالبًا وہی مقام ہے جا ن<sup>سے</sup> شهٰ لبانِ علم ونضل مدتون سيراب موتے رہے، مدارس فرح أمآ بہا درشاہ کے عمد حکومت مین فرخ آیا دیے ایک مدرسہ کا بتہ جاتا ہے جہانگا نام فزالمرابع تما البض لوگ اسی نام کو ربع المفاخر کی صورت مین بدل کر قنوج کامجی ، مرسه تباتے ہیں ہیکن میری راے میں یہ اشتباہ اسمی ہے رتبے المفاخریا فزالمراہع م قنوج مین کسی م*درسه کا تذکره مجھے کسب تاریخ مین نمیین مل*نا ، <del>فزالمرات</del>ع فر<del>خ اُبا</del>و کا مرس ہے، جس کے بانی مولوی ولی النرامی ایک بزرگ تھے ، مولوی علیم الدین اورمولوی نعیم الدین نے اسی درسگاہ میں تعلیم یا ٹی تھی ا <del>حن رضا</del> خان وزیرا<del>صف الدو</del>له نے <del>فرخ آی</del>ا د (گرمیحے غالبًا فیض آیاد)من ا مرسہ قائم کیا جس کے ایک مرس مولنا <del>عبدالوا ص</del>رفان خیرآبا دی تھے ، یہ زما نہ <del>تنا ہ ما آم</del> ، يىفىون مكيم دىدى يويى مشاركين توكى كەئەن ئىدىتان كى على ترتى شا داك ملام كے عدويق، از نرندرنا

عد مکومت کاتھا،

معنف آنا رخرکے بیان کے مطابق بیان ایک مرسہ نواب محدفاً ن نگبش والی فرخ آباً و کاتعمیر کرایا مواہمی تھا،جمان یہ مدرسہ تھا وہ مقام اب کک مدرسہ کے

وی من اباوه میررویا ہوا ہی عا،بن می یہ مررسہ عا وہ مقام اب بات مررسہ نام سے مشہور اور محلہ حیا وُنی مین واقع ہے، افسوس ہے سال تعمیراور دیگر حالات

کچه معلوم نه ېو سکے ،

مدارس جونبور

اسلامی عمد حکومت مین جونپورگی تعلیمی وعلمی ایمیت اس درجه ممثا زخمی که اس شیراز منه رکالقب دیا گیا ، شابهها ن فخریه کهاکر تا تما ، که

« يورب شيراز ماست <sup>»</sup>

ادر خاص <del>جو نپو</del>رکواس نے ش<u>راز ہن</u>د کا خطاب دیا تھا، ہن<u>د وسّان کے مشہوریا دشاہ ا</u> شیرشا و نے اس علی سرز مین کو آغوش تربیت مین پرورش یا ئی تھی، <del>شیرشا</del> ہ کوسکندگ<sup>ا</sup>

يرِ گلسّان، بوسّان وغيره کما بين زبا ني يا دشين .فلسفه کي تعليم هي يا ئي هي ،اس کي تعليم سيستان سيستا

عربی کے سلسلہ می<del>ن کا فیہ</del> اور شر<del>ح کا فی</del>ہ ،شیخ شہا<del>ب الدین کا تذکرہ آیا ہو، قدیم ملکوا</del> کی تاریخ کا بڑا شاکش تھا،علمار وشیوخ کے ساتھ اکٹرمدارس اور خانقا ہو ن مین م<sup>اتا</sup>

تھا، علمار کے لئے اس نے بگرت مرد معاش کی رقمین مقرر کی تھیں،

٥٥ يا مصلية من بي بي راج سيكم في جونبو رمين ايك مراشه قا مُم كيا جومرس

ك جونيور نامه،

نی بی را جبگم کے نام سے موسوم ہوا، حب سیسیٹر یاست<sup>و</sup> بی مین سلطان *سکندر* و دی <del>جون ب</del>ور کو فتح کیا ت<del>وصین نیا</del> ه نیرنی کی ا*س شکست برسلاطین نیرقیه کی حکومت کا مجی* خاتہ ہوگیا ، سکندر لو دی نے نتح یا تے ہی مساجدو دیگرعاراتِ مقدسہ کو حیور کراور درسر عار تون کے اہندائم کاحکم دیا، گواس دن سے حکومتِ تعرقبہ کا چراغ گل ہوگیا ، مکین جنبوری بزم علی منتشر نہ ہونے یا ئی، اب جونبور کا انتظامی تعلق براہ راست ولل سے متعلق ہوگیا، شاہمان کا یہ فرامیر حلہ کہ ا د پر لکمٹ ما چکاہے،اُسس <u>ز</u>ر کام <del>جون پ</del>ور کو عام طور پر حکم دے رکھا تھا کہ وہا<sup>ن</sup> کے علمار وطلبہ کو بمیشہ و طالفت دیئے جایا کرین ،اورواقعہ نگار ہر مررسہ کے حالات تھین حب <del>شاہجا ن</del> کوئری نئے مر*ے کے قیام اور استح*اقِ امانت کی خبر ملتی تھی تو وڑا س کے لئے وفلا لُف مقرر کر ہاتھا، جب ملک کے امراءُ شا ہزا دے اور حکا <del>مرو ہوا</del>۔ سے گذرتے تھے تو وہ ان مرسون کے دیکھنے کے لئے لازمی طور پر قیام کرتے تھے، نیز حبیب خاص سے بیش از میش عطیے دیتے تھے ، اکداس طرح شا ہا ن و ہلی کی وشنو مال کرین ، تقریبًا <u>منمالای</u> مین نواب <del>سوادت خان می</del>تا پوری حب ا<del>و ده ، جون پو</del> ا و رنبارس کاصوبه دا رمقرر موا توحب متوراس نے بھی اس عظیمانشان شهر کی له جنبور نامه،

زیارت کی بکین اس بنا پر کہ علما داس سے ملنے کے گئے نہیں اُ کے، خفا ہو کر حلاگیا، اور وے گیا کہ اُن کی جاگیری صبط کر کی جا کہیں، اس حکم کی تعمیل ہونا تھی کہ دفقہ جرت بور کی تام علی تعلیمی سرگر میون براوس بڑگئی، طلبہ اور علما، وہان سے چلے گئے، اور تام آباقہ مدرسے ویران ہوگئے بٹ التہ میں آصف الدولہ نے اُن کی جاگیرون کی واپسی کا حکم دیا بلیکن المجے فی ان نے فیالفت کی اسی زما ندمین جرت بور آگریز ون کے قبضہ میں آگیا ہث کے خال میں حب و کئی نے اس شہر کو دیکھا ہے تو اس کی بربا وی پر افسوس کی اس زما ندمی کی اس نا میں کی گذشتہ عظمت کی اس زمانی نقوش باتی ہیں، مرقوم ہے کہ عمر کاری کا غذات میں اس کی گذشتہ عظمت خیرفانی نقوش باتی ہیں، مرقوم ہے کہ

"جن پرجون سانون کے علوم و نؤن کا مرکز اور علما کا مرجع تھا ہجں کوشراز ہمد کا خطاب حاصل تھا، جان بہت سے مرادس قائم تھے، اور جس کی اب مرف گذشتہ عظمت کی داستان ہی داستان با تی رہ گئی ہے ہم کہ سکتے ہیں کہ یہ شہر ہندوستان کاشیراز تھا ، یا ازمنہ وسطیٰ کا بیرس ، جون پور کا ہر شا ہزادہ اس پر فخر کرتا تھا کہ وہ علم و حکمت کا مربی ہے ، علما را ورحکما اس شاہی وار انکومت کی برا من سرزین بین ہم کی علی ترقیوں کے لئے ہمہ تن کوشان رہتے تھے ، محد شاہ کے زبانہ کس ، مشہور مرسے جون پورمین موجود تھے ، جن کے اب صرف نام ہی نام باقی رہ گئے بین اُن بین سے ایک کا بانی بندر ہوین مدی کے وسط مین مرا اور ایک اور کا بانی

ك كتاب زندراناته لا،

چونب**و**ر کی میشورومعروت مسجر دراصل فک تعلی رشهاب الدین دولت آباد<sup>ی</sup>

کا مدرسہ ہے جس بین ایک ٹمت کاس فخرروزگا رہتی کی بدولت بزم تعلیم گرم رہی، اس کے گروو مین جو ویت سلسلہ محرون کا ہے،اس کوعلما وطلبہ کی آقامت گا ہ ہجنا جاہئے'

<u>الدت</u> بیان مولننا <del>امانِ اللّه نبارسی کی بهت شهور درسگاه تقی . جهان سے ملاقطام</del> م

نے بھی فیض حاسل کیا تھا بسکین بیمعلوم نہین کہ اس کی حیثیت کیاتھی، اگر کو ئی خاص سپر

تھا توجھے اس کے متعلق کے تفصیلی معلومات نہ بہم منبح سکین ،

یہ چھوٹا ساضلع گو ہاکل نیاہے ،لیکن قدیم ز ہا نہ میں ہ*س کا تعلّٰق ح<del>ون بو</del>ر۔* وراس کے اگر فرزنداسی تعلّق س<del>ے حون بو</del>ر کے انتساب سے مشہور ہیں، مّاممو دعور

مشہور ہن ،نیکن وہ دراس نہین کے باشندہ تھے، <del>جریا کوٹ ،حمرا ہا د</del>، ولیدیور، نظا

بل ، سرك مير ، مبارك يور ، منو ، اسكه شهور قصبات بن ،

ولید بور ملّا محمد و کامولدہے ،مولوی <del>حن ع</del>لی مرس ومفتی مدارس <del>ما ہ</del> کے

<u> اکوٹ کی خاک سے اس آخری دور مین مولٹ ناعنایت رسول مر</u> روق صاحب جیسے فحزر وزگا رفضلا پیدا موے ،اس ضلع مین گذشتہ آیام کی کثر شیا

# کے آیا راہمی کک صاف خایات ہیں،

# غازى يور

اس سلسلہ مین غازی بور تھی تعلیمی شنیٹ سے قابلِ تذکرہ مقام ہے،اس سرز مین سے تھی اکثر علماء و نفسلا پیدا ہو ہے،مولا نافسیمی اور مولا ناعبد السّد غازیوری کی ذات بیان کے لئے ہمینتہ سرائی فخررہے گی،گذشتہ زما نہ مین پورب سے آکر بیا اکثرون نے تعلیم کے لئے اکثرون نے تعلیم کے لئے مماز خصوصیّت رکھتا ہے،

## ملارس بهار

جھٹی صدی ہجری کے آخر مین محد نجتیا رکھبی سب سے پہلے ہمار و نبگال مین ہگا داخل ہوا ہفصیل نہیں ملی ہیکن طبقات ناصری اور دوسری تاریخون سے آنا اجالاً علوم ہو تاہے کہ بختیا رکھبی نے اپنے مفتوصہ علاقون کے بعض شہرون مین متعد و مدرسے قائم کئے ، مجنیا رکھجی قبطب لدین ایم بسک کامتدا سرکہ پرتھا، اسی بختیا رکی فاتحا نہوں کی مدولت علاقہ مہمار و مبکال مین شریعیت اسلام کا نشر و فلور ہوا، فرستہ لکھتا ہی،

« اولین کے از شا ہا نِ اسلام کہ بان نواحے رفتہ و شعارِ اسلام را دران عدو

ر واج دا ده، محد نختیا ر خلجی است » ( علید ۲ )

ہاری علی قعلیمی ماریخ گوتفصیل کے ساتھ اس وقت بیش نہین کی جاسکتی ا کیونکہ مجھے تفصیلات ہم نہین ہونچین بیکن و ہان کا موجودہ علی ولیمی فرمغ اس کے شاندار و درختان جنی کی بهت بڑی ولیل ہے، ایک زمان نے دراز سے وہان تعلیم عام ہوا ہر ورمین علما سے عظام گذرتے رہے، چانچہ آج سے تقریبًا چار سو برس بنیتر سلطان سیام شاہ کے عدیکوست بین شنے علائی بانی فرقہ قدر و بیرا ورعلا سے وقت بین حب مدویت کی نبیت مناظرہ بیش آیا تو اس کے عکم ایک بہاری عالم شنے طبت بر مبرس تھے ، ان کے علاوہ ملا محب الله اور علام محیی این عدے متحد کے متحور ترین الله مرب الله الله مرب الله مرب

علمات بہار مین سے متعدواتنیا می سلاطین مِ فلیئم کی طرف سے اعلیٰ من پر بھی فائز ہوئے ، با وٹیا ہ نامہ کا مصنف ملّاعی دالحمید لا ہوری عما ہے عمدتیا ہما کے سلسلہ من لکھیا ہے ،

سیداحدسیدموطنش از توابع صوئر بهاراست، علوم عربیت خصوصاً علی فقد که در ا نیک ستحضراست نز دوالدخود لماسعد که از نضلائے آن دیا ربود اندوخته برگاه کوا بهاه آیده بقلا و روزی اختر مسعود و آخل بندگان سادت آئین گردید و بس از خید م بخدمت افتائے اردو سے گیمان بوسے نوازش یا فت، (طلد دوم صفحه ۵۵) مولوی سراج الدین احد بتوطن فرید پورشاه عالم ما دشاه کے استا دھے، مصنف تذکرہ میں گکشن مولوی اما ل علی تمتا زکے تذکرہ بین لکھتا ہے،

نیرهٔ مولوی سارج الدین احد شوطن فرید بورکه بغاصلهٔ شانز وه کرده از عظیماً با د

واین مولوی سازج الدین احد شاه عالم عالی گوهر با دنیاه دنی را اشا د بود ۴

ہمار مین عمو گا بیصورت رہی ہے کہ اکثر رؤساروا مراعلم وفن کی دولتِ لازوا نوں سے بھی مالامال ہوتے تھے ،اور وہ صروریا تِ دنیا وی سے بے نیا زرہ کر اپنے کا شا

مین بیٹے ہوئے تعلیم و تدریس کے ذرایعہ سے علم وفن کی مبترین خدمات انجام دیتے

تے،اور حوامرا راہل علم نہ تھے وہ اپنی محاصرا نڈعزت بر قرار رکھنے کے لئے علمافونلا کو اپنے وامن دولت سے والبتہ رکھتے تھے ،طلبہ کیلئے وظالف اورجا گیرن مقرر

کرتے تھے، اور وہ اس کا رخیر کو نجاتِ اخروی کا ذریعہ تیجھے تھے بچنانچہ آج کا س مقدس رہم کی یا د گارین <del>سِهار</del>مین موجود بین ،

# بهار کے شہومی قصباو دہیا،

سیان زمانهٔ قدیم سے متعد دقصے اورگا کو ن علمی مرکز رہے ہیں، جمان سے اس آخری دورمین صبی مناہیہ علمار پیدا ہو ئے،اس سلسلہ میں جندگا کو ن کا نذ ضروری ہے، جبہت مشہور ومعروف ہیں،

من<u>ر</u> بیان متقدمین مین جناب نشاه **نتمرت الدین ا**حداور متاخرین مین مولو

ہیں مونوی اخل الدین اورمونوی *بطف علی بڑے یا یہ کے عل*ا، گذرہے ہی سرم ا مونوی لیم الله اورشاه کبیرالدین ماحب شهوراتنام تھ، رض رہائی۔ ہیان مولوی مفتی علا**م قا د**رصاحب شورعالم تھے، ڈیا نوان | میان مولٹنا مولوی مسل طحق صاحب فیتش،مولوی عافظ **نو راح**حد ب،مولوی محمد زمبرصاحب مثهورار با ب عمرو د ولت تھے،اوّل الذكروہ مّأ زہتی ہے جس پراس آخری دور ہیں ہندوستان جس قدرعاہے فز کرسکتا ہے جم ت علم حَدیث میں بسر کر گئے تجھیل مدیث کے لئے ایکے یا ن اکثر مدنی المیٹی ا در نجدی عرب طلبہ آتے تھے ،مروم نے فن حدیث میں منتق **بی داوُ** وی وہ ہتر ح کھی حس کویڑھ کرءب وعجم کی زبان سے بے ساخة مدائے تحیین و آفرین بند ہوتی علیق اننی علی الدا **قطنی بھی مرحوم کی عدہ تصنی**ف ہے ،آخرالذکر افسوس ہے کہ طبدا سے رخصت ہوگئے معقولات اور اقلیدس مین یہ خاص طور بر نہارت رکھتے تھے، ئىلدىن يول<sup>ى</sup> وطن مولانا ملط**ف بىشىيىن مردوم ، ج**ېت<del>ىندوسا</del>ن كےمشہورعا لم اورطبقە ا کے ایک متمازوں ررآوردہ رکن تھے، گرنسه یزمانهٔ قدیم سے علما، وضلا کا گهواره ہے، مولانا علیم الله، مولانا میلمواللیه؛ وَلَانَا **إِنَّا لَا اللَّهُ وَمُولانًا مِدِينِ اللَّهُ وَمُولانًا ابْرِامُهُم ، مُولاناً نَصَرُّ قُ** فَ لَق ، مولانا ككر ارعلى ، اورمولا أعليم الدين ، اسى خاك سے اللے ، مولانا **امین التّدر**مین، **یه خترات می**ن مولانا **جاک الّدیّن** مهاری مطول<sup>یت</sup>

نوززه زوزه

مِن مولانا **قائم اله ابا وي ا**ورتفيه ومرثيث بين مولنا شا ه عيدا لعز مز صاح<sup>و</sup> بي<sup>ي</sup> ك شاگروته ، انفون نے ميرزا بريرها شيه لکھا ، ملم انتبوت كی ترح لکه رہے تھے ، كه اسی انتارمین و فات یا ئی ،ان کی ایک تصنیعت تصید وعظمی شاکع موحکی ہے ،اس<sup>ین</sup> نعت اورمعجزات اور دیگر واقعات حیاتِ طیبه نبوی کونظم کیاہے صحت حن برخ اورافقاربیان کا سررشته لائق مصنف نے کسی موقع پر بھی اچھ سے جانے نہیں ہیا، ز بان فارسی ہے ،اور وہ اس درجہ ملبند کرمصنف پراہل زبان ہونے کا دھو کا ہوتا ہو، ایرانی می اس کویر هکر حجوت بین مطلع یہ ہے، مخذرات سراير داب قراً ني ا مه ولبراند که ول می برندینها نی مولانا ابرا بهيم مرحوم ان كي ايك تصنيف فارسي مين مجي تنسرح ولوان بنی منہورومتدا ول کتا ب ہے بمولا نا ت**صد ق حیدت** فالق فارسی مین میرطو کی کھتے تھے ،مذاق نهایت عدہ اور نطیف تھا،ایک غزل کے مین شعر ملاحظ ہون، اے زنٹ یار بامنت این بیج و تاب دل راسپردہ ام تبو دیگر عماب حبیت أمته روكه سربه بنني جال ووست اعتر نزگام ترااين تتاب عيت مویت سفیدگشتهٔ و فلاق عافلی صبح ازا فق دمیده و گروتش<sup>ا</sup>ب ىرلانا **غلىمالدىن مرحوم جائعٍ علوم وفنون ننے ،س**ت**م الا فلاك اُن** كى يا دگار<del>ئ</del>ے له يا داكار وان شوق نموى،

نیمی یه مولانا فلمیرس صاحب شخص مرحوم کا مولد ونشار ہے ،جوعر بی فارسی اور ار د ونظم و نتر مین سرآمدروزگارتھ ،متعدد مختصرات کو حیوژ کر فن حدیث می**ن آمار آن** اُن کی ایک مطول تصنیعت ہے ،اس کا ایک حصتہ حمیب کرشایع ہوجیاہے ، دومرک علد کے کھ اجزاء سُناہے، کہ موجو دہن الیکن افسوس افلاف مین کو کی اس قابل نہین کہ اُن کو ترتیب دے کرشا یع کرنے کا فرض ا داکرسکے، یہ کتا ب حس یا یہ کی ہے ،اسکو کھھ اہل نظر ہی سمجھ سکتے ہیں ،ارو وشاعری میں اُن کو ممّا ز درجہ حامل تھا ،ایک دیوا<sup>ن</sup> اورایک شهر زننوی سوز و گدازان کی یا د گار ہے ، لهته | مولوی *معیا و ت حسین صاحب مرحوم مرس مدر سهسارنپور* و مدر سرمالیه گیلانی | مولوی احس صاحب نطقی کا مولدومنشار، استها نوان که مولانا ما فط **وحیدالحق** صاحب مرحوم کا وطن ہے، تلا مٰدہ کی جاعت کثیر کے علاوہ آپ کے علمی فیوض کی زندہ یا د گا ر مدرسہ اسلامیہ مہارہے ، جوآج مک اس ر یا رواطراف کے لئے سرحتی معلوم کا کام دیتا ہے، دوسرے، عالم مولوی محمد احسن صاحب مرحوم بھی سبین کے تھے، یہ زیا وہ تر بہا رکی خانقا ومحل میں مصرو ت درس و

مررین. ویسنه اسکن مولانا <u>مصطف</u>ح شیرصاحب مدرس اعلی مدرسه خانقا <del>ه سسرا</del>م، مولنا محمد **بیعقوب م**احب ریامنی دان مدرس بهار،

رحيمآباد | يدمولاناعب والعزيز ماحب مرحدم كا وطن ہے، يه توجو کچه تفاخاص صوبه بهار مين تحاليكن مهاركيملي فيوض بهارې يك محدود نہ ستھے، و ہان کے اکثر فضلا اپنے وطن سے با ہر کل کر دوسمری جگہ کی علمی مجلسون کی میں رونق بڑھاتے تھے، شُلُا اکٹراتینی م<del>ی او و</del> ہواور<del>و بی</del> ابتدارٌ تعلیم کے لئے اُکے اوراً خرمین یہین اپنے اسا ندہ کے مند درس پڑتکن ہوگئے،او دھ مین ملا محبُّ اللّٰہ اور <del>دہ</del>ی کے اس آخرز ما ندمین مولان<del>ا نذیرهیی</del>ن صاحب محدث دملوی اس کی آخری مثال تھے ، نًا فی الذکرصو بر بہارے ایک چیوٹے سے قصیہ سورج گڈھ کے دہنے والے تھے ، اخون ے نے علم صدیث کی جو خدمت و ہتی میں بدائیے کر کی ،اس سے ہتر خص و اقت ہے ،آج ہندوستا كاكوكى كوشراكي تلامذه سے خابى تنين، صوبہ مہآرمین قدیم تعلیم کی حوکرت تھی اورہے اس نسبت سے درحقیقت مخصوں

صوبہ مبارمین قدیم تعلیم کی جوکٹرٹ تھی اورہے ،اس نسبت سے درحقیقت مخصوص پرانے مدرسون کا علم مجھے کچھ بھی نہ ہوسکا ، تا ہم خبد مدرسون کا اجالی حال معلوم ہوا ہے،اور وہ یہ ہیں ،

سهمسرام بہان حضرت شاہ کبیرعلیہ الرحمہ کی خانقاہ سے متعلق ایک عظیم انشان مدرسہ ہے، مدرسرمین ایک وسیع اور عدہ کست خانہ بھی ہے جس کی مالیّت کا تخیینہ تقریباً ا لا کھ روپے بیان کیا جا تا ہے، مدرسہ وخانقاہ کے لئے بہت بڑی آمدنی کی جا مُداوفرخ اور شاہ عالم کے عمدسے وقف ہے یہ دونون مقامات اب تک اس دیارین سٹرنیئر

فيوض وبركات بين، (أمارخير)

## مددسه وانابور

دانا پورمین نواب اصعف خاک نے متبد و مدرسہ کی بنیا و دانی ہمکن اس کے عدمین عارت کمیں اور الی ہمکن اس کے عدمین عارت کمیں کو ند پنچ سکی، فواب ہمیں ہمیں جنگ نے اپنے عمد مین الخار الو کو کمل کیا، مولوی عبد الحق صاحب و لوی اپنی کتاب غوامیت کی ارمین لکھتے ہیں، ان عارت منین کینچ سکتی،

# مدرسه خانقاه محلواري

طلبه کو جاگیرین متی ہین ۱۰ ورسلسلهٔ تعلیم و تدریس برا برجا ری رہاہے بجدا نند کہ پیلس ارج تك كبيي منقطع نه موا، فاص شہر عظیماً با و بین ایک محلہ ہی مدر سفر سید کے نام سے موسوم ہے ہمجد کی عارت اب تک فائم ہے ،سلسائہ عارات سے معلوم ہوتا ہے کہ بیرعارتین دورک مسلی مہدئی تھیں ، موقع نهایت عدہ ہے بینی بیسجد بائکل دریائے گگاکے کنارے واقع ہے ،مبحد نہایت وسیع ہے ،اس اس کی عار تین مندم ہوگئی ہیں ،گوابھی کسی قدر حابحا در و دیوار باقی مین بیکن اس قابل نهین که وجوده آنا ر باقیه سے ان کی اسلی مهیئت و شان کاتید لگا یا جاسکے ،اب قرب وجوا رکے اہل محلداس کی زمین کوانیے مکا نوان میں ٹ مل کرتے جاتے ہیں ،حس سے کچھ و نون میں بقید آنا رہی مط جائین گے ، مجھے کسی کتا ب یاکتبہ سے تصریح نہ معلوم ہوسکی <sup>ہ</sup>یکن عظیم آبا د کے بڑے بڈر طو<sup>ن</sup> ی زبانی به روایت سننه مین آئی که ان عار تون کا تعمیر کرنے والاً **سیعث خان** نامی لوئی امیرتما اس نام کا ایک صوبه دار مه**یار و ننگال می کا صدرمقام <del>بوری</del>ه ت**حالی<sup>ش</sup>ه گذراہے ،مکن ہے ،اسی نے بینہ مین میعارتین ہنوا مین ہون، ایک اور سیف جا صوبه دار مجی جوبهت علم مرور تھا، گذراہے ،لیکن اس کی مدت اقامت کم و مبت<sub>ی</sub>ر و س کی ہے ،اس قلت مدت کی وجہ سے یہ نہیں خیال ہوسکیا کہ بیرعارتین اسی نے تعمیر ہیں کیونکہ اس سلسلۂ عارت کی وسعت و ٹیان کم از کم حجّ سائٹ سال کی مدت جامتی ہؤ

خاص بیننے کے ملد**صا و قبور**مین جوشہور خاندان ہے وہ صرف علم و فن کے لئے شہوً ہے،اس فاندان میں متعدد علما ہے کب رسیدا ہوئے جن کی سوائے عمریان شایع ہو مکی ہیں،اورجن سے اکثرانتخاص وا قت ہو چکے ہیں،اس لئے بیا ن پر مجھے تفصیل بیا ن کرنے ا کی کو ئی صرورت نہین، بیما ن کے ہرعالم نے درس وتدریس کاسلسلہ ہرا برجا ری رکھا، فا وولت مند تھا،اس لئے بہت کھ طلبہ کی کفالت بہین سے ہوتی تھی، پینمین شمس لعلما مولوی سعید صاحب ایک مشہور رئیس صاحب علم وصل گذرے بن جن کا مام تعی میشه علی دنیا مین وقعت کے ساتھ بیا حاسے گا، اخری دور مین مولا نا حکیم عبد الحمید صاحب، مولوی عید البا رمی صاحب مولوی **کما ل** صاحب علی بور<sup>ا</sup>ی مولنناعبد الحکیم صاحب صا و قیوری ب<u>گا</u>نهٔ روزگا و فخر علم و فن منص اس وقت عبی اس شهر مین متحد د مدارس عربیه قائم مین ، ملارس سگال بہارکے نذکرہ مین یہ تبایا جا جیکا ہے کہ محمد نجتیا رقطی سب سے میلاامیرہے جوان حدود کو فتح وسخر کرسکا اس کی فتو ہات کی سرحہ نگال کے قدیم تمہ نہا تک وسیع تمی تجنیا نے قدیم شهر ندیا کی مگه رنگ پور نامی شهراً باد کیا، اور و بان متحد دمسجد، مدرس، اور فانقابين تميركرائين، خيائيه فرشة لكمتاب، · و در سرمدنبگاله درعوض شهر نو دیا شهرے موسوم به رنگ بور نباکر و و ۱ را للک

غه د ساخت ومسامدو خانقاه ومدارس دران مترو ولایت برسم اسلام برونق وروا

تام مزین و محل گردانید، ( فرشته ملدووم ) غیاث الدین صوبه دارنگال نے سندنشین ہوتے ہی ایک محدد اکمیرس اورايك كاروان سرالكفنوتي من نايا، تربیر عراق من ایک مقام ہے جس کا نام اب مکت در سباڑ ، یعنی مررسه شهور بے اس کے باقی ماندہ ورود بواربرا کے کتبہ ہے جب سے اس کی تعمر عمد بوسف شاہی کی معلوم ہوتی ہے ،اس کتبہ میں ایک مبجد کا بھی ذکرہے جب کے آماراب باکس نہیں ملتے ا ٹریات ہند کے بیان سے معلوم ہو ہاہے کہ میسجد مدرسہ کی عارت سے ملی تھی، سیم ہورسہ استیمی **بور** میں تھی تھاجس کے باتی ماندہ نشا نات کا مام اتبک رسٹریلہ ۔ گور میں ایک مربع عارت کے آبار ساگر ٹوگئی کے شمالی کنارہ پرموجو دہمین جس کے متعلق بیان کیا جا تا ہے کہ یہ مدرسہ تھا ، قیاس غالب یہ ہے کہ اس مدرسہ کا بانی حیین ٹٹا ہو گا،عارت کے موجودہ آنار تباتے ہین کہ یہ مدرسہ نہایت خوبعبورت غطیم اشان اقد وسیع موگا، جا بجاستگ مرمراورسنگ سرخ کے نشانات ملتے ہیں جس سے اُمی طرح واضح ہوتا ہے کہ بی<sup>ع</sup>ارت گور کی دو سری قدیم عار تون کی برنسبت زیادہ با ثنا <sup>ن شکت</sup> اورعده موگی ، خورشرجهان مام کے مصنف المی کی شمینی کے بیان سے گوروائزہ ٹسد ما گورشہید میں ریا<del>ض السلاماین</del> کے صنعت <del>غلام حین</del> کے مکان کے قریب بھی ایک مرسم

ك ، ك ، ش اذكاب ابوزندرا الولا،

پتہ میلتا ہے، اس مدرسہ کے باقی ماندہ عارت پرجو کتبہ ملاہے اس سے بانی کا نام میں شاہ ظاہر ہوتا ہے، کتبہ کی عبارت کا ترحمہ یہ ہے ،

مكه كے حكم سے كم رمضان الله عن بنايا كي ب،

گورکان دونون مرسون کا تذکره تر ندرا ناتھ لانے بنی کتاب ہندوستان کی علی ترقی مین کی ہندوستان کی علی ترقی مین کی ہے، حاشیہ پر رونشاصفی ۱۳ ور ۱۰ کا حوالد دیاہے، لیکن قرینہ سے معلوم ہوتا ہے کہ یا تو یہ داو مدرسے نہیں ہیں، دراصل ایک مدرسہ ہور ویکہ خورش برجہاں بہا کے مصنف نے اُس کا بتہ دو مرا دیاہے، اس سے دھو کا ہوا اور دو مختلف مرسس ہو لئے گئے۔

یا یہ کر پہلے مرسہ کے بانی کا نام میں البتہ یہ دو مدرسے ہوسکتے ہیں،

ڈھ**اکہ** 

ا میرالامرا**شا نُسته خان** ، عالمگیرکا امون اور عهدشا بجانی و عالمگیری کامما زامیر بو خنگف خصص ملک کانا ظ<sub>ا</sub>ر با تھا ، اور جان جمان گیا ، اس نے اپنی یا دگارین **ج**پواری تعین جس کی نسبت مصنف **ما ترا لا مرا لکھ**اہے کہ

اً تا رخیراز قبیل رباط و مسجد و حبر (که که عابقه و نسآن رفته) در جار دانگ مبندوشان از و سے بسیار یا و گار " صفحه ۵- عبلد و وم ،

اس نے بیان اب دریا ایک مرسرمع سجد نبوایا، بد مررسرگذشته صدی کے نصف ، قائم تھا کچھ و نون ویرا ن رہنے کے بعدا ب مرسہ کی عارت ایڈن ہ<sup>سپی</sup>ل می<sup>ن ا</sup>س ر لی گئی ہے ،اس وقت صرف کنا رِ دریا ایک گھاٹ اور مجد با تی ہے ہسجد برکتبہ تھا ہگین تشزد گی سے خراب موگیاہے، تاہم مب قدر حصة برها جا آہے، وہ يہ ہے، الحدابلُّيورب العٰلمدين والعا قبدّ للمستقين الما بعد*اً نكرجين اين مقام خِيدُ وْكا* خرخواه فقرا كميدوا برجست حق عل وعلاشاكسته فان اميرالامرا احداث نموده وقعت شركى كرده كه تام محصول اين بصرف تعميرو وفليفه خدمت مجد دستحتين ومتوكلين . . . . . . . حکام ذوی الاقتدار وا مرای نا مرارای امرخیستمر ومشقر دارند که درین و قف . . . نايد... . جق محروم فوا بدشد . . . . . كروه . . . . . متحقين . . . . . . . شدسال . . . . . " عکیم و دری **جبی** الرحمان ماحب ( و حاکه ) تحریر فرماتے ہین کہ نواح و حاکہ می<sup>سمہو</sup> بزرگ نتاه نورتی علیه الرحمة "نے اپنی کتاب کبریت احر" مین تحریر فرما یا ہے کہ وہ اپنی اتباد عرمین روزانہ" منع بازار"سے جرشہرسے تقریبا چارمیل دکھن کی طرف مشورگا وُن ہے ، اس مدرسه مین پڑھنے کے لئے اُتے تھے، یہ تقریباً مسئلات کا دا قعہ ہے، نیز حکیم صاحب کا بیان ہے کہ میرے پاس نتا وی خانیہ کا ایک ننخہ موجو دہے جب کوکسی طالب علمنے سام اله من اسي مدرسه من سيم نقل كما تها، شا نستہ خان کے ناکمل قلعہ سے کوئی ڈو فرلانگ بھم ایک عظیمانشان له جناب حکیم ماحب کامنون مون کرآب نے مارس و اکر کی نقل کتبات مبیکر

ا جوخان محدمیروه کی مبیرکه لاتی ہے، بیعارت دومنزلہے ، نیچے کے کرے علیہ کے لئے اللا تھ، او صحن سجد کے شالی جانب جارون طرف کھلے ہوئے وسیع اور ہوا وار کمرے مرسم کے نام سے ابتک موجو و و شہور ہیں ہے میں حسب ذیل کتبہ سقوش ہے، بهمدِشاه ابل مهت ودا د که دا دانقیا د نسرع ودین داد زے تناہے کہ باشدزیبا وزنگ نے اے کہ دہرش گٹتہ ہنقائے عباد الله قاضي كرد ارشا د دل صدق اشنائے حامی شرع كداز بهرعبادت فان محستيد كندسجد بصدق خويش بنيا د بفكرسال تارنخش چورنشم نداسے ہاتفی ازغیب دروا سركفراز نبائش رفت برباد بيلاه خطاعت خانداش تاريخايجا رونگ زیب عالمگیر کے بیٹے محد عظم کے نام پرڈھاکہ میں ایک محلہ عظم بورہ ایا ہے،اس محلہ کے میدان مین ایک و ٔومنزلہ مسجدہے،اس مسجد کے بالا ئی حصہ میتالی جانب چند نهایت ہوا دارا وروسیع کرے مرسہ کے نام سے اتبک زبان زدعام یا کتبہ سے ایسامفہوم ہوتا ہے کہ یہ مدرسة تصوت وعلوم باطن کی شش گا ہ تھا مکن ہے کہ بدكوعلوم باطن كى مكرعلوم فامرنے لے لى مود اوراسى دن سے اس كا مام مدرسمتهور ا ہوگی ہو، کتبہ کی عبارت منطوم بیہ، عارت حق نتناس نيفل لله ساختەسىد سے بوجە الحق عا بدان را وسسبلهٔ اوتق با د بهرصول عین تقیمین

متل قصر بهشت یرُ رونق ىكن ذاكران *صاحت* ق یے تاریخ آن عبارت گا در و لم ریخت ، معنی الیق اندمامن كبيت الله سنام معبد حامع لأهل لحق مرشدآیا د سیرالمتاخرین سے معلوم موتاہے کہ علی وروی فان مرشد آبادی جوعوم وفنون كاشيدا كى تفاراس في عظيم آبا دس متعدد علمار و نصلاكو مرشد آبا دا نے كى دعوت دى ا دران کے لئے گرا نقدر و طاکت مقرر کئے، جرعلما راس کی دعوت برعظیم آبا دسے مرسد گئے ان بن سے چند کے نام یہ بن ،میر محد علی جسین خان علی ابراہم خان اور **حاجی محد خان** وغیرہ ان لوگون مین اوّل لذکرا یک مبت بڑے کتب خانے مالک شهر جس مین دو نېرارمحلدات تعین، مرشداً با دین ایک مالی شان مرسه کٹرہ گزرسہ کے نام سے متہورہ جس کی ت ندار عارت اب تک ا نے گذشتہ عمی غطمت کو یا دولار ہی ہے ،اس مرسہ کا با حيفرخان تعا، نرندرا ناتھ لاکی کتا ب کے سفحہ ۱۱ اسے معلوم ہوتاہے کوئیکا ل کے ایک مقام سیلا پور نامی مین اطار ہوین صدی عیسوی کے اُخریک چند تعلیمی مقامات ماقی رسکنے تے ،جن کوہندوشان کے عهد ماضی کی علمی یا درگا رسمجنا چاہئے ان مدرسون میں ہمندواو<sup>ر</sup> ك كتاب نرندراً، ته لا،

مسلمان دونون عربی اور فاری علوم و فنون کی تعلیم کال کرتے تھے ،
گوموجودہ زمانہ میں مسلما فا ب بیکی آتعلیمی ختیت سے کو کی ہمیت نہیں رکھتے لیکن کا عہدماضی تعینًا اس حثیبت سے بہت شا ندار ہے ، ندکور کہ بالا مدارس حکومت وامرا سے حکومت کے وائم کیے ہوئے تھے ہمکین وہان کے عام اُنتحاص و زمنیدار بھی ا بنے صوبہ کی تعلیمی ترقی میں بہت کچھ دلحیبی اور صقہ لیتے تھے ، جنانچ اسٹوارٹ آئی تاریخ برگال میں تعلیمی ترقی میں بہت کچھ دلحیبی اور صقہ لیتے تھے ، جنانچ اسٹوارٹ آئی تاریخ برگال میں لکھنا ہے کہ میر حدوم کے ایک بڑے زمیندا را سعرا فشر فامی نے علوم وطلبہ و علماء کی خد

د وشعریه بین ،

دی که نهال قامتش حلوه گراز نظرگذشت د ل زشکیب با زماند جان ز قرار درگذشت رین به برای درگذشت

عَتْن بِهِ َا فَت آور دِ ہرگزازا ن خِرنو د میچ میرس سرگذشت برق ملازسرگذشت مالسا فرکو ق

ہندوستان کے جس گوشہ مین سل اون کا قدم پہنچا اور اسلامی حکومتین سا یہ گستر ہو

آ ریخ شا ہرہے کہ اس کا ذرہ ورہ علی ترقیون کے آب و تاب سے چک اٹھا اب کہ مین نے شالی ہند کے مدارس و مکا تب کے حالات لکھے جس سے شخص برواضح ہوگیا ہو

ین سے عمال ہمد سے مدار ک و مراہ جب سے حالات سے جب سے ہر من برواح ہوتیا ہو کہ مسلما نون نے اپنے عمد حکومت مین مبند و ستان کی تعلیمی ترقی کے لیے کیسی زبرد

ئر من و ک سے ہیں ہونی ہند کی طرف متوجہ ہوتا ہون اور و ہان کی تعلیمتی قیون روشتین کی ہین،اب میں حنو بی ہند کی طرف متوجہ ہوتا ہون اور و ہان کی تعلیمتی قیون

ك متعلق جو كي هي ماريخي معلو مات فراجم موسكه ان كومشي كرامون،

بلاله

یه مررسه ند صرف دکن کی عارات و آنا رقد میه مبکه مبند و ستان کی علمی تاریخ مین بهتم عظمت کے ساتھ یا دکیا گیا ہے، اس مررسہ کا بانی محمد شاہ بھمنی کا مشہور علم پر ور و زیر خواجہ جہان محمو د گا و ان ہے، مررسہ کی عارت اب مک قائم ہے اور سیاحان عالم کے لئے ائی عبرت ہے، گواس کے تعبض حصے منہ دم و شکستہ بن سکین اس کی شان ہے شوکت وسعت واسحکام کی بوری مہئیت آج بھی دیکھنے والے کو بیک نظر علوم موجا ہی، یہ مدرسہ فراز کو ہ بر قائم کیا گیا تھا عارت کا طول تمرقًا وغربًا (۵) اورع فن شالًا و خوبًا (۵)

گزہے، مدرسہ کے سامنے دوبلند منیا رہتے جن میں سے ایک منیا رابھی مک موجو د ہے اسکی ببندی سوفٹ کی ہے مبحن مدرسہین سجد تھی، اور ہر حیار طرف مسلسل وسیع حجرے طلبہ علما ، کی اقامت کے لئے بنے ہوئے تھے جوطلبہ مدرسے مین رہتے تھے اُن کے مصار<sup>ی</sup> قیام وطعام وقعت سے ویے جاتے تھے، مرسہ کے لئے دورسے نلون کے ذریعہ سے آب ْرِیا نی کاسا مان کیا گیا تھا، انفرض تام ہندوستان بین اس سے زیا د عظیم انشان اوروسع سلسائه عارت درسگاه کے لئے کہی اور کسی دور مین نمین نبا ، محودگا وان کے علی ذوق کا اندازہ اس سے ہوسکتا ہے کہ اس کی وفات کے بعداس کے مکان سے بروایت حدیقۃ الآقالیم مصنفہ میرتقی حن ٹیٹییس ہزار کیا بین علوم وفنون کی تکلین مدرسه بدرگی *ناریخ بن*ااس عُهدکے ایک شاعرسامعی نے آیت <sup>تب</sup>ا تقتبل مناسے كالى اوراس كواس طرح ايك رباعي مين جگه دى سے، يون كعيه شده است قبلُه الصفا این مدرسهٔ رفع قمو دسن ازأيت رينا تقتيل منأ أتارقول بن كهشد تاريخش احدثناه تهمنی نے اپنے بیرسید محدد کیبید دراز کے لیے کلبرکہ کے مضافات من کسی مقام را ایک مرسه قائم کیا صحح طور مرمقام کی تعیین نهین ملی نرندرا ناته لانے اپنی ک مین اس مدرسه کا تذکره کیا ہے اورسنه نباط<sup>سام</sup>اناء نکھاہے ،چے نکوا حدثتا ہمتنی سرفدگور رحمة النَّد عليه كا مريد تما اس ليے روايت كاصحح و درست مونامكن ہے گريد صرورہ كة

مدرسه فانقامی مرسون کے انداز بر موگا،

گولکنده

مصنف آنا رخیر بحواله تا این به بهنشم العلما بهولوی و کاالتد لکه تا ہے کہ ابرائیم مطنب ہ

والی گولکنڈہ نے اپنے دارالخلافت مین کئی مرسے تعمیر کرائے تھے،

جمار میرادی

محدقلی قطب شاہ گولکنڈہ نے خاص حیدرآبا دمین متعدومدرسے قائم کئے تاریخ

عزیزوکن سے معلوم ہوتا ہے کہ جپار مینا رکا سال نبا شقط ہے ،اس بین ایک بہت

بڑا مدرسہ تھا ، تھیوی نامل سیاح نے اپنے سفر نامہ میں اس کے حالات لکھے ہیں 'اور سرب

اس کی بڑی تعربیت کی ہے،

تعطب شآه علوم و فنون کامر بی اوراشاعتِ تعلیم کامبت بڑا عامی تھا . تا ریون

سے معلوم ہو تاہے کہ اُس نے اپنے حدو دِملکت مین مُثَرِت مدارس قائم کیے ، ایک سے معدوم نیو تاہے کہ اُس نے سے میں گائیں ہے ۔ سامہ مدور نے اُس کا سے نہر سے میں گائیں ہے ۔

يورمېن مصنف شائرل اېنى كتاب مين لكتاب كه

اس نے جو بی ہند میں ابتدائی مدارس کیٹرت قائم کئے، لڑکے ان مدارس مین "بنچ ن بر بیٹے ہیں، اور نزکل سے مینی کا غذیر کھتے ہیں، جو مبت کیلئے گر صفائی مین

پورېن کا عذ*ے کم رتبہ ہوتے ہی*ں ،''

مدارس تيامي

----محمود شاه جوماندان بمنيه كامشهور ومعروت فرما نرواگذراب،س نے اپنے قدمِ

ملکت مین بتا می کے لیے بکثرت مدرسے قائم کئے تعلیم کے لیے مشہور مدرسین کوجمع کیا، تام اخراجات تعلیم شاہی خزانے سے ملتے تھے ، یہ بہت بڑا شایق علوم اور عالم دوت با دنتا ه گذرای، وه خود نفی برا لائق و فاضل اورفلسفه وحکمت مین ما سرتها ،اسی نبایر رمایا نے اُس کو ارسطو کا نقب دیا تھا جھوٹے مقابات کو جھوٹرکراس کی ملکت کے راہے مقامات جمان مرارس بيامي قائم تقيير بن، گلېرگه، بدر، قند بار، الچه پور، دولت آباد، چا وُل، وابل، جنير، اس كى نىبت فرشة لكمتاب، وجهت محدثان اخبار حضرت نبوى صلحم ورشهر بإس كلان وظاكف مقرركر وفهور تغطيماتينان ميكوشيد ونابنيايان لامتناسره داوه تفقدعال ابنيتان مي كرد،" تاریخ دکن سے معلوم موتاہے کہ محدما دل شاہ کے زمانہ میں آنا رشر لیف اورجامع ہیجا بورمین دو دو مدرسے ع<sup>ا</sup> بی ایک فارسی اورکئی مکتب تعلیم قرآن کے لئے جاری تھے<sup>،</sup> یمان غریب طلبه کوکھا نا اورحبیب خرج کے لئے امہوار فی کس ایک ایک ہون متما تھا ، اختتام سال پر ذی الجم کے مہینہ میں امتحان ہو ہاتھا،امتحان کے بعد انعامات تقییم ہوتے ته، اورفارغ تقصيل طلبه كوحسب فالبيت واستعداد سركاري نوكريان ملتي تعين، ان کے علاوہ تمام مالک محروسہ کی بڑی معجدون مین مدرسے قائم تھے جن میں ا کے اخراجات کی کفالت حکومت کی طرف سے کیجاتی تھی، رآ آر دیر)

احذنكر

بر آن نظام شاہ نے سیمی مذہب قبول کیا،اور ترویج شیعیت کے لئے خملت طریقے اختیار کیے منجلدان کے ایک مررسہ اثنا عشری کا قیام تھی ہے، جس کی عارت

اس نے خاص قلعۂ احد نگر کے مقابل منبوائی تھی ،اس کے قربیب ایک ننگر خانہ بنام لنگر

و واز وه امام قائم کیا ۱۰ وراس مدرسه ولنگرخا نه کے مصارف کے یعے متعدد کا وُن جونپور

سنور، اسیا بوروغیره وقت کئے،

مصنف آبار خیر کابیات ہو کہ نظام شاہ نے احد گرین ایک اور مدرسہ بغدا دنامی قائم کیا '' مراجی کھی

دریا سے ابتی کے ساحل پراکیب مدرسہ واقع تھا، سلاطین فاندیس مین سے کوئی

سلطان اس مدرسہ کا بانی ہو اہے، نام کی تصریح نہیں مل کی اوٹریٹیل انویل کے مصنصت نے سناشلۂ میں اس مدرسہ کے آٹا رکو دیکھا تھا اوراس کا تذکرہ ہیت نتیا ندارا نفاظ مین کیا ہج'

## دولت آیا د

اس مدرسه کے مدرسین تھے ،

له مصنف نے بهاں ساتھ ساتھ اس سجد کا بھی ذکر کیا ہوج نا ہسبین نظام شاہ کے عمد میں عارت بغداد کے قاضی بگ طرانی نے زیراہما م تیار موئی، عاشیہ پرحوالہ فرشتہ کا دیا ہوئے شبد فرشتہ میں بغدا دنا می عارت واقد ملعہ احد مرکز کا ذکر کیا ہم بمکن مجھے ہوں کی تفریح ممیں کی کہ اس میں مدرسہ نبی تھا،

#### مدرسكم مدراك

نواب والاجاہ (مدراس) نے مولانا بجرانعلوم کی شہرت سُن کران کو اپنے ہاں بو ایا، علم مرِستی کا جذبہ دیکیئے کرحب مولانا م<del>رراس کے قریب بینچے تو نواب نے اپنے ارکا نظاما</del> اعیان دولت اوروزراء وامراء کو استقبال کے لئے بیجا، مولانا حب دربار میں بہوئیچے تو خوتخت سے امریڑا اورمولانا کواس برحگہدی،

رس والاجا ہ نے خل شاہی سے متصل ایک بہت بڑا مدرسہ قائم کرکے مولا ناکو صدر مقرر کیا جس بین مدت کک مولا نامشنو آنعلیم و تدریس رہے ، شالی ہند مولا ناکو بجرالعلوم کے لقب سے جانتا ہے مگر حنو بی ہند بالحضوص علاقہ مدراس صرف اس لقب بہجا تا ہے جو والاجا ہ نے دیا تھا بینی فک العلمار ،

#### مدارس مالوه

نوین صدی کے آغاز مین ولاور خان نامی ایک امیرنے مالوہ مین ایک متقل سلطنت قائم کی ، تا دی آبا و منڈ وکو اس نے ابنا دارالحکومت قرار دیا ، سلاطین باتوہ کی علم پروری کے زیرسایہ یہ شہرعلم کا مرکز بن گیا ، اس کی خاک سے متحد داساطین علم اسٹے ، فاقانی کا مشہور ثنا رح محمد دا کو وقتی تنا دی آبا دی اس کی خاک سے پیدا موا ، اس سلسلہ کے دوسرے فرما نرواسلطان ہو تنگ کی وفات کے تذکرہ مین جوسے ہم میں واقع ہوئی کہ فرشتہ لکھتا ہے ،

نتن سلطان بوشنگ را برداختهٔ متوج مرسهٔ شادی آبا د مند و شدند.

وآنجابخاک سپردند،

ہوشنگ کے بعد محد شاہ تقریبا ایک سال عکومت کرکے مرکبا،اس کے بعد سلطا

محد دخجی سندا را ہوائی فرما نر وا بہترین مد ہر و ناظم حکومت ہونے کے علا وہ علوم و فنون کا
شائق، تعلیم کا دلدادہ، علما، و فضلار کا پرستا را اور طلبا سے علوم کا علیا روما و کی تھا، یہ قسمت میں سر برآ را سے حکومیت ہوا، اس نے اپنے حد و دِحکومت میں بگرت مرارس و مکاتب
میں سر برآ را سے حکومیت ہوا، اس نے اپنے حد و دِحکومت میں بگرت مرارس و مکاتب
قائم کئے، علما، و فضلاء کو دھو نڈھ و حو نڈھ کرجم کیا، اوران کی ہر طرح ہمت افزائی کی،
جس سے اس ملک میں علم و فن کی ہرگرم با زاری ہوئی کہ ملک آلوہ یو نان تانی کہلائے
مصنف آئر رحمی ملکت ہیں علم و فن

چون سلطنت با و قرارگرفت در تربیت علما و نصلا کوشید و مدارس ساختد زر باطراف و
اکنا ف عالم فرستاد دسنعدالی طلب اشت و بالحبد بلا د مالوه در زمان ادلیز مان تانی گشت
(صفیه ۱۷ احبدا فرکمخود طحی)
فرشته کی عبارت یه ہے،

وچون سلطنت با و قرارگرفت بمت برتربیت علمارو ففلار گی شد بهرجا از اربا کمال که طاح از اربا کمال که در سرم با ماخته علما و ففلا و که دا می شنید زر فرستا ده اورا طلب می نمود ، در و لایت خود مدرسه با ساخته علما و نفضلا و طلاب را فطیفها مقرد کرده با فا ده و استفاده شنول گردانید ، و بالجمله بلا و الوه من جمیع افتح درایام ولایت او محسو د شیراز و سمر قند بود ،

شا دی آبا دمندوکے کھنڈر آج بھی زبان حال سے اپنے عمد ماضی کے قصتے ،

سار ہے مین،

سلطا <del>ن محو د نے حب سلام</del>یمہ می<del>ن جو</del>ر کی طرف نشکر آرائی کی ہے تو ان اطراف مین بکترت مدارس ومساحبہ قائم کئے ہین ، <del>ما تررح</del>می مین لکھا ہے ،

وبجا نب جور منضت نمودند و از أب بهم عبور نموده تبخانها كأل ايت راخراب

نو ده مساحدو مرارس ساخت (حلداصفی ۱۳۲)

اسی سند مین اس بهم سے واپس اگر خاص با گئاہ دولت مآلوہ ، شادی اُبا درمنڈ ) مین سلطان ممو د نے جامع مسجد ہوشنگ شاہی کے مقابل ایک مبت عظیم الشاك مدرسه کی مُنِت یا دڑالی بصنعت مانزر حمی ان الفاظ مین تذکرہ کرتا ہے ،

"وسلطان محود نشادي كا وأمد در ذي الحجرسال مُركور مرسه ومناره ، مُفت منظر

در محاذی مجد جامع بوت نگشا ہی طرح نمود" (صفحہ ۱۳۳)

سارنگ پور

محمود فلجی کا نوایا ہوا ایک مدرسہ سارنگ بورمین بھی تھا،اس کی تنگستہ عاریکے اُناراب کک باقی ہین، کتبہ بھی تھا،جس کا تبھر ٹوٹ گیا،ا ور نیچ کی عبارت تلف ہوا جس قدر یا تی ہے وہ یہ ہے،

بناء هذا المد دسترفی عهد اسلطان الاعظم عین الدنیا والدین عمون تا الله خدارالله داری وسلطنته فی ملک ملاد بنان التانی الفترین من شهر میم الاول سنت میم و میرفتمان ماته اسی عمد ذیلی کے بیٹے سلطان غیات الدین کوعور تون کی تعلیم سے بڑی دلیسی تھی، اس نے دربارعام کی طرح اپنے محلسائین تھی، یک نتاہی دربار قائم کیا تھا ہیں میں عورتین ان تمام مناصبے فرائض انجام دیتی تھیں جومروا نجام دیتے ہیں، جیسے امیرالامرائی، وزارت وکا لت، مرجامہ داری، ورخزانہ داری وغیرہ لیکن ان چیزون کو حمیور کرخاص طور پر قابل تذکرہ چیزین یہ بین جن کا بیان فرشتہ ان انفاظ مین کرتا ہے،

و پخین کنیزان راصاعت و مهز و که در جهان نتائع و متعارف است بیا موخت، خانجی بعضی دارتاصی و خوانندگی و سازنده و مز ارگی تعلیم فرمود و بعضی را زرگری و آمهنگری فخوان و تیرگری دکمان گری و کوزه گری و جامه با فی و خیاطی و ترکش دوزی و کفش دوزی و نجام

وکشی گری و شعبده بازی دا قسام هنر از دگرائرج آن موحب تطویل است یا د داد " اسی طرح اس نے عور تون کی ایک فوج بھی مرتب کی اوران کوفن سیمگری کی صرو

تعلیم دی <del>فرشته لکم</del>تاہے ،که

بانصدکنیز ترک رابس مروان برشانیده تیراندازی و نیزه داری بیا موخت وایشال سپاه ترک مامیده در مینه خود وای با متند سپاه ترک مامیده در مینه خود وای داد تا نیز اور دست گرفته ترکش برمیان بسته بایستند و بانصد کنیز عبشی را از بس زنان برآ ورده تفک اندازی و شمشیر بازی تعلیم کروه میسره بایشان حوالد نمود ، "

غرض اس طرح عور تون کی تعلیم و تربیت کے لئے اس نے اسنے سامان مہم بہنوا کے اس اتنی عور میں جمع کین ایک اچھا خاصہ عور تو ن کا شہر ہی آبا د ہوگیا، اس کے محلسار مین مہت عور تمین حافظاتِ قرآن تحین بعض کتا ہون مین ان کی تعدا دشترہے مبکن فرشتہ ایکم ار لکھتا ہجا میکن یہ جو کچے تھا اس کا محرک نسانیت کی شریک کارمنسِ بطیعت کی تعلیم و تربیکا خیال تھا، کیونکہ وہ تنجمتا تھا کہ اگر پیطبقہ جاہل اور مطال رکھا جائے تو انسانی ترقی کسی طرح تکمیل کوئین پہنچ سکتی ورنہ سلطان اپنی سیرت واخلاق کے لحاظ سے ایک شبز ندہ دا زا ہذختک اور خدا ترس با دشاہ تھا، فرشتہ لکھتاہے،

چون یک پاس از شب اندے کر بربندگی جمان آفرین بسته اولے دواز درگاه احدیث برو اختے وجین عِرْ وانکسار برزین نیاز سوره مطالب و آرب خوداز درگاه احدیث برو داختے وجین عِرْ وانکسار برزین نیاز سوره مطالب و آرب خوداز درگاه احدیث در بوره برای کرده باشد در بوره کرجبت ناز تبجدا و را بیداری کرده باشد و عندالاحتیاج آب برروے اولی پاشیده باشندواگر درخواب گراں با شد بزور بحنباند، واگر بان بم بریار نشو در تقش گرفته برخیز اندو نیز باز دیکان فرموده بود که دروقت عشرت مشخولی بختان و نیا برهی که ایم کفن برونهاده بود ند نیا شری که دروقت عشرت گرفته از مجلس بری خواست، و تبحد بیدوخو کرده باستخفار و تو به و انابت می پرواخت و در مجلس اوا صلانا مشروع و انجه نم آورد نی گفتند و مبکرات برگز رغبت نمی نوو، می در مجلس اوا صلانا مشروع و انجه نمی آورد نی گفتند و مبکرات برگز رغبت نمی نوو،

غور کرواس طرز زندگی کا انسان کس درجه زا هرمزاج اور خدا ترس موگا آج ان اخلاق کامجوعه انسان با دشا مون مین توکیا گداؤن مین هجی نېرار دو منرارمین ایک تص مه ماک سرد.

ابى ل سكتاب،

ظفرآباد

سلطان غیات الدین طبی نے ایک مرسن طفر آبا دنیلی مین تعمیر کرایا تھا، جرسلطان محود تانی کے عمد حکومت تک قائم تھا، دَا تَارِخِير)

صو<del>بہ الو</del>ہ کی اسلامی تعلیمی یا دگارون مین <mark>ہین</mark> کا مدرسہ بھی قابلِ ذکرہے ،جس کے با نی کی تصریح نہین مل سکی ،اس مدرسہ کی تنکستہ عارت گذشتہ صدی تک باقی تمی مجسف تزک افغانی اس کی نسبت لکھتاہے کہ

مین ایک مرسه عالیتان با دشاہی تھا،اس کے جمرات جواب مک باتی ہیں،ان راتم نے جرات جواب مک باتی ہیں،ان راتم نے بیل اور مرسہ سے ملتی مبدین گھاس بھری ہوئی بائی از آمار خیر) راتم ملتی ملتی ملتی ہے۔

مدارس مثبان واجه مرسه فیروزی

آجِین اس نام کا ایک مرسہ تھا، بیر معلوم نمین کہ اس کا بانی کون تھا اور یہ کتا کی ہوا تا معلوم ہے کہ نا صوالدین قباچ کے عمد مین تعنی صدی مین بیر مرسہ موجود تھا ہجنا مصنف طبقات ناصری لکھتا ہے کہ اس مرسہ کا انتظام و انصرام نا صرالدین نے سرالیہ مصنف طبقات ناصری لکھتا ہے کہ اس مرسہ کا انتظام و انصرام نا صرالدین نے سرالیہ میں میرے سپردکیا، اس کے انفاظ بیر ہین ،

عی درین سال ربعنی اربع وعشرین وستانه) درماه ذی الجبر مدرسه فیروزی اجهره الداین دا شده رصفی ۱۲ مطبوعه ایشیا کک سوسائش کلکته)

ك مثلاه كي ايت ب،

اسى نا <del>مرالدین</del> قباچه نے جا یک طویل مت تک قط<del>ب الدین ایب کی طرف</del> سے ملکت مثبان و اچر کا والی رہا، اپنے ایام کومت مین حب مولنا قطب لدین کا ثنانی وار دِ مثبان ہوے تو ایک مرسہ قائم کیا جس مین مرتون نک مولانا مشغولِ تعلیم و تدریس رہے نوشتہ لکھتا ہے،

"جون مولانا تطب لدین کاشانی از اورار انتر کلبتان رسیده شاه ناحرالدین قباح الله مسلم ملتان سراب با مدرسه براے او بنا تنو و او مولانا که علائم روزگار بود ند با مداو دراں مرسم نازگر ارده بدر سی گفتن به بر داخت " و فرشته ذکر شیخ بها را لدین زکر یا ملتانی )
سلاطین متران مین سیح سین شاه که کاعلوم و فنون کا بهت برا امر بی گذرا می شین می ساطین می از افر بی گذرا می دولات و در دگار تھا جمیشه مالی اعانت اور مناصب و دلات سے آن کی بهت افز ائی و قدر کیا کرتا تھا جس کے باعث اس کے حدو و حکومت بین نصال دوار باب علم و فن کی بڑی گئرت و جمعیت ہوگئی تھی اور ملمان علی حقیقیت سے بی کرد و مبین کی حکومت و مین کرد و مبین کی حکومت مین مین از و مشهورا سا مذه و قدت مشغول ورس تولیم رہتے تھے ،

یه وا قعد فاص طور پر قابلِ نذکره ہے کدائی نے اپنا ایک متمد فاص گرات اس کے اس کے اپنا ایک متمد فاص گرات اس کے اس متحد نے یہ اصلاع وی کہ شاہ میں بااین بمہد دولت گرات میں عارتین منین بنواسکتا تواس اطلاع وی کہ شاہ میں بااین بمہد دولت گرات میں عارتین منین بنواسکتا تواس اور شاہ بہت رخیدہ ہوا بمین وزیر سلطنت نے یہ کمہ کرتستی دی کداگر گھرات کواپنی عارتون بادشاہ بہت رخیدہ ہوا بمین وزیر سلطنت نے یہ کمہ کرتستی دی کداگر گھرات کواپنی عارتون

نازىپ تولىمان كواپ على وفن يرفخزې، فرشته لكمتا ہے، زل چوں قامنی از گجرات بلتمان آمدہ بعدازا د اے رسالت خواست کرشمہازخو سائے منا شا بإن گجرات معروض داردنس گفت كد زبان دربیان توصیف آن عادات دارس. لیکن گستاخی نموده بعرض می رسانم که اگر خصول میساله تام ملکت متمان تنعیرش قصر ب ازال قصورخرج شودمعلوم سيت كرباتام رسد سلطان ازشنيدن اين سخن مغوم ومحزو ا محشت عادالملك تولك كشغل وزارت باوتفويفي بود قدم حرات يبشي نها ومعرومن واشت که بقاے ملک ما تیامت مقرون با درسب حزن معلوم نمیت، گفت باعث حزن این است که نفطشا چی برین اطلاق نمو ده اندواز مدنی شا چی محروم، و با وجود آس حشرمن روز قیامت به بادنها باس فرا بدلود ، عاد الملک تو لک گفت ، خاطر شاه ازیس رمگذر کمدر ولمول نبانندزیرا کوش سجانه تعالی مرمکتے دانفینیتے محصوص ساختر که آن درملکت د گرعزیز ومحرم است ،ملکت گجرات و دکن والوه ونبگالهاگرحیذرخیزاست و اسباب تنعم<sup>ان</sup>جا بروجه احن مثيو د واما ملكت ملمّان مردم خيراست جې زرگان ملّان سرحاكه رنشندمغرز د مخرم والحدنند والمنهكها زطبقه ملية شنيح الاسلام شيخ مها ؤالدين زكريا قدس التدميره حيدكس درملتان حأم اندواز طبقة على شل مولك فتح الترشأ كرومولك عزيزا فتداز خاك ياك متمان محلوق شده اندكم الزمبندوستان بوجوداي عزيزان أقنى ركنيه (عليدووم وكرسلطان حسين لنكا)

سلطان سکندر جن کاسال و فات مواث ہے کتمیر کا وہ علم پر ورباد نتا ا گذرا ہو جسکے

ما نەيىن *ئاڭىتىمىيلى ش*ان دىشكوە بىن <del>ءاق</del> وخ<del>راسا</del>ن كاممسىرىن گىياتھا، با دىشا ەكىملىقى ردا وفیاضی نے اطرات واکنا نِ عالم کےعلمار کو اپنی طرن متوجہ کر لیا تھا جس کا لازمی نتیجہ ر کی تعلیمی و کمی ترقی تھا،افسوں ہے کہ کو ئی مفتل ایریخ بیش نظر نہیں جس سے تعقیلا عُل کیجا کمین،البته فرشته نے اجا لا یا لکھا ہے اور شہا دت کے لئے اتنا بھی کا فی ہے ، وسلطان سكندر بمرتئة سخاوت داشت كداز شنيدن آوازه آن دانتمندان ءات وخراسان وماكوارالنسرعلا زمتش آمدند وعلم ففنل واسلام درملكت كشميررواج تام بيداكر ده نونهٔ عراق وخراسان گرديد، شاه از جله علما ، سیدمحد نام عالمے را که سراً مدر وزگارلو دنسیا رتعظیم می نمود و آواب بن از دے می آموخت ؛ رصفحه ابه ۱۲ جلد د وم ذکرسکندر) سلطان زین العابدین دوسلائمهٔ مین تخت نشین حکومت موا اس نے اپنے حن مساعی حمیلہ سے سارے فاک کو ہرطرح کی دولت ترقی سے الامال کر دیا ہشمہ من حکو<sup>مت</sup> کی طرف سے تاریخ فریسی کا ایک محکمہ قائم تھا ، خیانچر سلطان زین انعابدین کے زما نہین بند ومصنف کے قلم سے کشمیر کی مفسل اریخ راج ترنگنی ہی محکمہ کے زیرا ہمام مرتب موئى،سلطان زين العابرين ف ايك محكمة راجم كاعبى قائم كيا تعا، خِنانجة أنين اكبرى مین لکھاہے، کہ مبر . وفراو ان ما سلطان دزین العابرین) دانش منش وخرویژوه بود. را اذع ني وكشميري ومندى ترجيه كردة وصفحه ٥ م اجلددوم)

گو مدارس کی نسبت کی تفصیلی معلو مات نهین مل سکے ، تاہم یا کیو نکر بوسکتا ہے کا سیا عالی دہاغ با دشاہ اشاعتِ تعلیم بیسی ضروری شنے کو نظرانداز کر گیا ہو اور اس کے لیے ال کوئی کوشش نه کی ہو، ا حین حک شاہشیر نے دیا ہم، و مین ایک بہت بڑا مرسہ فائم کیا اور بڑے بڑے علما، ونصّلار کو جمع کرکے اشاعت علوم وفنون کی بڑی کوشش کی، میعلم برور با دشاہ اپنا زیا وقت علما، وسلحاء کی خدمت مین گذار ناتھا،جو مدرسه اس نے قائم کیا اس کے مصا رہنا ور علمار کی اعانت کے لئے ایک برگنه زین پورنامی متعین کردیا، فرشته لکھتا ہے، وحسين چک مدرسه نبانمو ده باعلمار وصلی آنجاصحبت می دانشت ورگنه زین پوردا نجاگیر ای طائفه مقرر کرو'' (علد دوم ذکرهین تیاه کشمیر) اکبری عمد مِکومت مین شهنشا ه اکبری طرف سے <del>سین</del> خان والی کشمیر مقرر مواجهین خا علوم وفندن كامرنى وسربريت تما ،أس نے وہان متعدد مدرسے قائم كئے ،اچھے استھے اسا تذهٔ فن کوچع کیا اورعلماء اورطلبه کے لیے ایک پر گنداسیا توروقف کیا، (مَا تُرجیمی) اسلامى عد حِكومت بن گرات كى على تعليى ترقيان مى مخصوص حيتيت ركهتى بن ، ہان مرارس اور تعلیم گاہین مکٹرت تھیں اور اس کی خاص وجہ یہ تھی کہ ہیا ن کے فرانرو<sup>ا</sup> كثرظم د وست وعلم پرورگذرك، سلاطین گرات مین سلطان محمود سیگیره سے بڑاکوئی دوسرا با دشاہ نہیں گذرا،

الاث شر<u>ے کافی</u> گئے اس نے حکومت کی،اس کا دربارعلیا و فضلا سے بھرا رہنا تھا، بڑی بڑی عارتین اس کے عہد میں تعمیر ہو مین منجلہ اگن کے مدارس بھی تھے تاریخ <del>مرأت</del> <del>احدی</del> کامصنف لکھتا ہی کہ اس با دشا ہ نے مسافرون کے ارام کے لیے سرائمن ط<sup>ا</sup> ببعال کے لئے مدرسے اور سلمانون کے لئے مسجدین تعمیر کرائین، مدرسهبيت فان مراً ة احرى كامصنّف الكتماسي كومحرصفي صوبه و ارگ<u>رات نے ح</u>س كالقـ<del>سيمي</del>نظ تھا احرآباً دمین قلعُہ ارک کے بھا لک کے سامنے ایک غلیموانشان وخوش منظرمرس تقميركرا يأ مررسه كانام مرسته العلمارتها ، سال تعميرات بيراس شعرب كلتا ب، سال إتام زمعار قصاحتم وگفت مسجد و مدرسه و دارشفا سے اً با د مدرست بج الاسلام قاضى اكرم الدين خان المخاطب برشيخ الاسلام أنه ايني ذاتى مصارف س احداً بآومین ایک بهت عالیشان مدرسه بنو ژیا جس کی تعمیر مین ایک لا که ۲۸ مرار ا روي عرف بوے تھے، تعمير كا أغا زست الماتھ اورائجام سلالے مين ہوا ہتھ ل و كانون ك علاوه و وكا وك مي وقف تفي اس مدرسه ك مشهورمدرس مولانا تورالدين ظراتی <u>تھے</u>، له مرأة محدى،

#### مدرسهمسرختر

سرختر من جهان شخ احد که که کا مزار ب، ایک کبت برا مدرسه تها، فرار کی عاری محد شاه نے تعمیر کی تین ، اور غالبًا مدرسه کی عارت هی، محمود شاه و منطفر شآه کے حمد حکومت مین فقیہ حن العرب الدا بھولی اس مدرسہ کے اسا تذہ مین بہت ممتاز درج رکھتے تھے،

# مدرسة جيهالترين

احمداً با دمین علامہ وجیہ الدین کا مررسٹرسسے زیا دہ شہورہے،اس مررسہ میں طلبہ کو وظا کف بھی ملت ملے الدین کا مررسٹرسسے زیا دہ شہورہے،اس مررسہ میں طلبہ کو وظا کف بھی ملتے تھے، تقریبا ، ان کے بعدائن کے فرز ندرشید مولئنا عبداللّٰہ جانتین ہوئے میں بیون پونے فرز ندرشید مولئنا عبداللّٰہ جانتین ہوئے ما وق خان نام ایک امیرنے مررسہ کی عارت از سرِنوتعمیر کی جس میں طلبہ کے مہنے کے واسطے مکانات نبوائے اور وظا گف کامعقول انتظام کیا،

### مدرستهنرواله

شیخ حیام الدین ملی نی کے مزار کے مقص منروا آدمین ایک مرتشه تھا جس بین مولئنا تاج الدین اوراُن کے فرز ندرشید محد بن تاج درس دیتے تھے، ان بزرگون کا شاراس زما نہ کے مشہور اسا تذہ بین تھا ،

# مدرسة بالاثب وخان

ننروالهمین فان سرورنام ایک نالاب بهت می فوش منظرسیرگاه تها،اس کے

له يا د آيام كه اينًا سه اينًا ،

ِ دومبتِّ عالیشا ن عارتین تحقیقتمین ایک مرشه بھی تھا، میں علوم نہین اس کا بانی کو ن تھا اورکس سنہ میں اس کی نبا ہوئی ،اس مررسہ کے اساتذہ میں ایک نام موللن<del>ا قاسم</del> میں محر کجراتی کا متاہے جو قطب لدین احد شا ہے زمانہ میں تھے ، <del>سابرندی</del> کے کنا ہے ایک گا ُون تھاجن کو اس کے با نی شیخے عثمان متو تی نے اپنے نام براً با دکیا تھا، شیخ عثما ن نے وہان ایک مدرسہ بھی قائم کیا ، <del>محدثتا</del> ہ گجرا تی کو شخے سے بڑی عقیدت تھی ، شنج نے مدرسہ کے لئے اس عقیدت سے مختلف فوا کد ماں کئے جن مین سے یہ قابلِ ذکرہے کہ طلبہ کی تعلیم کے لئے شاہی کتبیٰ نہ کی تا م کتا ہے اعاصل کرکے وقت کر دین ، مدارشت رث سید <del>حم</del>رن عبدا ننرانعیدروس کے مزارکے پاس حاجی <del>زا ہر</del> بگنے بڑا ن<sup>ہ</sup> تو<sup>سیت</sup> . شخ <u>جعفرصا</u> د ق ساسمنسه مین ایک<sup>تی</sup> مدرسهٔ تعمیر کمیاحس مین زما نهٔ درا زیک علوم وفو کی تعلیم ہوتی رہی ، <del>سورت</del> مین <del>مرعان</del> شامی کی مسجد سمیشه مدرسه کا کام دیتی رمی، نواب ِ طفر پایب خان نے اپنے زمانہ میں مرسمہ کے واسطے ایک خاص عارت تیار کی حس کی کمبراہا جی یان نواب مروح کے پوتے کے وقت میں ہو گی،

له يا دايام، ك ايضًا، تله حقيقة السورة، كله ايضًا،

عالمگیرنے اپنے ممد حکومت میں ہندوستان کی ترتی کے لئے طرح طرح کی کرشن لین ہٹرلین اپنی تاریخ مغل امیا ٹرمن لکھتے ہیں کہ ر اور گزیب نے زراعت کو بجد ترتی دی اورانیے صدو دِعکومت میں بنیار مارس کو تیام ' اریخ مرات احری سے میں معلوم ہوتا ہے کہ دیوان صوبہ گرات م<del>رمت</del> فان نام عالمگیرنے ایک فرمان تھیجا جس میں حکم دیا گیا تھا کہ ملکت محروسہ کے تام علاقون مین مررس مقرر کئے جائیں ، طالب علمون کو <del>میزان</del> سے لیکرکشا ن مکتعلیم دیجا کئے وران کوسرکاری خزانه سے حسب راے صدرصوبہ وتصدیق ہر مدرس وظالف دیے جائین، خیانچه مین مررک ایک <del>آحد آبا</del> د، د وسر*ے سورت ، اور قبیرے می<sup>ن</sup> مین مقر*ر کئے گئے ،سی کتا ب سے ثابت ہو تاہے ، کوٹ نام مین قلع<del>ہ عبد ر</del> داحداً یا د ) کے مرتث وردارانشفا کی مرمت کے لئے رویم اواکیا گیا، عالمَكَ ِ تعلیم عام کا ہے صد شاکق تھا، چنانچے اس نے ہرطرف مرارس قائم کرنے کے علا ا ن جما ن حکمین وعلما تھے اُن کے لئے کمٹرت مرومواش کی رقمین بطور وظائف لىمى مقركين جانج مصنف أثر عالمكرى لكمتاب، ودرجيع بلا دوقصبات ابين كشوروسيع فعنلا ومدرسان رابوظائف لائقدازروز انه وامل موطف ساخة رائے طلبه علوم وجو ومعیشت درخورهالت واستعدا دمقرر فرموده لووند (م. اسی عالمگیرنے گجرات کے بوہرون کی تعلیم کے لیے وہا ن تعلیم کو لازمی جبری قرار دیا له اس سے مرادستی بوسرے بین ،

ں کے لئے بہترین اساتذہ مقرر کئے ، اموا رامتحا نات کا طریقہ ایجا دکیا جس کے تتا بج کی اطلاع اس کوبرا بر دیجاتی تھی، اب مک مین نے حوکھ لکھا ہے ،اس او محضوص ومشہور مدرسو ن کی اماکتاریخی فہرست سمجھنا چاہئے جس بین مدارس کے نام، بانی،مقامات اور د وسرے جزوی امور کی تشتریح و توضیح بھی منی طور براگئی ہے ، لیکن سلمان یا دشا ہون نے مندوستا مین اشاعت تعلیم کے لئے اور جو ذرائع اختیا رکئے ان کی نسبت ابھی کھولکھنا ماتی رنگرنگ اشاعت ِ تعلیم کی جوصور تین اختیار کی جاسکتی ہین ان مین مقدم مدارس کی ہیں ہ ناہے. بینی ماک کے ہرجها رجانب مرکزی مقامات میں متعد دید رس قائم کئے ماکیا ىما ن م*اك كا برطبق*دا وربرگرو ەتغلىم <del>قال كرسك</del> اس سلسلەين چوكىسلىن ما دىتا بون نے کارنامے انجام دیے ان کی کسی قدر تفصیل اویر گذر حکی ہے اور سرخف بیک نظر دھی مکتاہے کہ مزدوستان کے ہرصوبہ کے مرکزی اور مشہور مقامات مین سلمان سلاین امرانے مارس ومکاتب قائم کئے جن مین سے اکثر کے باقیما ندہ آیاراب مک اپنی نه شته غطه و شوکت کی یا د تا زه کررے ہیں، ''ج اشاعت تعلیم کے جتنے طریقے اختیا رکیے جارہے ہیں ان میں بگرت ا تبدائی' أنوى متوسطا وراعلى تعليم كح مدارس ومحاتب كاقيام اوراخراجات بعليم كي تخيف لطب وترطر يقي سجع جارب بهن بلثين عامته الناس كاان طريفيون سيمستفيند موناس يرموقو

راس زمانه مین وسائل سفرسهل مورگئے مین، مترفض آبسانی ایک حکمہ سے دوسری مت سے دوسری سمت بہت قلیل مّرت مین آ عاسکتا ہے، بُلاف اس <sup>کے</sup> قدیم زما نے میں جب کہ وسائل سفر محدو دا و ثلیل تھے تو اس زما ندمین ترفیج علوم واشا <sub>.</sub> . غلیمعامه کاکیا ذربیدافتیا رکیا جاسکیا تھا ہقیقت یہ ہے ک*واس بارے مین س*لمان دنتہ نے جوطر نتی عل اختیا رکیا وہ بے حد قابل دا دہے ۱۱ وربے ساختہ اُن کے حقیقی مساعجم مل مفرمتِ رفا ہِ عام کی تحسین وا فرین کرنا بڑتی ہے ، اس مستل کوحل کرنے کے لئے مسلمان ہا دشا ہون نے پہ طریقہ اختیا رکیا کہ ملک مین جهان جهان علما اور علمین ہتے تھے ان کے لئے خزا نه شاہی سے وظا نُف مقرر گر دیئے جن کے عوض وہ اپنے اپنے مقامات بر فارغ البالی کے ساتھ بغیر کسی معاوض واجرت کےمشغول درس و تدریس رہتے تھے طلبیہ وتعلمین کے لئے او قان کی مرین عام تغین جن سے ان کے مصارتِ ذاتی تعلیمی بورے کئے جاتے تھے علما، وتتعلمین ان وفلا لُف کو قدیم ماریخی اصطلاح مین مدوِ محاش کتنے تھے اس طریقیہ کے باعث تعلیم فت اورعام، نیزاس زمانه کی حالت کے لحا طاسے بہت سہل انحصول موگئی تھی، گذشته صفحات پرمدارس گجرات کے عنوان مین عالمگیر کا وہ فرمان درج کیا جا حکا' جواس نے مگرمت خان کے نام صا در کیا تھا جب مین تا م ملکت میں علمار و مدر سین تقررا ورطلم کے لیے حکومت سے عطامے وظا کف کی تصریح موجود ہو، وہ فرمان اس غا*ص طر*تقهٔ اشاعتِ تعلیم کی جس کوسلما ن فرانروا یا ن نے اختیار کیا، متن دلیل ہے

اس مدومعاش کی رقم مین ہندوسلمان کی کھے تفرنتی منتقی ملکہ دونون قومون کے مزہبی انتخاص کے لئے میر قمین مقرر موتی تعین ، قدیم زمانے مین سلمانون کے عالم ذمیجا تعلیمی انتخاص تنمے، اسی طرح سند وُ و ن مین نیڈت ، یا گوشا کمین اُن کے مذہبی رسما و، علم مِا گرو ہوتے تھے،اس لیے اس سلسلہ میں جتنے وظا کفٹ تھے وہ مذہبی حدّام وعلمین گرو ون کی اعانت ٰ ورعوام انباس کی تعلیمی مذہبی کفالت کی حتبیت رکھتے تھے ،اہج اس مد دمِعاش کے فرامین سندوُسل نون کے اکثرخا ندا نون مین موجو و ہیں ، ان کا جمع واستقصا اس موقع برمکن نهین البت<del>ه سندوستان</del> کے تاریخ نوٹس کے لئے یہ ضرور<sup>ی</sup> ہوگا کہ وہ ا<sup>س ق</sup>یم کے تمام منتشر موا دِ تا اینی کو جمع کرے ، اکد گذشتہ <del>ہندوستان</del> کی کمل و عامع ماريخ مرتر اس کے بعداب حیندماحب ورس علمار کی فہرست بجوالہ این میش کی عاتی ہے جں سے معلوم ہوگا کہ سلما نون نے ہن<u>ہ وستان</u> کی علمی تعلیمی ترقی کے لیے ح*و کوش*ٹین کرد ان من حکومت اور اتنفاص د و نون کا حقیہ، حكومت اورامراے حکومت نے حتبی تعلیم کی ہیں قائم کمیں اُن میں سے امک مقول نعدا د کی نفیل جن کا تیه مین کتب ماریخ سے حیلا <sup>ا</sup>سکا او پر گذر کی تبلیم و ند ہم ضدمات<sup>کے</sup> مین طمین خدام مزمب کے لیے جور قم اعانت حکومت کی طرف سے ملتی تھی<sup>ا</sup> اجالی طور پراس کا حال سی تم کومعلوم موحیکا ،

اب علما کی ایک مختصری حسب دیل فهرست برنظر دالوجوانیے اپنے مقام مرکوم ف فنون کی ترقی اورا فرا دِ قوم کی تعلیم و تهذیب براینی زندگی کامبت براحقه صرب کرگئے اڭ مِين كچھ تو اليے علما مِن حَن كو حكومت تعليم في طالف ديتي تقي لمكين كثروه لوگ مېن جن کوکسی اعانت کی صرورت نیقی مرطرح فارغ البال تھے اور کا رخیر وحب خدمتے م كى نبايراينى زندگى كامتول حصة عام وگون كى تعلىم فيفى رسانى برمرف كرتے ہے ، جن علمار کی فیرست میش کی جارہی ہے اللمین زیا وہ ترہم عصراسا تذہ وقت بن یغی ان مین سے قریب قریب اکٹر کا زما نہ تھ ہے ،اس لیے گوار فیرست ایک ہی <del>اگ</del>ے علماء کی ہے،ابغور کرنا میاہئے کہ بیک عهد حب اتنے علما اس حذمت کوانجام دیتے . و تواس قباس برانندا سے عهداسلامی سے آخر کمک متنی مقدس ستیان تھین حفو دن نے ا زندگی ہندوستان کی ملمی ترقبون کی نذرکر دی ہوگی ، ایک کو حیوژ کریه تا تفسیل صرف تاریخ بدایونی سے اخوذہ ہے، جس مین زیا دہ تروند یاس کے ہنی قریب کے علما کا تذکرہ ہے، اب غور کر وجب اکتر جیسے یا د شاہ کے ہد میں جد درختیقت تعلیمی دور نه تھا مدرسین کی آئی ٹری حبیت موجرد تھی' توان یا دشامون عد حكومت كاكباكه ناجن كاعهد درهقيقت الكتعليمي ولمي عهدتها بدايوني لكيتاب، . شخ سعدا منّد نبی اسرائیل ازارشه تلا مذه شخ اسحاق کا کوست درمین نما س درس کمنت<sup>ط</sup> تعانيف بسيار مفيدوعالى نونتهاز أنجل تمرح برجوا برالقرآن ام مغز الى نوشت، شيخ عبدا للديدا يوني بعمت علم از الترمقتديان روز كارخوش يافت خصوصًا ازميان

شیخ لادن د لوی ومیرسید جلال بدایونی که بعد از د فات مرحوم قائم مقام او شد <sup>در الها</sup> در بدایون درس و افاده فرموده ،

میان قائم بهجلی، تناگر دمیان عزیزا شرطلبی درین قرن شن و دست الجامعیته
عالمے جائ المنقدل والمعقول گذشته خصوصاً در کلام واهول وفقه وعربیت می گفتند که
قریب بجیل مرتبه تمرح مفتاح ومطول راا زبالیجم شرا آمایتیت درس گفته،
میان جال خان مفتی دلی، در علوم عقلیفه تقلیه خصوصاً فقه و کلام وعربیت بخوسیر
بیان جال خان مفتی دلی، در علوم عقلیفه تقلیه خصوصاً فقه و کلام وعربیت بخوسیر
بی نظیر بو د بر شرصین مفتاح می کمرکر ده وعصندی را که کما ب منتها ناست می گونید
کر جبل مرتبه از اول آ اگر درس گفته و بهشه درس گفته و افا ده علوم دنی فرمو د سه،
شخود از وجس گزاری در می خارد می خارد درس گفته و افا ده علوم دنی فرمو د سه،
شخود از وجس گزاری در می درس گفته و افا ده علوم دنی فرمو د سه،

شیخ جلال الدین تھانیسری فلیفرشیخ عبارتفا*یس گنگو ہی جا* سے عوم طاہری و باطنی بود با فاصنعلوم دینیہ ونشر موارف تقییز اشتفال داش*ت،* 

شیخ عزیزانند درعلوم فا هری بم کال وکمل به دوتفسیرع اکس وعوارف دفعوم الحکم و شروش را تبلامذه درس گفته،

شخ صبکین کا کوری سالها مدرس وافا ده فلائق اشتفال داشت، حافظ کلام مید به مفت قرائ بد د شاطبی را درس می گفت س

شیخ المدیه خیراً با دی، از علم آبتیجر نو د دما تبداس احوال سالها جری وافا ده بایزهٔ گذرانیده وآن قدرشنو بی به عدم ظا هری منو د که سبیا ر دانتمندان مساحب کمال زووار شیخ عبداننفور وظم نوپی رشیعلی و راکثر اوقات خوش درس علوم دین نسمیم شیخ

ميان وجيدالدين احدًا با دى . دائم مدرس علوم ديني اثنتاف واشت وقدرت بر جميع علوم تعلى نقلى مرتبر بو دكه كم كتاب ورس از صرف بوائي ما قانون شفا وستسرح مغما وعضدی با شد که اورا درس گفته،

شیخ سجات کا کولا موری، اوات او اکثر علیا ہے مشہور لا موراست مثل شیخ سعدا نْدم شيخ منور وغيرانيتان ورزمان جواني مبشيرال وراغب بسكار بو دخياني برگاه ازورس فارغ مى شد باز وجره وامثال آك گرفته بصيدمى رفت ،

مصنف مّا ترعالمكيري وفايع مولاته كے سلسلہ بن لكمتا ہے ،

ملا العِدا لقاسم تشرط تدريس روضه والده نتاه عالى جاه يك روبيه يوميه واشت ،

"اریخ فرشته ذکرن<del>تهاه حی</del>ن نانی بادشاه <del>ما آن</del> مین لکمتا ہے که ایک اندرونی فتنه و بغاو کے موقع بر مولنن سعدا شدلام وری اینے گرکی حالت بیان کرتے مین ،

بِمِون حصار سخر لشكر ارغونيه شدهم بي من الأمن دراً مدندا ولاً پيرمرا كدمولانا ابرا بيم جامع مام واشت وشصت دینج سال برسندافاده قرارگرفته اقسام عدم درس گفته بود و درآخر

عربارسا ننده بوده برمندبر دندوا زصفائ منازل ونزامت عادات گل نی زرداری

بروه تُعرف درا بانت كروند، رج دوم صفح اسس)

شیخ نظام الدین قدر سرو العزیز کے حالات میں فرشتہ لکھتا ہے،

غیاف کدین لمبن کے زمان مین خواج شمس الدین خوارزی اسّا دشیخ رحمته الله علیدیلی

أك، إونتا وفي من الملك كاخطاب ديا اورآخرين منصب وزارت سي جي

سرفرانکیا ، ز الحضاً )

اں کے بعد لکھنا ہے،

وقبل ازائکه وزیر شو و بدرس آنتان واشت بین نیخ اورا ویده و رساک میلانده م منظم گشت و او حجرهٔ می واشت که فاصه برا سے مطالعه اش بو د وست گردان میا استوا وسکس بو د ند که درآن حجرهٔ ورس می خواندندهٔ بی شنا گردان را در صفه در می گفت، (ج دوم ص ۳۹۱)

ان تفصیلات سے معلوم ہو امہو گا کوسلما نون نے سرکاری وغیرسر کا ری طریقہ پر ہندوستان کی ملی تعلیمی ترتی کے لیے کسیمی زبردست کوشین کی ہیں،

مندستان من طراف جوانب علما کی مدور شاعب ایم

 بیسیون اربابِ ففنل جمع تھے، جن کے دعو دسے دہلی رشک ٹیر از و بغدا دہورہی تھی، محدثاً ہ تُغلق کے عہد مین قاضی عبد المقتد رہ شنخ احد تھا نیسری جمعین الدین عمرانی اور مولا ناخوامکی جیسے اہل فِن موجو د تھے،

علاؤالدین ظبی کے عدمِکومت مین خاص داراسلطنت دہی کے تعلق ضیاء برنی رہنی کتاب تاریخ فیروزشاہی مین لکمتاہے،

كرهبي وش علما ، فول و ب نظير در دار السلطنت بلي بو دند"

ان علماے کرام میں سے چندمتا زترین وسر براَ وردہ اصحاب کے اسائے گرا ب ذیل ہن،

ت المراقع المرين الله، قاضى نبرت الدين سرباكى .مولا نانصيرالدين غنى ،مولا نا ملجرا

مقدم، مولا نا خليرالدين لناك، مولا نا علارالدين صدرالشريعيه، مولا نا نظام الدين كلامي

مولانا کرم الدین جو ہر وغیر ہم ،

سلطان سکندر تو دی کے عدرِ عکومت مین دو بڑے مالم جر مفقولات کا سرخمیہ تے، متیان سے وہی سنجس تشریب لائے جنیون نے منگی وعلم کلام کواس ویار مین بہت زیادہ ترتی دی، برایونی لکھتا ہے،

« وا زجله على المحدد كما رعدد كندرى شيخ عبدالله طلبنى درومى ومولاناعزيزالله در سنبل بودند، واين مرد وعزيزان در منهكام خرابي للهان مبند وسان آمده علم معتول دران ديا ررواج دا دند، وقبل ازين بغيراز شرح شميه وشرح صحائف ازعلم منطق و

كلام ورمندشايع نه بودي شیخ عبدانتری درسگاه مین خودسلطان سکندر شریک موتاتها اوراس خیال سے که اس کے جانے سے درس کاسلسلہ رک نہ جائے وہ حیب کر مدرسہ سے متعمل گوشہ مسجد مِن بیٹیر جاتا تھا، جان سے وہ مولانا کی پوری تقریر سنتا اور فیض اٹھا تا تھا، اكبرك زما ندمين ننا وفتح الترشيرازي آئ جفون فيعضدالملك كاخطابيا. لیم ملی گیلا نی نے فن طب کومہت فروغ دیا، شخ <del>عبدالی </del>محدّث دہلوی ہی اسی م مِن <sup>ا</sup>فِنَ مدیث کی ترویج واٹراعت کے لیے کوٹنا ن تقے، مثنا بسرعلمائ يند <u>تنا ہما</u>ن وعالمگیرکے عمد مین میرز ایراضے اوران کی قابلا نہ موسکا فیون نے آ علم وفن کو مبند ترکیا ، اہنی بزرگ کے سلسلہ مین قاضی مبارک اور شاہ <del>ولی اللہ</del> صاحب کا تورغاندان مجي مين شاه عبدالعزيز، شاه رفيع الدين، شاه عبدالقا در، مولوي <u>عبدالحئی، نیا ه محداملعبل، مولوی محداسحات</u>، مولوی <u>رشیدالدین مغتی صدرالدین</u> خاک <u>غی</u>ژ جييه متهور مرسين وعلمارته، گجرات من شنج ظامرفتنی معاحب مجمع البحار ، شنج و حبیه الدین علوی گجراتی ، مّا نورالدین وغیرہ نے علوم وفنون کو ترقی دی، قاضی <del>صنیار الدین</del> باشندہ <del>نیوتنی</del> نے گ<u>جرات</u> ہنچکر شیخ <u>وحیہ الدین کے فیض برک</u>ت سے فائدہ اٹھا یا ،ان سے ش<del>یخ جال</del> اوران سے ملاطف

نے تعلیم حال کی ان کے تلا مذہ میں م<del>لا جو ان</del> صاحب نورالا نوار ، ملاع<del>لی اصر</del>، ملاحمہ ا<sup>ن</sup> اضی علیمانتر مهست شهور مهو کے ، اوران من سے سرخص ماحب ملسلهٔ و درس گذرا، لاہور کی علی ترقی دلی پر مقدم ہے بیکن کچھ ونون کے لیے دلی کے مقابلہ میں اس کا چراغ ٹمٹا مارہ ، آخر مین اس کو بھرا مک مرتبہ فروغ کا مل مواجب کا سبب <del>کمال الدین</del> تمیری <u>جال الدین</u> تله مفتی عبدالسّلام ۱۰ور ملاعبدالحکیم سیالکوٹی جیسے نامورعلما رکی ذا ہے،ان بزرگون کے فین سے ہزار دن تشنکا ن علم سیراب ہوئے، <del>جون ب</del>ورمین سلاطین بِشرقیه کی علم رہتی کے باعث شیخ ابوالفتح <del>شما بالدی</del>ن والت محد فضل اسًا ذاللك ،مولننا التّدوا د ، ملّا محو وصاحب شمس با زغر مفتى عبدالبا قي اور د یوان <del>عبدالرش</del>ید جیسے صاحب نفِنل و کمال پیدا ہوئے ،جن کاسلسلۂ فیف تام ہندوسا الله آما و مين شنخ محبِّ اللّه ، قاصي آصف ، شنخ الفنل ، ثناه خوب لنّه ، شنخ محد طاهر ، عاجی محرفاخرز آیر، مولوی برکت انتد، اورمولوی <u>جارا تند جیسے</u> فخرروز گارففلار نے بزم درس وتدریں گرم رکھی جس سے وہان تقریبًا ایک صدی کیا جی علمی رونق رئی لکمنز من سب سے <u>سلے ش</u>نے اعظم <del>حرن ب</del>ورسے نیفیاب ہوکرآئے ان کے بعد شا ہ<u>یں مح</u>د نے مسندا فا وہ بچیائی ان کے شاگر د ملا غلا<del>م نقشب</del>ند نے سلسائہ تعلیم کو ٹر جی سخت ٹیک اسی زما نہیں شیخ قط<del>ب الدین کا جرمولا ناعبدالسّلام</del> دیوی او<del>رنحب النّد</del> الدّابا دی کے سلسارُ تلامذہ مین ایک با کما ل اشا دیتھے شہرہ ہوا ،ان کے فخر خامذان فرزند

مّا ن<u>ظام الدین</u> نے علم وفن کے دریا ہما دیے،ان کی برولت لکھنو کو تعلیمی مرکزیت حال و جونصابِ درس انفون نے مرتب کیا اس کو سارے م<del>ندوستان</del> نے قبول کیا ،اس <del>ل</del>م مین <del>ملاحن</del>، ب<del>حرانعلوم</del> ، مَلا<del>مبین</del> ،مولوی و<del>لی انت</del>ٰر بفتی <del>فهورانتّر</del> .مولوی نعیم انتر ،مولوی عبّه بدالحيم روم جي باكال سانده عصر سيدا موك، اس خاندان کے ملا مٰرہ میں <del>قطب لَدی</del>ن گو یا موی ، ام<del>ان اسّد نبارسی، قطب لِبین</del> نمس آبادی <u>، بحب انت</u>ر مهاری مولوی <del>حدالله</del> ، مولوی <del>فضل آ</del>م اورمولوی فضل حقّ غیرہ نے من<u>یدوستان</u> کے فحلف گوشون مین علوم دفنون کی تر فی کے بیے ٹری *گرتی*ن کین اورآج کک اُن کے گذشتہ ساعی کے حبر کچھ ٹٹائج باقی ہیں اُن سے شرخص کی عظمت كاتفتوركرسكتاب، عرنى كأقديم تصافيس اب اس سلسلہ مین سبنے زیا دہ ضروری مجث نصاب تعلیم کی محت رہ گئی ہے؛ جس کولکھنا گویاس مضمون کونکمیل کے بہنچانا ہے ہئے سابق مطابق س<mark>اف 9</mark> ائرے رسالہ لندوه مین مخدوی مولناتی عباری ماحب موجرده اطم ندوه انعلما رنگهنو، نے ہندوستان کا نصاب درس" ایک مقعّا ندمفیون لکھاتھا، مولئنا میکوسیوعی کرنے مثلب

قبد اریخ علما وعلوم بزند کے مبترین عالم بین مولانا موصوت نے علما کو ہزند کی ایک مفصل و مبوط آلریخ عربی زبان مین کھی ہے جو متعدد محلوات پڑشتل ہے، بین نے جا بجاسے اس کے محتلف صفحات کا بغور مطالعہ کیا ہے، علانیہ یہ کہ سکتا ہون کہ اس زیا د و بهتر ارنخی تحقیق نقتیش ملاش وستحوا ور کا دش و منت کانمو مذیش نهین کیا جاسک افهو ہے کہ انھی غیرطبوع ہونے کے باعث یہ بے نظیراور صروری الیف منظرعام رینین آئی مولانا موصوف اليض ضمون بندوشان كانعاب ورس ين تحرير فرات بن ، سناسب معلوم ہوتا ہے کہ سم سولت کے لحاظ سے نصاب درس کے عار دور فا کمراین اورجو کما بین مردور مین مروج نحیین اُن کی ففیل جان کک امریخ سے سیرسے مُشاکح کے طبقات سے ، نتواء کے ذکر ون سے اور مکتوبات و ملفوظات سے ل سکتی ہے یکی كردين ديكف كوتوايك وراساكام موكا، كم تملعت كل بون كے نبرار إصفح الله كطعبر بم سنتيم يربني بن و افرن ك ساعة أج بين كرتم بن حققت یہ ہے کہ ہردور کے کتب دسی کی جھفیل مذکورہ بالا ذرائع اریجی سے مولننا مرقح نے جمع کر دی ہے ،اس پرامنا فدستل ہے بجیٹیت صفرون نگاراس صرورت کیلئے مین نے بی مختلف کتب اینخ وسیر کی ورق گر دانی کی مکین ہر قدم پر مجھے مولا ناکی تقبح ے اتفاق کرنا پڑا اور مزیدا ضافہ کی کوئی گنجائیں نرخی اس نیا پر مین نے غیر ضرور می کاو سے قطعے نظر کرکے مولا مامدوح ہی کی تصریحات کو اس موقع پرنقل کر دیا ہتر خیال کیا بنانج قریب قریب مولانا ہی کے الفاظ مین نصاب درس کی یہ تمام تصریات اس موقع برِنقل کی ماتی ہیں ،

دوراؤل

قت اس کا آغا ز ساتوین صدی ہجری سے سمجھنا چاہئے اور انجام دسوین صدی پراس و موا حب كه دوسرا دور شرفع مركبا تما كم وبش دوسو برس تك مندرهُ ذيل فنون كي غصيل معيا رنِصْيلت سمجي حاتى تقى مشرث بتحو؛ بلاغت ، نقد، امتول نقه بنطق، كلا مُرْجُو عَلَمْ تُحرِمِين، مَصِبَاح، كَافِيه، لَبِ لا لِباب، مصنفه قاضى نا <u>صرالدين</u> بهيا وي، اوركجه ونون بعد<del>ارشا</del> وبصنفه قاضی <del>شهاب لدین</del> دولت ابا دی، المول نقرمین منآرا وراس کے شروح اورامول برودی، تغسر من مدراک ، بيغاوي ، اورکتان ، تھنوٹ مین عوارت ، فعوص الحکم اور ایک نیا نہ کے بعد نقد النصوص ، و لم<del>ات ،</del> جي ان مارس بين رائج بوگئ تين جو فانقا ٻون سيمتعلق تعي ، مدُّتِ مِن مثلَّ الانوار م<del>ما بيج الس</del>نه، (ييني مثكوة المصابيج **)** من ) اوب بین مقامات حریری، زبانی یا دکی جاتی می، صرت نظام الدین اولیا کے مغوظات سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ نے تمس الملک اسّا ڈسم<del>س لدین</del> خوارزی سے مقا<del>مات حرب</del>ی پڑھی تھی اور چالیش مقامے زبانی یا دھے ، منْطق مین نْسرح تتمییه، فن کلام مین نْسرح صحائف ۱۰ ورمیض بیش مقامات برتمهید الوشكورسالمي،

اس طبقه کے علی اے کرام کے حالات سے معلوم ہوتا ہے کہ حبیا ہا رے زما ندمین

ق وفکسفه عیار نِصْیلت ہے وہیا ہی <sub>ا</sub>س زمانہ مین ققہ اور اتعول نقد معیا رِنصْیلت تھ مد مین مرت م<del>نیار ق الانو</del>ار کا برُه لینا کا فی سمجها جا تا تھا، اور جس خوش نصیب کو تصابیج با تھ اَجا تی تھی وہ امام الدنیا نی الحدیث کے نقب کاستی ہوجا یا تھا ، اصل به سے کداس زما مذکے نصاب تعلیم میں جوخصوصیات نظراً تی ہیں وہ فاتح<del>ین مبر</del> کے مؤثر مٰداق کامنیچے تھیں<sup>،</sup> ہندوشان میں اسلامی عکومت کانخت جس قوم نے بچھایا وہ غزنی اورغورسے آئی، یہ وہ بلاد ہیں جہان فقہ واصول فقہ کا ماہر ہونا علم وفن کا طخرآ امتیا زیخا، نہی سبب ہے کہ فقبی روا یا ت کا یا پہ ملبند تھا ،عَلَم صدیث کی طرف کو ئی توجہ نہیں تھی اس کا ہٰدازہ اس واقعہ سے ہو*سکتا ہے ، کوغیا کیے لدین خلق کے در*مار عكومت مين مسئلة ساع كى نسبت مناظره بيش أيا أيك طرت ستينج **نظام الدين** ال<sup>يا</sup> اور د و سری طرنت تمام علماے <del>دہا</del>تے ۔ شیخ فرماتے ہین کرمین حب کوئی ح<sup>ا</sup>ریت استدلا مِشْ کرّا تھا تووہ لوگ بڑی جرات سے کتے تھے کہ اس شہرمن مقدیث پرفقی روایات یا مقدم تجھی جاتی ہیں کہبی کتے تھے کہ یہ حدیث شافعی کی تمسک بہ ہے، اور وہ ہا رہ علاکا دشن ہے،ہم اپنی حدثین نہین مننا جائے، شنے فراتے مین کھیں شہر کے علما مین اس در*م مکا*بره دعناً دمووه کیونکراً با دره سکتاہے، وہ تواس قابل بحکہ اکل تیاہ ویران جو <u>ضیآ برنی نے اپنی ٹایخ مین علاء الدین طلی کے عہد حکومت کا ایک واقعہ نقل ک</u> ہے، کہ مولاناتیمس الدین مرک ایک معری محدث <del>ہندوسان</del> مین عم مدیث کی یج لے کسی قدراخلاف کے ساتھ فرشتہ نے بھی تذکرۂ نظام الدین اولیادین اس واقعہ کو درج کیا ہے،

کے ادادہ سے مثنان کک آکرواہی چلے گئے، گر حلتے وقت باد تیا ہ کو ایک رسالہ ملکر کے بھی ہے ادادہ سے مثنان کی سالہ ملکر کا بھی کہ مہندوستان میں حدیث کی طرفت علامین بڑی ہے امتنائی جیلی موئی ہے، دنیا سازمولویون نے بادشاہ کاس رساکہ کو بھی نہننچ دیا ،

נפגנפم

فرین صدی ہجری کے آخرین شخ عبدالمداور شخ عو نزا متر ملتان سے آئے اول الذکر دہتی اور تا فی الذکر دہتی اور تا فی الذکر تھیں میں فروکش ہوئے، یسکندرلو وی کاعدمِکو تھا اس نے ان دونوں بزرگون کا بڑے تزک احتقام سے خرمقدم کیا کچھ ان دونو کے نفسل و کما ل اور کچھ با دشاہ کی قدر شناسی سے بہت جلدان کی علی عظمت ہند سات کو نفون نے سابق معیا رفضیلت کو کسی قدر بلند کر دیا قائی میں ہرجیا رطون قائم ہوگئی اخون نے سابق معیا رفضیلت کو کسی قدر بلند کر دیا قائی معضد کی تصانیف مطابع ومواقعت اور سکا کی کی مقتاح انعلوم داخل نصاب کین اور بہت جلدی کی مقتاح انعلوم داخل نصاب کین اور بہت جدیہ کی بین مقبول عام ہوگئین ،

برالونی کا بیجلهاس سے بہلے بھی نقل کر حکیا ہون کہ

" این هر دوعزیزان منگام خرا بی ملتان مهند و ستان آمده علم مقول را دران یا<sup>ر</sup> رواج و اوندوقبل ازین بغیراز شرح شمسی<sup>هٔ</sup> شرح صحاکف ازعلم منطق و کلام در<sup>شد</sup> شاریع مذبو و "

ر رواج دیا اور ملائم تفتا زانی کے ناگر دون نے مطول او مختصری بنیا دو الی اور ملوریج وتسرح عقا رنسفی کدر داج دما ، اسی زماندمین تمرح و قایدا در تسرح جا می بجی رفته رفته وافل نصاب بوکین اس دور کے سیسے آخر مگرسسے زیا وہ نامور عالم سینے عب الحق محدّث دہلوی ہیں ا جوہند<del>وستان</del> سے *عرکئے*' اور و ہان تین برس رہ کرغلا سے حربین ترفین سے فن مدت ئى تھىيال كوس كى اور يىتىخىر <del>ئىندوسان</del> كے ليے لائے الفون نے اوران كى اولاد نے برابر اس کی اٹناعت کی گرافسوں ہے کہ نا کا میا بی ہوئی کیونکہ یہ ٹمروٹ ایک دوسرے بزرگ کے لیے خدانے مخصوص کر رکھا تھا ، یهان پردوردوم کی دامل نصاب *تا*بون کی نام نبام فمرست دینامض ط<u>والت</u> کیونکہ دوراِ وَل کی حِن کُن ہُرِ ن کی فہرست دیجا میک ہے ، مذکورُ بالا کُتا بین بعنی مطالع دموا اوران کی نیرفین <u>مطول ، محت</u>ر، الوتریح ، نیرج عقائد نسفی نیرج و قایه اور نیرج جاحی اس فهرست پراضا فه کرلینے سے دور دوم کا نصاب با سانی مرتب ہوجا ہا ہے ، اس طبقہ کے علماے کرام کے حالات سے معلوم ہوتا ہے کہ ب طرح ہما رے زمانہ <u>بن مدرا وشمس باز خرانها ئی کتابین محبی جاتی ہین اسی طرح اس زماند مین مفتاح العلوم</u> سکا کی اور قامنی عصد کی مطالع اور مواقعت منتهها نه کتابین تعین ، برایو نی نے جا با اس کی طرف اشارہ کیا ہے ، مفتی جال لدین ما ن کے مالات میں لکھا ہے ،

· بر شرحین مفتاح محاکمه کرده وعضدی را که کتاب شهیانه مست می گویند که هل مرتب

ازاول آاخر درس گفته "

مین مین کماہے، مین میں کماہے،

" می گفتند که قریب به چپل مرتبه شرح نفتاح و مطول را از باسیم نند تا تأوتمت در سگفته. و برین تباس سائر کمت منتهائیهٔ ۱۵

دورسوم

دورد وم مین جرتنی نصابِ درس مین موا، اس سے لوگون کی انگین بڑھ کئی تعین،
اور وہ معیا رفضیلت کو پہلے سے بھی زیادہ بلند کرنے کئے تمنی تھے، تماہ فتح اللّہ شرائری
ہندوستان اُئے ادھر دربا راکبری نے ان کو عضد الملک کاخطاب دے کر بہت بلند پُن بنا دیا، انھون نے سابق نصابِ درس مین کچھ جدید اضافے کئے جس کوعلمارنے فوراً قبو کرلیا، اوراب مدارس مین نئی قسم کی جبل بہل نظر آنے لگی،

مَّ تُرالکرام مین میرغلام علی آزا و نے مندرج ویل عبارت مین اس کا اعتراف کیا ہو، تین میں سیترن میں میں مثام میتور نا

تصانيف علما سے مشاخرين و لايت مثل محق دوانی ومير صدرالدين وميرغيا شالدين

منصور ومرزا جان مير، به مندوستان آورد ، و درعلقهٔ درس انداخت وجم غفيراز حاشيه

عقل استفاده كروندوا زان عهد معقولات رارواجي ديگر بيداشد"

شاه ولى الله صاحب المتوفى من الماه في من الله عنه جواس دورك سب اخر كرسب المركز من الم

تحومین ، کانیهٔ شرح جاتی ، نطق مین ترح شمئیترح مطابع، فلسفرمين، شرح براتراككتر، كلام مين ، شرح عقائد نسفى مع ماشيه خيالى ، شرح مواقت، فقرمين ، نمرح وقايه، برآيه (كال) اصول فقرمین، صاتی ادر کسی قدر توضیح لوج ، ملاغت مين، مخقرومطول، بها**ُت ف**حس**اب مین ،** بعض رساُل مخضرہ ، طب مين، موجزاتفانون، صرمی**ٹ می**ن ، مشکوۃ انصابیج کل ، نتائل ترمزی کل بھی قدر صحح نجاری ، تفسيرمن ، مرارك بيناوي ، تصوف سلوك من ،عوا<del>رن</del> ورسائل تقتبنديه ، شرح رباعيات <del>جاى</del> مقدّمهٔ <del>تمرح لمعات</del>،مقدمہ ن<u>قدانصوص</u> ،اس قدر بڑھنے کے بعدشا ہ صاحب <del>عرب</del> تشریف ے گئے ، اور وہا ن کئی برس رہ کرشنے ا**بو طام**ر مدنی سے فن صدیث کی کمیں کی جس کی <del>ہندوستا ن</del> آکرائی*ی سرگرمی سے اشاعت کی کہ* با وجود کسا دبازاری اب کمی*اس کا اثر* ہاتی ہے، <del>مہندوستا آ</del>ن بین صحاح ستہ کے درس و تدریس کا رواج اسی وقت سے ہوا ہے<sup>،</sup> جب کرشاہ صاحب اوران کے نامورا فلاٹ نے ا*س کو اپنی محن*تون سے رواج دیا، ا

ا بني عرعز نز كا منية حقد ال كى اشاعت پر صرف كرديا. نناه صاحب ايك نيا نصاب الله من من من الم الله من الم الله م مرتب كي تما، گرچونكه الله زمانه مي علم كامركزنقل ولي سي لكنو كونسقل جو حيكا تما، اور تما الم الله الله من من منظق وحكمت كى چاشنى سے لاگون كے كام وزبان اشنا جور ہے تھے ،اس ليے اس كو مقبول عام مونانصيب نرجوا ،

دورجهارم

چوتھاد وربار مہوین صدی ہجری مین ٹمردع مہوا، س کے بانی ملانظام الدین تھے جھون نے اس کی منیا و ایسے زبر دست ہاتھون سے رکھی کہ با وجو وامتدا دِز مانہ آج کک اس مین کوئی کمی نہیں واقع موئی ،

ملاصاحب، شاہ ولی انڈر صاحبے ہم مصر تھے ،اس دور مین جوکتا بین رائج تعین ککی است تفصیل گذر کچی ، ملا نظام الدین صاحب نے اس پر بہت کچھ اضا فرکیا، اور بعداضا فر اس نضا کی کمل صورت یہ ہوئی ،

صرف مین میزان بنتیب، مرت میز نیج گنج، زیره، نصول اکبری شافیه، محویین نخومیر، تمرح ماشه مال، بدایته انخو، کافیه، نمرح ماتی،

منطق مين، منزَى كَبرِي ،اياغِ جَي ، تهذيب ، شَرِح تهذيب ، قطبي مع مياهامُ حكمت مين، ميذي ،مدراشم بازنم،

ر پاضی مین ، خلاصته الح<del>ساب، تحریراقلیدس</del> مقالهٔ اولی <mark>، تشریح الافلاک ، رسالهٔ و تجیئاً</mark> شرح <u>حمنی</u> بب اول ،

بلاغت من ، مخصر معانی ، ملول ما الاقلت ، فقه مين مشرح وقايراولين، مراير اخيرين . اصو**ل ق**عه مین، ن<del>ررالاُو</del>ار توضّع تو *یح سل*رانتبوت (مبادی کلامیه) كلام من ، شرح عقائد شقى شرح عقائد علالى ، ميرزابد ، شرح مواقف ، قفسيرين، ملالين، بيناوي، صريث مين، مشكوة المعاليج، س نصاب کی ٹری خصوصیت یہ ہے کہ طالب علمون میں معان نظرا ورقو ت مطا<sup>و</sup> پیدا کرنے کا اس مین مبت لحاظ رکھاگیا ہے، اورجس کسی نے تیق سے پڑھا ہو تو گواس کو معًا بعد ختم تعلیم کسی صفوص فن مین کمال عال نهین موجا تا ، لیکن به صلاحیت ضرور سراموجا ہے کہ آیندہ محض اپنی محنت سے جب فن مین جا ہے اتھی طرح کمال پیدا کرے ، تحتی کی قیداس نے لگائی گئی کر موجود ہ طرزِ تعلیم اِکل اُقص ہے ً ملا **فطام الدین** کاطرتیز درس به تعاکه وه کمآنی خصوصیات کاجندان لی<sup>ا</sup>طانمین کرتیے تھے، بلکه کمآب کوهن ذرىيەتىلىم قرار دے كرامل فن كى تعلىم دىتے تھے، اسى طرز تعليم كانتيجە مَلا **كمال الدين كرمعلو** (0) یہ دوراسلامی تعلیم کا ہون کے زوال کا دورہے ،اس وقت مندوستان میں لیلامی عكومت كاحيراغ گل ہور ہاتھا بسلما نون كى على قعلىمى محلسين مبى غينتنظم و پراگندہ ہورتې

اس د وره ین جه نصاب تعلیم تعین موا وه درامل تجیلے درسِ نظامی کی گبڑی ہوئی صورتے؟ اور وہی آج کک عام اسلامی تعلیم کا ہون بین رائج و شائع ہے، اس نصاب بین حسب ذیل فنون اور کتابین شامل بین، صرف، میزان، ن<del>ش</del>عب، ینج گنج، زیره، وتنورالمبتدی، مرت بیر، گذشته نفعه صدی سے علم العین فی العربی التا فیه ا كحو ، تُومير ، أنه عال ، ترح مأته عال ، مه انته النحو ، كا فيه ، تسرح جاى ، ملاغت، مخقر<del>موانی کال مطول تا ۱ انا قلت ،</del> ا وب ، نفخة اليمن ، سبعه معلّقه، ديو النمّنبي، مقامات ٍ مريري ، حاسه، فقه ، شرح وقائيرً اولين ، برايه افيري ، اص**ول فق**ر، نوراً لا نوار، توضيح تلوت<del>ح بسل</del>م النبوت (آخرا لذكركتاب انتول نقه بن ہے ، کیکن حصّۂ زیرِ ورس درحقیقت علم کلام کا گڑا ہے ،اس لئے اس کوعکم کلام دین فل سجنیا جا منطق ،صغری، کمری، اییاغوجی، قال اقول میزان منطق، تهذیب :تسرح ته قطبی بمیرطبی، ملاحق جمالتر، قاضی مبارک بمیرزا بد رساله ، عاشیه غلام محیی برمیرزا بد، <del>لا حلا</del>ل. اورکهین کهین <del>نجرانعلو</del>م ب<del>تررح س</del>لم، حاشیه <del>عبدانعل</del>ی برمیرزا بدرساله اورشرح مسلم المبين في فل نصاب ہے، حک**ت ،میبزی ،مدراتیس بازنم**، كلام . ترح عقائد نسفى بنياتى ،ميرزا بدامورعامه،

ری**ا صنی**، تحریر<del>ا قلیدس</del> مقالهٔ اولی، فلاص<del>ه الساب</del>، ت<u>صریح</u> شرح تشریح بشرح حمیمنی، فرائض ، تترينيه ، مناظره، رشیدیه، تفسير ملالين، سينادي اسورهُ نقره، اصول حديث الترح نحية الفكر حديث، بخاري اسلم، موطا، ترندي، البرداؤ درنسائي، اين اجر، یه با د رکھنے کی بات ہے کہ اس نصا ب مین منطق کی حتنبی کتابین واغل مین و هالمعم ہرورسگا ہ مین پڑھائی ماتی ہیں ، بخلات اس کے ادب وحدیث کی حوکما بین مندرج مین و ه هرعگه نهین پڑھائی جانتین جب کسی کو اوّب پڑھنے کا شوق مہو تاہے وہ کتر برسیر کے علاوہ خارج اوقات میں ادب کی مذکور ہ نصاب کتا بون کوتھی بڑھتا ہے .بنطبکہ اس كوكو ئى معلم اوب بھى ل جائے ، جوعمو مًا مدارس مين ناپيد موتے بين ، حدیث کئے یے دیگرکتب درسیہ سے فارغ ہو چکنے کے بعدایے مقامات کا سفرکرنا یر اہے جان مریث کے بڑھانے والے مل کین، اس نبا پرمیرے خیال مین اس نصاب درس سے جوعمو مًا مدارس عربی مین رائج ہے، علاحذیث اوب کی مذکورہ بالاکتابون کوخارج ہی بمحنا جائے، الأفرى نصافيس كے تقائض (۱) منطق کی تما بین ضرورت سے بہت زیا وہ ہوگئین، تمروع سے لیکے تو نیدرہ

تابين مرف اس ايك فن كي بن، (۲) منطق کی جو کتابین وخل وس ہیں ان میں بہت خلط محبث ہے، • حرا نٹر قاضی وغیرہ نن منطق بن بن بین ایکن ان بین منطق کے سائل سے کمین زیارہ مه اورفلسفه کے سائل ہی جہل سبیط عمل مرکب علم با رمی اور کاظ سی کا وجو دنی انجارج وغیرہ مسائل ایسے ہم ووسیع ہیں جن میں پڑ کرطالب علم منطق کے خاص سأل كى طرف مبت كم متوجه موسكتا ہے، رسی منطق کی بندرہ کتابین اس نصاب بین ہیں بکن فن نفسیر جیسے ضروری فن کی مرت و وکتابین لی کئین ہم**ضا وی** اور حلا**لین ،** بی<u>ضا وی</u> کے صرت ڑھائی یا ر<sup>س</sup> زیر درس ہین، جلالین بوری بڑھائی جاتی ہے ہیکن اس کے اختصار کا یہ ما لم ہے کہ قرائ اوراس کے الفاظ وحروت عددًا برا برہین، رہم) حدمیث و تفسیرکوا وب دع سربیت سے مدد ہیجتی ہے ہیکن اس کا حسّہت ہے، بلاغت بین مرت ڈوکتا بین دخل نصاب بین مختصرومطول سی آخری ت ه صرف ایک ربع حصّه بڑھا یا جا آہے ، **ا وب کا**حال او پرلکھ جیکا ہون ، ۵) اس نصاب مین **ماریخ جغرافیهٔ ع**ماع**جا زالقرآن** وغیره منروری عوم و نو<sup>ن</sup> بالكل نهين بين، متداول ارتخون مين ط

ولی الله صاحب کے رسالہ وصیت نامئی فارسی میں طریقی تعلیم کی نسبت ایک تا ہے تحریر بی، جوائن کا ذاتی تجربہ ہے، وہ اس طریقہ کو بہت نافع فراتے ہیں، چزکد ایک بلنظ انسان کا بیان ہے، اس لیے اس کو بیان مجنب نقل کر دنیا مناسب سجمتا ہون، تحریر فرواتے ہیں،

طرن تعلیم ظرخانکه به تجربه فتن شرآن ست کانخست رسائل مختفره صرف ونحودس گونید سسانخداز برکے یا جار جار تعدر ذہن طالب، بعدازان کتاب از اسکے یا حکمت علی که برمان عوبی باشد آموزند، و دران میان برطریق متبع کتب بعث وبرآور دن سكل ازجائي المطلع سازند جوب قدرت بزبان عربي يافت موطا بروايت يحيى بن يحيي معمومي بخوا نا نندو مركزان راعلل نـ گذارند كه صل علم حديث ست، وغواندن أن فيفها وارو، اراساع حميم أمسلس ست. بعد ازان قرأن غظيم ورسس كونيد، بأن مفت كه مرت قرآن فواند نبر تفسير وترم گوید، وانچه ستک اشد در نحو با در نتان نزول متوقف شو د و بحث ناید، بعد فرا از درس، تفسیر حلالین را تقدر ورس بخراند درین طریق فیضهاست بعدازان ور كيك وتت كتبَ حدميث بخرانده نتصحيحين وغيرًا نها وكتب فقهيه وعقابير و سلوك، و در يك وقت كتب و أثمنه ي مثل شرح ملاحامي قطبي وغيران الي ما نتا را منّد، واگرمیر آیرکه مشکوّهٔ را مک روز بخرا ندوروز دیگر تمرح طبی بقدر انچەروزاۋل نواندە است بخواندا خيلے افع ست،

نقسم جاعا ،

یا مرابع امتیاری

جمان تک تاریخ کی روشنی مین ہم گذشته مدارس پر نظر ڈال سکے عام طور پریہ نظر آیا کہ قدیم زما نہ مین درجہ وارتقبیم کا جو طریقہ اب ہے کتبی نہ تھا،البتہ اُخرزما نہ تین میں علوم ہوتا ہے کہ تام زیر درس کتا ہین مین بڑے صون مین نقیم ہین ، مختصرات ،متوسطات '

، ورمطولات جن کی تفصیل حب ذیل ہے،

میزان سے نیکر قطبی کس مخفرات، مسروح سلمو زوا کر ملا نه متوسطات.

صدرا منمس ما زغه اور مضاوی دغیره مطولات .

طلبہ کے مراہج المیانی کامعیار میں میں کی بین تھیں، رقی کاطریقہ (تصریاً نمین

معلوم گر) غالبًا میں تھاکہ نیجے درجے کی گی بین ختم کر کھنے کے بعد طلبہ خو و بخو د او پر کے درجون د کر مرکز کا سات کے سرچیا ہے۔

مین تسرکی ہونے کے ستی ہوجاتے تھے،

انفابطلبه

بلي ظ تعليم فنون فالنع المتحصيل طلبه ك ليئة تمين تقتب تنف فاضَل ، عالم اور قابل نهين

القاب کے ساتھ سالا نرطلسون بین ان کوسندین دی جاتی تھیں جن کی تقییم اس طرح تھی،

ا - جِنْض منطق وحكمة من ابراور و منيات من ملي العلم مواتها ال كوفاش،

۷- چشف محض دینیات مین بوری دستگاه رکحتا تمان کو عالم،

س - ۱ وروشخص عرف فنو ن إ د سيرين مهارتِ كالل ركه تا تقا، الل كو قابل كے لقا

دیے جایا کرتے تھے ،

# مخصوص علمي مقامات

پہلے فحلف علوم و فنو ن کے لیے مقا ہات مخصوص ہوتے تھے، جمان سے بڑھکر ن علوم کی تعلیم کمین ہجی نہیں ہوتی تھی، اس زما نہ مین طلبہ سفروسیا حت کرکے مختلف

تقا ہات سے ختلف علوم کی تصیل کرتے تھے،اور جومقام مِس فن کے لیے مشہور ہو ّااہکو

وبن جا کرمال کرتے تھے مثلاً

صرف ونخو بياب بن،

عد**یث و** تفسیر، دلی مین،

منطق وحكمت، رامپورمين،

فقه، اصول فقه، كلام، تكسنوُ من،

فارتى بان فنون كنعسائم

ر تواهی گذشته صفحات بین جو کچیه لکھا گیا ہے اس کا تعلق عربی تعلیم سے ، جو گویا کا بھی کیم ا

ئی تعلیمیا اسکول کی زبان سلمانون کے عمد چکوست میں فارسی تھی ،کیو نکہ حکمران خمآ کی ا دری زبان فارسی تھی اور اس لیے اُن کے عمد حکومت مین ابتدا ئی تعلم اور کارو زبا ن بھی فارسی ہوگئی، یہ اسی کا بقیہ اٹر ہے کہ ہم آج ٹک <del>ہندوسّان</del> کے م*کاتب* رارس ملکه انگریزی اسکولون اور کالجون تک مین فارسی زبان کی تعلیم کا وجو دیا ہیں، آج سے تیاس برس میٹیر کک <del>ہندو سان</del> کے عام مراسلات اور خانگی خطیو بت مین <del>مندوستان کے تعلیم یا</del> فتہ منہ و اورمسلمان فارسی ہی زبان ہنعال کر<del>ی</del>ت بیکن اس سے مبند معیار کے مطابق اس موتع پر سے د کھانا نہا بیت ضروری ہندوستان مین فارسی زبان اوراس کے فنون کی تعلیم کے تمائج وٹمرات کیامن' لیونکہ ہر حیر کی کامیا تی وناکامیا تی کاصیح معیاراس کے نتائج وعواقب ہی ہوتے ہن' فارسی لٹر پچر کے دو نون حقے نظم و نٹر کے ماہر و کامل سلما نون میں سے جتنے اثنیاص ا موے ہم میان بران مین کے مرف دوعارا سے اشفاص کا تذکرہ کر دنیا کا فی شجھتے ہیں جن کے نصنل وکمال کا خو و اہل زبان کاملین فن نے اعتراب ہی منین کہ ملکهان کی تقلید دیروی کوانیا طفراے امتیا زشجھتے رہے، ہندوستان مسعود سورسان صفرت امیرخسروجن دہوی بنینی اورغالب برجس قدرجا ہے فحرو ناز کرسکتا ہے ہستان غ نویه عهد حکومت کاست زیاوه با کمال مامرفن اور شهرهٔ آفاق شاع ہے،اس کی تفلیلت و کمال فن کا اوا زه آیران و هندوستان د و نون ملکون مین مکیها ن طور پر مایند تها ، میره كالياية اس سے بھى كىين ملند ہے، علامہ شلى شوائقم مفتر دوم من لكتے من،

ہندوشان مین جوسو برس سے آئے مک اس درجہ کا جا مع کما لات نمین بیدا ہوا،
اور سے بوجھو تو اس قدر مختلف اور گو ناگون اوصاف کے جامع ایران وروم کی ی افرے بی ہزارون برس کی مدت مین دوہی جا رہیدا کئے ہون گے، صرف ایک علی کو لو تو ان کی جامعہ انوری ما فظ ، و کو لو تو ان کی جامعہ آفر میں ہوتی ہے ، فروسی ، سعدی ، انوری ، حافظ ، و فظری برخ ہوت ایک افظ ، و فظری برخ ہوت ایک افلی سے نظیری برخ ہوت ایک افلی سے انگری برخ سکتا ، سعدی قصیدہ کو ہاتھ نہین بڑھ سکتا ، سعدی قصیدہ کو ہاتھ نہین کا سکتے ، انوری تمنوی اورغ ل کو جھو منین سکتا ، حافظ ، و نی ، نظیری غول کے دائرہ سے با ہرنمین نمل سکتے ، لیکن خروکی جا انگری مین غول ، شنوی تصدید کو باتھ کو دائرہ سے با ہرنمین نمل سکتے ، لیکن خروکی جا انگری مین غول ، شنوی ، تھید ، کو باتھ برنمین نمل سکتے ، لیکن خروکی جا انگری مین غول ، شنوی ، تعدید کو باتھ کی دائرہ سے با ہرنمین نمل سکتے ، لیکن خروکی جا نگری مین غول ، شنوی ، تعدید کو دوسی ، شنوی ہونے خطاع سے خون مینی تضمین ، مستزاد اور صنا و بدائع کا تو شار نہین ،

مولانا جامی نے بہارتان میں لکھاہے کہ خمہ نظامی کا جواب خسرو سے بہترکسی نے بہترکسی کے بہترکسی کے بہترکسی کے بہترکسی کھا جواب مطاب تھا بخواج حافظ اور عرفی بھی ان کو اسی خطاب سے

یا دکرتے ہیں ، ربر

عظ شکرشکن شوند مهم طوطیا نِ مهند نه نین قند با رسی که به نبکا که میرود هم این قند با رسی که به نبکا که میرود هم غنی به روح خروازین بارسی شکردم که که م طولی مهندوستان شو د شیرین بینی می می

حفرت امیر خبر وکی نبی ہم کیر صلاحیت و قابلیت تنفی جس کے آثار وعلائم ان کی ابتدائی زندگی سے ظاہر ہورہے تھے اور اہنی آثا رکی نبا پر حب اُن کی عمر اکتیل تمبیل

|  | برس کی تھی اوراُن کی نتاعری اپنی ترتی و کم    |
|--|---|
| کے کلام کو دیکھ کریے کہا تھا کہ <del>خسرو جو ہر</del> قابل! ور | سعدی شیرازی نے ان کے اس وقت کے                |
|  | لائق تحيين وترميت بني ،                       |
| بِ بنِ ان کا تغزل برِ غاص اصبان ہے'                            |   |
|  | اُن کے کلام مین جو سلاست روانی صفائی          |
| سے بڑھ کر ہے کہ عنوی حثبیت سے جو سور کو ا                      | فَنَءٰ ذِلُو ئَى كَا بِيلا قدم ہے، بيكن ان سب |
| س سے امیرخسرو کا کلام بھی خالی ہے، ذیل                         | اورجذبۂ واٹران کے ہان بایاجا ہے،الا           |
| ے،   | کے چند شعرون سے اس کا آندازہ ہوسکتا۔          |
| ر مست<br>اے دل از صربتانے دہ اگر طبئے                          | خلق گویند دل از صبر بحا آورباز                |
| ہمت<br>قدمے رنجہ کن بن سوے کہ رسوک                             | امے کہ نظارہ دیوا نظردی مرگز                  |
|  |   |
| کا رے وگراست کا مِن نبیت<br>ر                                  | برچون توکھے وگر گزیدن<br>گزیر                 |
| این از فلک است از هنگ  | گفتی کرسپسرا جدائی از من                      |
|  |   |
| از دام جته با زسو <i>ے</i> دم میرو                             | بازاین ولم مبوے ولارام میرود                  |
| <br>صا برنتوان بو دوتقاضانتوان                                 | <br>طرفه سرد کارنسیت که با وعد ٔ محنو         |
| هما بر بوان بر دونهاهما نوان<br>                               | ظرفه تمرد کا رسیت که با وعده عسو              |

این سخن را چه حواب مت تونم میانی ئن خور کنم آغاز به پایان که رساند (شعربعب، مخعاً فیضی اکبری دربار کا مک لشعرارتها جهان مبیبون ایل زبان (ایرانی) ش**عراموجود** ظ ہری محاسن کے علا وہ معنوی حیثیت سے اس کی شاعری میں متنی خصوصات بین ا ان کی تفصیل کا بیمو تع نهین، تا ہم آنا کے بغیز نہین رہا جاسکتا کہ دوش بیان میں یہ تمام ط اس قدراً کے نظرا آب کہ یہ اس کے خاص حصّہ کی چیز ہوگئی ہے ،اس مین شبہہ نہیں کم تبایی جرش بیان خواجه ها فط مین بھی ہے اوراعلی درجہ پرہے، کیکن وہ رندا نہ مضامین اور ہے عالم کے *ساتھ خصوص ہے بینی کے بی*ان فخریہ ،عشقیہ ، نلسفیا نہ ہر *تھم کے مضا*مین **من کی**ا جِشْ ما یا جا ما ہے،اس کی دوسری متا زخصوصیت استعارات کی شوخی اور تشبیها**ت** کی ندرت ہے،گواکبری دور کے شعرار مین یہ وصف عام ہے بیکن <del>نوعی</del> شیراز**ی** اور عربی اس مین اپنے نام معاصرین سے متیا زہین اور نیفی متیا ز تر اسی مهارت و کمال فرکا ينتيه بكرميرز اما مُنْفِيني كي غزل يرغزل كته بين تومقطع من كته بين، این آن غول کوفیفی شیرین کلام گفت دردیده ام خلیدهٔ و در دل نشستهٔ رسمی قلندرایک ایرانی شاعرتها اس نے اپنے مدوح خانخانان کی مرح می<del>فنی</del>ی كے نفنل وكمال كايون اعترات كيا،

رفيف نام توفيفني گرفت حيرن ضرو علیٰ تقی کرہ ایران کے شہور شاعر نے فینی کی مرح بین تصیدہ لکھ کرابران ہے از مراافكند برنظم اورم يرتوفيضي الوافيض أن كرين كرويج كبرن وگرمن متجراً ستان او مجبر من 📆 الرمبتم محبرإ ندرخن اوسست خاقاني ركيم باادرمد درشاعري عواتم حتمي كه داین فانقاع من میراوست بیرین عظیم سے آخر مین فاتم الاما تذہ مرزا فالب کا نام لینا جائے جن کے مجزا نہ کمال فن نے فارسی شاعری کے مردہ حبم میں دوبارہ رفرح بھونگی ، ییجبیب بات ہے کہ ایک ہی زما نہ مین <u>ایران</u> اور منهروستان دونون ملون مین <u>غالب اور قا اُنی</u> فارسی شاعری کی <sup>م</sup>لاح وتر تی مین مصروف تھے،ان دونون مین جس طرح یہ تیا نامشل ہے کہ کو ن مکس سے متا ہوا، طبیک اسی طرح تنائج کے لھا ط سے بھی ایک کو د وسرے پر ترجیح دینا نہا ہ<sup>یتوا</sup> ہے،ہم اجا لی طور ریصرف اتنا کہ سکتے ہین کہ قاآنی کو یڑھکر اگر فرخی ومنو چیری وغیرہ کا وصو کا ہوتا ہے تو غالب کا کلام ہمعیل کمال اورسلمان سائوجی کی یا دیّا زہ کریا ہے الرَّہم مرزا غالب کا ابتدا کی کلام گوخنیت سهی بهکین بغزشون سے خالی نهین اور وہ حب کم مرزا سدل اورطوری کی را ہ پر چلنے کی کوشش کرتے دہے، گراہیو ن بین متلارہے ،لیکن آخرا خرمین جس طرزیر کھنے لگے تھے وہ بقینیا اشا ذا مذطر زتھا،اوراس میں ان کے کمال مهارت فن کا نبوت ہرموقع پر ملتا ہے ، مثلاً ان کا وہ قصیدہ جس کا یہ مطلع ہے ،

روامت شورنشیدو ترا ندستان را بشرط آنکه زگویند را زینهان را ب کس قدرخگی، سلاست ،صفائی اوراستا ذا پذخصوصیات سے لبرنز ہے ،مرزا فا نے اس تعیدہ کے آخر مین شاعوا نہ فخروا دعاکے طور پرخود ہی صاف کہدیاہے، چان کاشه ام این ورق کرگرگرد فتد زدست فانقشبند شروان را در دست فانقشبند شروان را گرنده ام روش خاص کا ندرین منجار به پریه بایک بلرز د ظهیر وسل ان را اب نٹر کے سلسلہ مین غور کیجئے تر امیر خسرو کی اعاز خسروتی کا نام آیا ہے جس مین نز نونسی کے امول و قواعد بیان کئے گئے ہیں اور اپنے فن میں غائبا یہ سلی تصنیع ہے۔ یہ قدیم دور کی جزہے،اس لیے اس مین قدامت کی خصوصیات نمایا ن من تعیٰی سرح کے صنائع وبدائع کی فاص طور یر یا نبدی کی گئی ہے ،اس کے بعدا ہمیت فن انشاء کے بحا طے البفضل کی تصنیفات اُمین اکبری وغیرہ کا نام آباہے ،ابوضل کی نشا پرڈا گو قدما ، کے طرزسے کسی قدر فحملف ہے ، اور صنائع و بدائع کی سخت یا نبد بون سے بهت کچه آزا و ہے، ماہم وقت بیندی فیامت الفاظ اور اور دوسری قسم کی زاکتے سے وہ میں خالی نہیں ،البتہ اسی زمانہ میں الوفضل کے بھائی الوففین فیفی نے ساڈگڑ کی انتدا کی انشائے فینی فینی کے خطوط و مراسلات کا مجبوعہ ہے ،اس وقت کا <del>خطوط</del> اورمراسلات بیان واقعه کی بجائے زیادہ ترانتا پروازی کا اہلار مقصود مہوتا تھا ہی نے اس کی اصلاح کی اور سا دہ نگاری دوا تعہ نونسی کورواج دیا ،خیانچہ اس کےخطوط ے اس زمانہ کے تمدّن، تہذیب معاشرت، اُواب رسوم ہرضم کے عالات معلوم ہم

ہیں،اس کے بعد ہم کواس کتا ب کا نام لینا جا ہئے جو کما ل ِ قوتِ تحریر کی مہتر دن طبے ہے،اور جس کے مصنف کی قوت ِتحر بر عداعجا زیک پینی ہوئی ہے، یعنی شہنشا و جہانگھ ی تزک جانگیری،اس مین سرقیم کے واقعات کومیں خو بی ، سادگی ، صفا کی اور۔ سے بیا ن کیا ہے اور ساتھ ہی ہر گگہ زبان کا نطف بھی قائم رکھاہے ، فارسی انشا پڑا مین ہیں کی کوئی مثال نہین، عالمگیر کے رقعات بھی سا دگی وصفائی من ہیں کے ہم یا یہ ہیں، ملکومکن ہے کمین کمین جین جینیتون سے مہتر ہون ، تا ہم تطف ِ زبان ِ رعا اصول انشایر دازی کے بحا ط سے عالمگر کمین کمین طوکرین کھاما یا ہے بیکن جماع کے فلم کو بغزش کے بنین ہوتی اور تھے لطف عبارت اور مقدل زئینی ا وا کا لحا ظ لیا جائے تو رقعات عالمگیرکو تزک جیا نگیری سے کوئی نسبت نہیں ،اورسے یہ ہے کہ ہو بھی نہین سکتی، کیونکہ رندختاک اور زنگینی ادادونون ایک جگرجمع نہیں ہوسکتے ، با این مهر *بهرحال به واقعهے که <del>مندوستان</del> کی* انشا پردازی کی به دومتا زکتابین اس قابل مبین کدان بر منزار و ن ظوری، و قائع نعمت فان عالی اور منشأت ملّا طاہروحید نثار کردی جامین ، ا نِ کے علاوہ بیان فارسی زبان میں بہت سی کتا بین لکھی گئیں جن مزمکن ہے کہ کہین کمین ندکور ۂ بالاخصوصیات کے عمرہ نمونے موجرد مون ،لیکن اس موقع کیا ہم اُن کے تذکرے کو تعبد اُقلم ایراز کرتے ہیں، کیونکہ بیان گفتگو زیادہ ترفارسی کے د ب وانشایر دازی سے ہے بیکن بیان تک جوکچہ موا وہ خاص سلما نون کا تذکرہ

هاجن کی زبان ہی فارسی تھی، اب مہن ہندو وُن کے شعلق یہ و کھانا جائے کہ امغون نے اسلامی تمین و حکومت کے زیر ترمبیت اس زبان مین کیا کیا ترقیان کین ،افس ہے اس رسالہ مین زیا و تفصیل کی گنجائی نہین اس لیے ہر چیز مین صرف اجالی بیان کم اکتفا کرنا ہوگا،اورمحض ہم شماری سے زیا وہ کی نوبت نہ آ سکے گی، ہندوہبت د نون تک اس زبان سے بالک الگ ورنا آشنا رہے ہیکن سون مدی کے اغا زنینی سکندر لودی کے عمد حکومت مین اعفون نے بھی اس کی تصیار تعلیم کی ضرورت محسوس کی اور با لآخرائیی کا میا نی کے ساتھ اس کو حال کیا کہ زیا ندانی من ملمانون کامقابلہ کرنے لگے کسی زبان کی تھیل کے صرف میں نہیں ہین کوانسانی اس کا حریث شناس ہو یامعولی طور پریول اور سجھ سے ، بلکہ عنی یہ بہن کہ اس میں حرکھے علمی ا د بی سره به مواس پر بوری دستگاه حال کرے ،اس اصول کی نبا پراگروافعا کا استقصاء کیا جائے توصات نظرآ ئے گاکہ ہندؤ ن نے فارسی زبان کے تام علی <sup>ہ</sup> ا دنی شعبون برکامل قدرت عال کرلی تھی ،اوران مین فارسی زبان کے بہتر سے بهترادیب، شاعراورمصنف ببیدا ہوئے جن کی مختفرتفصیل حب بل ہے، فَنْ مَا يِرْخُ مِن لَبِ التوالرِيخُ، مَا رَبِخُ شَا لِ إِن مِنْدَ، رَا عِا دَلِّي، هَا لات مرسَّم، فلأت <u>نتومات ِعالمگیری، مایخ</u> دلکشا، ما ریخ کشمر ماریخ منفی، گوالیار نامه، ماریخ سورت غلاصة التاريخ ، تاريخ فرما نروايا ن مهنود ، تحفة المند ، نظارة السند ، وار داتِ قاسمي <u> مخزن العرفان ، سلطان التواريخ ، جارگلتن اور قسطاس وغيره فارسي زبان كے نه و</u>

منفین کی یا دگارین ہین، آخرا لذکرکتا بعلوم وفنون کی مفصل ماریخ ہے مصنف اس کو تلی رحفتون ترفیسیم کیا ہے، پہلے مین مندوؤن کا فلنفہ ہے، دوسرے مین بیزمانیو ایکا، سرے مین عولون کے علوم وفنون اور حویتھے مین توریب کا عدید سائنس عولون کے م پر جو کھے لکھا ہے اس کو د کھ کرحرت ہوتی ہے کہ وہ اس قدر سبط کے ساتھ لکھنے میں ليو نكر كامياب موا، مُنْذِكْرُونِ مِن سَعِيدَا مِهِ، نَذِكَرَةُ الأَمْرَا بَعْنِينُهُ عَشَرَت ، حالات نانك نتا م ، ثنا م غربان ،سفینهٔ خوشگهٔ حدیقهٔ بهندی، امیرنامه ،سفینهٔ بهندی ، حالات با بالال کرو، گل رعناً اور بهتیه بهار وغیره مندوون کے فلم سے نکی ہوئی فارسی کتا بین ہیں، آخرا لذکر کتاب کے متحد علیہ ہونے کا یہ حال ہے کہ علامہ آزا دیگرامی اس کوخز انر عامرہ کی مالیعٹ من ایناماخذ قرار دیتے ہیں ، فارسی بغات مِن رُدهاری لال کی کنج ننات، بیڈت کٹکابٹن کی نیپروٹنگر سیالکو ٹی ل وارسته کی <del>مصطلیات است</del>وار اوڑی<u>ک جند بہ</u>ار کی بہاتجم متہور وموثرت کیا ہن جن صرف و قوا عدين نوا درالمصاور؛ بها رعلوم ١٠ ورمفت كل يرسب كلّ بين بند كى مصنفات ومؤلفات بن، <del>ہندوستان</del> مین فارسی زبان کے ہندوشعراعینے گذرے ہن،ان کا ہمانصل

مهدوس مین فاری را بان سے مهدوسور بینے مدرسے ہیں ان فائیاں تذکرہ تو نہیں کیا جاسکتا بمیکن متحب طور پر جنپد شاعرون کا نمونا کلام دیئے بغیرگذرہا نا مناسب نہیں، کیونکہ ان مثالون سے ہرشخص کو مندوُن کی فارسی دانی وقدرت نِ با

ا در فارسی زبان کے عموم ورسوخ کے اندا زہ کرنے کاموقع ملے گا ، ذیل کے اشعا برطا ہون اِسٹنارچند <del>ہندوستان</del> مین جوسلمان فارسی شوراگذرے میں کیا یہ اشعاران کے أرام | نامنتی الميسری داش ، نظام الملك تصفياه کی مدح مين لکتا ہے ، سزدكه باج زخوارزم وزختن كمزمر بفركو كئه تجثني مالك بهند شهان زمولت إن هم وفارا إ ركاب توسن شامنشهزين كيزر که یا دہمت از ومردم دکن گرند جوان وصاحب بخت جوان نعام منائحهم سرشهع درلگن گرند بریرگردن بوئے فتنہ سائ<sup>خت</sup> الفت إنام لاله اوجاكر، قوم كايسته، وطن عظيم آباد، زداغ دل كثيدم ب كلف مثي ووانح ادرآ مرشام عم درسسينه صرت ام تها الفت في ما مراجم الف<del>ت رائے بخبٹی مالک اور</del>ہ، مى كند گرد ون مواب درگست بيل ونها نست بل اسان ابرورت باون ا ا زغیار درگهٔ عِش احترامت آشکا ر ہرحیہ نامکن بوداً پدز تو برروٹ کا ر ينى انام رام بيارے لال، قرم كايس، ولمن عظيم آباد ، نمنوى نيرنگ تقدير كي لے فارسی زبان کے مندوصفین مترحین بنتوا اورانشا پردا نہوں کا فعس تذکرہ فتری خیاب مولٹنا سپرسلیات نہوی ،معارف کے متعالات ، ہندوون کی تعلیمی علی ترقی میں سیانوں کا کوشش کے سندیں تحریز دائیے ہیں ، اس سے بیاں اجالی، شارات پراکتھا کیا گیا ،جس کو تفصیل د کھنا ہوان مفاین کو دیکھے ،

چەن غىنى خىرسكوت نباتىدىيان<sup>ا</sup> بيجيده شدر بان سخن در دمان ا در دست گرست در و دران ب اندنتيهٔ مآل نيايد زما درست جزموج ريك الثك واكاروان ما دروشت بربائ عنون نسست أفتى انت ارام المنت رام، أرزوك سجده مى كردم زييني فيم تنكرمتنفق يائء مرجبيني بينستم أن إنام لا <del>ل حي</del>ر، قوم كاليتم، وطن لكسنوً، روح مجتید رورشک بے نوشی ما کرنب یا ربو د ما پئے ہوتی ا مائے رحم ست خدارانوان کردریغ مست دانسترین توب بک<sub>دوش</sub>ی ا رين ا چندر بهان ساكن اگره، دارا شكوه كامير منتى تما، کنم زسا ده ولی ښد دیده قر کان<sup>را</sup> مشت خسنتوان كبت أوطوفاك تفتر المشي گوبرلال بقوم برمن، گراین لاله کر بنی زشهیدان تونیست چند گوئی کرنشان نیست خونین کفنان خوشدل را سے امرینکی توم کا میتور اکن کر ہ مانک پور مصنت این خوا نروایا ن ہنود، گرم است بسکه الدانشفشان ما سوز د برنگٹِ مع زبان درد ہان مومد الاله كالكايرشّا ولكعنوى، که دیروکعبرسنگ و بودگبروسلان ا رسائى نىيىت ئاسى منزل وكفروايان را منتی الانقع چندبر بان پوری،

مرقدم دام است نقش بانتها رحبته را ت أسالين منزل عان إزخو درفته را رشة نظاره نبد در سوا گلدسته را بىكازىتىرم تو درىروازر نگ كلىشن ېت منوبر إ را منوبرلال كي ازامرات اكبر باوتناه ، دراتشانسم جوجيره كلكون كرفي روزیکه سموم حشر انسنرون گردز ا در دوزخ جنان منر دیے سنوم گزر *شکب دل پ*شتیان خون گر<sup>و</sup> یہ معلوم کرکے برشخف کو حیرت ہوگی، کہ یہ ان لوگون کی فارسی زبا ندانی کا مونہ ہے جن کے آبا و اُجداد صدی دوصدی سیلے زبان توکهان،اس کے انفاظ وحروت کے سیح تفظ بر هي قدرت نبين ركھتے تھے، وسوين صدى ہجرى كے اغاز سے مندوُون نے فارسی زبان کی تعلیم شروع کی تھی ۱۰ وراس کا سلسلہ تیر ہوین صدی کے اوالی یا زیادہ سے زیا دہ وسط تک قائم رہا، اب اگریہ سوال کِی جائے کہ اُخریہ تنائج کیو ن کریدا ہوئے؟ اس قدر قلیل مّرت ین کیونکرفاری زبان وفنون تھیل گئے ، مندؤون نے کس طرح اس سرعت کے ساتھ .س زبان مِن کا فی مهارت حامل کرلی؟ نوان سوالات کالیجیج ہواب حرف یہ ہے کہ کسی زبان کی تعییل کاعدہ ذریعہ میہ ہے کہ اس زبان کی معبت نفییب ہوا آج بھی غرز بافون كي تحييل كا رجها اورسل طريقه يهي ماما جاتات كه انسان ص زبان كوسيكنا یاہے اس زبان کے جاننے والے سے اس مین گفتگو لیا کرے ، جِنانچه اس وقت ہندؤون کو نہی موقع عامل تھا ہسلمانون کی معاشرت اس قدم

اورغیر متصبانه تمی که مهد وظی ایموم سلمان امرا ورئوساکی فلسون مین ساویا نه تمریک موستی می ایموم سلمان امرا ورئوساکی فلسون مین ساویا نه تمریک متصی اور تو اور تو داکیر جانگی شا بجمان ، داراشکوه و ربا رحکومت مین بے شبهه عالم بن کر بیشیقے تھے لیکن معا تمریک محبد ن مین مبد و سلمان دونون شر کی بوتے تھے باکل ایک مقدر گرب تحکف شرکیب بزم نظراتے تھے ،صرف بهی چیز تھی جس نے فاری زبان کو مهندوشان مین عام کر دیا اور مهرس و ناکس کے کام و دمن باد که آیران کی لذت سے آشنا ہو گئے بیکن بان میسمولت جو کچر تھی تحض زبان سیکھنے کے لیے مفید تھی جب فارسی زبان میں علوم و فنون کی تعلیم ہونے گئی تو بھرنصاب درس بھی مقرر کیا گیا ،جب کے مطابق تعلیم و کی تعلیم و کئی او بھرنصاب درس بھی مقرر کیا گیا ،جب کے مطابق تعلیم ،

طرفی میمی ابتدا گرند و کی تناخت، تلفظ، اور کمایت مین سخت تنوایا

بیش آئی تین، بند وارین س سے بین اور تام ارین تحریرین با ئین جانب سے وا ہنے کیا

طرف کھی جاتی بین الکی ان کو فارس تحریرون بین ابنی اس قدیم تو می و نسی عادت کے فارس کے المین طرف کھی جاتی مقرر کیا کہ اور اس کو مفر دحروف بہنچیوا کے اور اس کی شق کرا سے مفرا واب اور مرکب حروف ، غرض اس طرح تدریجا چھوٹے چھوٹے جلون اشوار اور کھول عبار تون تک قوت نوشت وخواند کو ترقی دی جائے اگری بین اس کی تقصیل ان الفا فایین ہے ،

موالی عبار تون تک توت نوشت وخواند کو ترقی دی جائے ، ائین اکبری بین اس کی تقصیل ان الفا فایین ہے ،

بفرمو ده گیتی خدا و ندحرو ت اتبت راتعنی مفردات اب ت ت ) برنولیند و ديگر ميكررا بدانسان كارند بخست بعبورت ونام آشناگر د ندوور وزبين مذكشه که از نقوش پیوسته ربینی مرکب) آگهی برگیرد ۲۰۰۰ میروش رود که برکی را (نوآموز) خود شنامدو اند کے استاد دسگیری کند، اس طرتیر تعلیمی کامیا بی کے تعلق الرفضن کی شہا دت ان الفاظ مین ہے، بدین روش آنچه سبالها آموین باه بل بروز کنسید وجهانی برشگفت دراً مد . . . . ٠٠٠ و ازيل طرز اللي مكتبهارونق ومگرگرفت ومرسها فرونج تازه يافت ، اس سلسله مین ابر انفضل کا به سان تعبی که اس و قست فلان فلان علوم کی تعلیم مو<sup>تی</sup> تقى قابل تحرير ہے، چنانچەلكىتا ہے، افلاق احباب ساق ، فلاحت اساحت ، مندسه انجوم ارل ، تدبيرمنزل ، سیاست مدن طب منطق ملبیعی، ریاضی الهی تمار تنح مرتبه مرتبه اندوز د ، وازمزد ملوم باكرن، نياك، بيدانت، يا تنخل برخواند، فارسى تصاب درس مین نے حتی الامکان ٹری لاش و جنجر کی بیکن تفصیل کے ساتھ فارسی کی متداو ا ے۔ اریخون میں کمین فارسی نصاب درس کا تذکرہ نہ ملا، ہان اشخاص کے حالات ، تذکر اورد ومرسے فملف ذریعیون سے اجالی طور ریصرف آنا معلوم ہوا کہ له يه اوراوير كى عبارتين اكيرى طداول دفتروهم أين آموزش كى بن ،

زمی، ننخانیلی تعبیم عزیزی، دستورانصبیان، انشا که دهورام، آنشا، فاکن، انشا مطیفه، رقعات عالمگیری، گلت مان، ابولفنل بهار دانش ،انوارسیلی، سه ننز طوری، وقائع نعمه ته زندان دالی

دنظمین، کریا، مامقیان، خالق باری، بوسستان، پوسف زینا، تصا نُرء نی، تصانُد بزریه ' د پوان غنی به مکندر نا مه وغیره ،

کما بین عام طربر پڑھائی جا پاکرتی تھیں ، مجھے تعجب تھا کہ شاہنا ہہ، تھا نیمنِ خرو دیدانِ صائب اور دلیدانِ حافظ جیسی عمرہ کما بین اپنے گونا گون محاس و فوائد کے با دجو دکیون نہیں پڑھائی جا تی تھیں ،اس کے علاوہ تا ریخ جیسا صروری فن بالکن فا عما، افلات کی کما بین بھی برا سے نام تھیں ، با ربا رہی خیال ہوتا تھا کہ موجودہ معلویا ادر صبحجوا بنے تمائی کے کے روسے بالکل ناممل ہے ،غرض کسی طرح مجھ کو تسکین تشفی تھی اور متجوا بنے تمائی کتب خانۂ الاصلاح موضع دسنہ (علاقہ بہار) سے رقعا ہوا گھائیں کا ایک قدیم کمی مجبوعہ اس کی ترتیب وقعیمے کی ضرورت سے میرے پاس آیا جن تھا سے اس بین ایک اور کا ب بھی ہاتھ آئی ،جن کا نام خلاصۃ المکا تیب اور مالی نیا سے اس بین ایک اور کی بہت ،

یا کتاب ایک ہند و مصنف کے قلم سے ٹی ہوئی ہے، خو دمصنف کے نام کا تو کمین ذکر نمیں کیکن آغاز کِمّا ب مین مصنف نے سبب تالیف یہ لکھا ہے، از چندگا ہ فرزندار شدار جمند نور حتم مراد فروغ دیدہ استعداد زیب باغ زندگانی،

زىنىت چراغ يى مرانى، تمرُهُ تْجِرُهُ آ مال واما نئى مبار ييرا كُلْتُن رَصَا جو كَيُ رَر وَنْ قَافِرَ جن فرخنده خوئي بفلردانش وفرنگ راس سنگه مه تقاضا سے طبع انشار و وست استدعامي ننو دكدنسخة تتضنن برمنشائته كدييندطيع انشأ رطالبان تواند بوو ترتهيب - این شخه که سمی به فلاصة المکاین ست درسهل دد وعالمگیری مطابق بکنرار دکیسدی جبری مرتب گروانیده ، یہ تو واضح ہے کہ یہ کتا ہے بائک منشا یہ صرور تو ان کے لئے لکھی گئی ہے ہینی ا<sup>کل</sup> مقصہ صرف یہ تبانا*ے کوخ*تلف اشیار و مناظر کوکس طرح لکھنا جا ہے ، مختلف موقع <sup>و</sup> رسم کے بیان میں کن چیرون کو فاص طور پر کا یا ن کر کے دکھلا ناضروری ہے، ک ب کا آغازا خلاق صنہ سے کیا گیا ہے ،اس مین عبآ وت صحبت نیکا <sup>ن</sup> از ر ورعه نت ( آدَب وتعظیم مزر گان ، مذمتِ نجل ، ترکّب اسان ، آداب محلس غیره تلف عنوانات بن، اس کے بعد تیان تعربیت علم، تقولیت کارد، تعربیت کاغذ، تقریف خط، بیان خوا مانیدن طفل، بیان منٹی گیری کے ابواب ہین اس کے بعد ابيَّا ن اساك باران. بَيان قِطورگرانی، بِيَان مِهار برساتی، بيآن برشگال، بيَانِ بهار نوروزی، بَیآن مهارزمتان، بَدَائت زمتان، مَوسم خزان، مَرْروعات مِعِيْ بيآن ميولى، بيآن گلها، بيآن أبهاے روان، تعربیت باغ، تعربیت شهروغیره گوماً مفيا مين كورنها يرتفسيل اورسليقه سے لكھا ہے ، " بیا ن خزانیدن اطفال" مین مصنف نے تفصیل کے ساتھ اتبداسے انتہا تک

درجہ بدرجہ فارسی درسی کتا ہون کے نام کھے ہیں ،مقصو و صرف یہ تبانا ہے کہ بچوں کو ا ترتیب کے ساتھ کتا بین بڑھائی جائین ، اگرچہ یہ کوئی تاریخی کتا ب نہیں اور نیز خاص طور سے نہ تو قدیم نصاب درس ہی کو لکھنا اس کا مقصو دہے ، تا ہم مصنف نے اپنی را اور خیالات کے سلسلہ میں جس ترتیب کے ساتھ جن کتا ہون کے نام لئے ہیں ان اتنا توضو ور تا بت ہوتا ہے کہ گیا رہویں صدی میں یہ کتا بین بڑھائی جاتی تھیں مہن ہیں کہ ہر گلہ بالا تعزام یہ بین نہ بڑھائی جاتی ہون ، لیکن یہ تسلیم کئے بغیر جار ہ نہیں کہ ان کتا ہوں کا ایک بڑا مشترک حصتہ اسیا ضرور ہے جواس وقت عام طور پر داخل در سے ا مصنف نے اس باب میں با ترتیب با نچ فنون کی کتا ہوں کا تذکرہ کیا ہے ، آپ

۱) اوب وانشار

ر٧) نظم وشعر

(m) افعاً نهُ وحكايات،

دمهم) تاریخ

ده) اخلاق

اگراس موقع پر مصنف کی بوری عبارت نقل کیجائے توضعے کے صفحے سیاہ کرڈالنا پڑینگے جن سے غیر معمولی طوالت ہوگی، کیونکہ قدیم مذاقب انتا پر دازی کی رعایت مین فرہ سی بات کئی کئی سطرون مین اداکی گئی ہے،اس نبار پر مین اس غیر صروری نقل

کنارہ کش ہوکر جبتہ حبتہ عبارت اور تام کتا بون کے نام برتر تیب لکھتا ہون، چو سُنے تین کی ابتدائی تعلیم کے بعد کے لیے لکھائے، یں ازان بخواندن کتب مترک عندلیب گلستان شیراز ملبل بوسستان حقیقت المازهفرت شيخ مصلح الدين الماراللد بربانه، كه باسعدى شيرازى مشهوراست جراغ خرو را روغن انداز دلیس ازی کتب یایه به یا به خواند، وخوانده را دروقت فرصت دا ام معلیل مرکمنه تاعیا رات مشکله که دریا فت آن موقوت برنکراراست فراموش<sup>کردو</sup> (1) اس کے بعد مصنف انشاآ موزی کے لیے حب ذیل کتابون کی طر<sup>ن ب</sup>ہائی كرتاب ، مرقومات ملاحامی و ملامنیرم بدائع الانشامشهور برانشاب ارسفى، كلدسته شنخ عنايت الله نمنى شابجان مكتوبات ابدافضل، بهار سخن از شنع محدمها لح، رقعاتِ عالمُگري ، منتأت شيدا وملاطفرا کمتوات لانبیر، کتاب پیلا وتی مترجمه شخ نفیی' كار نام يعل خيد ، بیج بیج مین هنف نے سدار بیان مین سبت سی مفید ہواتین بھی تھی ہن جن ۔۔۔ درحقيقت غيرممولي فوائدم طالب كومننح سكتي بين ا (۲) اس کے بعد نظم وشو کی تعلیم نے متعلق لکتاہے ، یون طریق خطوط نگاری درست افتد رائے جلاے طبیت یا یہ بیا تی کتب ستوارفہ

كر. . . . ، اندېرغواند،

اس مسلد مین حسب ذیل کتابون کے ام درج مین :

نوسف زلنی تخفی الاحرار بنی الابرار از ملاجامی منکندر نامه ، مخزن اسرار تهفت بیکو شرین خسرد ، لینی مخبون ازمولنها نظامی قرآن السعدین بقطع الا توارا آع زخسروی از امیر خسرو د بلومی ،

. د بوان همس تبریزیه و نیوان فلیرفاریا بی، و نیوان سوری، و بیوان حافظ، تصا که

انورى، قَصَا مُدُفا قا نَى، قَصَا مُرَعِ نَى، وَيُوانِ فِيضَى، و يُوان مِدرِ فِي جٍ، وَيُوان مِا مُب،

(w) انسانهُ وحکایات کے سلسلہ میں لکھتا ہے.

شفی، برائے عشرت اندوزی نسخه طوطی نامریختی وانوارسیلی تصنیف مولا ناحینی واعظاکا وعیار وانش شیخ ا بوافعنل و تهار دانش شیخ عنایت انتد که بم عبارات غریب م محکایا

عجيب وفرح افزام طبائع ست برخواند،

رمم) اس کے بعد اریخ کا ورج ہے لکھتا ہے،

وبرا سے دریافت حقیقت سلاطین بیٹین داحوال مالک او قواعد و صوالطات مسیراریخ ناید،

اس سلسله مین حسب ویل کتابون کے نام گنا سے مین ،

ننا منا مدُ فردوسی، فَهْز نامه از شرف الدین علی تر مذی منفهن فتو هات تیموری، اَکبر، م شقل براحوال اکبر إوشاه اُ آقبال نا مُرجا نگیری، آین نے فیروز ننا ہی و رزم ما مَرْج مِعابِمات د۵) اس کے بعد تزکیہ نفس تصفیہ اضاق کی صرورت پڑتی ہے بعینی قن اطلاق کا مرتبہ آیا ہے ، جنانچہ اس کے بیے کھتاہے .

وبرا ب تزکینفن وتصفیهٔ اخلاق، اخلاق ناصری، اخلاق حلالی، مکاتبات بسیرا شرف الدین احریحیی منیری ، نزیمهٔ الارواح ، ننوی مولوی معنوی ، تحدلقه کلیم ن کی مطالعه در آور د ۴

#### : فأحب

اسلامی عمد حکومت میں ہندوسان کی اسلامی تعلیم اور تعلیم کا ہون کا یختصر ساجگہ ہے، بین نے علی العلوم اجال واختصار سے کام لیا ہے، مزید تفصیل و تشریح کی طرف تو جہ کیجا مے تو بھر دفتر کا وفتر جا ہئے، جس کے لیے نہ موقع ہے نہ وقت ، لیکن اس پین کوئی شبہ نہیں کہ مزید توجہ کے بعدیہ قطرہ دریا بن سکتا ہے،

اگرچ سلسائه نطق من گست اما چه گویم اینکه مهنوزم چه آرزو بآمیت بجرع بههٔ اهل بزم برستند ورق تهام شدو قصه نا تهام بهاند شب خرآ مدوصدگونه گفتگو باقیت

------

#### لصنفه و کنتر میر ، دارا . ن کی رکی کنایی

ابن رشد، اورزیب النساء کی سوانی عری، وغیره جیسے ایم اور مفید مضامین میں ، صفاحت ، مواصفے میں

قیمت: عمر

## ما يخ صقليهٔ جلد دوم

مرتبرُ :۔سستید یاست علی ندوی ، اس میںسلی کے عمد اسلامی کے تمد نی حزافیہ

اس میں مسلمی کے عمد اسلای کے تعربی جرافیہ نظام حکومت، زراعت، صنعت، حرفت،

تمیر کیارت ، تهذیب و مقاشرت اور علوم و فنون کا قضیل مرقع د کاکر اورپ پیسسلی کے

اسلامی ترژُن کے اثرات و کھا نے گئے ہیں، ضخامت ۵۰۰ صفح ، قیمت : للعمر

### يفينى سلمان

ایک در دمند صاحب علم عینی سلمان نے جین کے سلمانوں کے مذہبی، افلاتی، تدنی ، سیاسی، اقتصادی اور تعلیمی حالات ہندوستانی زبان میں تکھیمیں، ضخامت ۲۲۲ عضفی، قیمت: عیر کھیمیر۔ وار استفین المحملیوہ) سيروابي جلديب سيروابي جلديب

اس طبد کاموضوع عبادت ہے، اس میں پیلے عبادت کی حقیقت اوراس کے اقسام کا بیان ہی، اس کے بعد زام خسہ افار از کوق ، روزہ ، تجی، اور جماد پرعلی وعلی وظیر

بحث بحااً خریب توکل ،صبر اطلاص ،تقویٰ، اورشکر کے منی ومفوم قرآن مجید کی تعلیات کی روشنی میں بھائے

كُنُهِ بِي بَعْلِع كلال مِنهَامت به ١٩ صفح قيمة نم على

صر، متم دوم، ملدر مقالات بلی **جلد سوم**. رقب یمی *ا* 

یہ مولٹ شبلی مرحوم کے نعلی مصابین کا مجموعہ ہو، اس میں مسل اوں کی گذشتہ تعلیم' مدرسے اور دارانعلوم ، درس نظا

على تون كارت به سيم مرت اورواز سموم اورن آباد بذوه اورنصاب تعليم تعليم قديم وجديد اوررياست حيار

كى مشرتى يونورشى جيسے اہم موضوع بر بھيرت افروز

مقالات بي منفامت، اصفح بتيت: بمر مفالات بي جلد بنجم (ماريخي)

یہ مولن شبلی کے ان مقالات کامجور ہے ، جو اکا برا ر ر ر ر بین میں

كيسوانح وحالات سي شعلق بي ،اس ميس علاماتين

(طابع: محداوس وارثى)